होरी सागर

प्रथम संस्करण – २,००० प्रतियाँ

प्रकाशित २३ मार्च २०२१

नवमी, शुक्ल पक्ष, फागुन, २०७७ विक्रमी सम्वत्

प्राप्ति-स्थान

मान मन्दिर, बरसाना

फोन – ९९२७३३८६६६

एवं

श्रीराधा खंडेलवाल ग्रन्थालय

अठखम्बा बाजार, वृन्दावन

फोन – ९९९७९७७५५१

श्री मानमन्दिर सेवा संस्थान

गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)

फोन – ९९२७३३८६६६

http://www.maanmandir.org

info@maanmandir.org

प्रकाशकीय

दुनिया में 'रंगभरी होली' का प्रसार 'ब्रजभूमि' से ही हुआ । ब्रज में श्रीराधामाधव ने गोपाङ्गनाओं और गोपकुमारों के साथ जो 'होरी-लीला' की, वह त्रिभुवन-विख्यात है; यह ब्रज की शोभा है, ऐसी 'रसमयी होली' केवल ब्रज में ही होती है, ब्रज के बाहर यह रस नहीं है । ब्रज की होली में कोई मर्यादा नहीं होती है । मर्यादा के संकुचित बन्धनों को तोड़कर विशुद्ध प्रेम-रंग में रंगी 'होली का रस' श्रीराधामाधव ने ब्रज में बहाया है और आज तक ब्रज के विभिन्न ग्रामों में परम्परानुसार श्रीराधामाधव द्वारा द्वापर में खेली गई होरी का ही अनुकरण ब्रजवासी आज भी अत्यन्त उत्साह और उमंग के साथ करते हैं, चाहे वह बरसाना-नन्दगाँव की 'लठामार होली' हो अथवा जाव-बठैन की 'झामों की होली' हो अथवा राल-भदार में 'झंडी जीतने की होली' हो अथवा दाऊजी की 'कोड़ामार रससिक्त होरी' हो । 'ब्रज की होली' के अद्वितीय, विलक्षण और लोकातीत रस का पान करने के लिए बड़े-बड़े देवगण भी लालायित रहते हैं; तभी तो अष्टछाप के मूर्धन्य संत कवि नन्ददासजी ने लिखा है –

शेस महेस सुरेस न जानें, अज अजहूँ पछताँय ।
सो रस रमा तनक नहिं पायौ, जदपि पलोटत पाँय ॥

शेषजी, महादेवजी, इन्द्र, ब्रह्मा आदि देवगण आज तक पछताते हैं कि हम ब्रज में उत्पन्न नहीं हुए, अन्यथा हम भी ब्रज की रसमयी होरी-क्रीड़ा का रसास्वादन करते । ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी, वैकुण्ठ-स्वामिनी, श्रीहरिवल्लभा 'लक्ष्मीजी' जो सदा ही श्रीहरि की चरण-सेवा में सलग्न रहती हैं; उनको भी 'ब्रज की रंग भरी होरी' का आस्वादन दुर्लभ है, फिर यह रस किसको मिलता है तो नन्ददासजी कहते हैं –

श्रीवृषभानुसुता पद-अम्बुज, जिनके सदा सहाय ।
एहि रस मगन रहत जे तिन पर, नन्ददास बलि जाय ॥

जिसके ऊपर रासरासेश्वरी, महाभाव स्वरूपा अनन्त करुणामयी 'श्रीराधारानी' की कृपा हो जाती है, उसको इस देव-दुर्लभ रसामृत का पान करने का सौभाग्य प्राप्त होता है; बाकी लोग इस रस से वञ्चित ही रहते हैं, चाहे ब्रह्मा बन जाओ, चाहे महादेव बन जाओ अथवा लक्ष्मी बन जाओ, बिना 'श्रीराधारानी' की कृपा के यह रस किसी को नहीं मिल सकता ।

श्रीराधामाधव और उनके परिकरों द्वारा ब्रज में जो रंग-भरी, रस- भरी 'होरी-क्रीडाएँ' की गईं, उनका ब्रज के रसिक महापुरुषों ने दिव्य दृष्टि से साक्षात्कार किया और कलिकाल की भीषण ज्वाला से तप्त होते मानवों के कल्याण हेतु उन सरस लीलाओं का गान किया । कराल कलिकाल दिन-प्रतिदिन 'सनातन धर्मी संस्कृति' पर कुठाराघात करता जा रहा है, ऐसी भीषण स्थिति में महापुरुषों द्वारा रचित 'होली-लीला के पद' भी विलुप्त होने के कगार पर थे परन्तु मानमन्दिर पर विराजित ब्रज-वसुन्धरा और ब्रज-संस्कृति के प्रति पूर्णतया समर्पित ब्रजनिष्ठ संत परम श्रद्धेय श्रीश्रीरमेशबाबाजी महाराज ने 'महापुरुषों द्वारा होली-लीला से सम्बन्धित अनूठे पदों' का अत्यन्त सजगता के साथ संग्रह किया और ६५ वर्षों से 'पूज्यश्री' फागुन मास में अपनी अद्भुत संगीत-प्रतिभा के साथ मानमन्दिर में इनका गायन करते हैं । वर्तमानकाल में भी मानमन्दिर के संकीर्तन-भवन 'रस-मण्डप' की सायंकालीन आराधना में अत्यन्त उत्साह के साथ प्रत्येक वर्ष फाल्गुन माह में 'ब्रज-होली के गीतों' का गायन होता है ।

पूज्य महाराजश्री की हार्दिक अभिलाषा थी कि महापुरुषों द्वारा रचित ये देवदुर्लभ 'होली-लीला के पद' कहीं काल के कुठाराघात की चपेट में आकर विलुप्त न हो जाएँ; श्रृद्धालु भक्तजन 'ब्रज-संस्कृति के महत्वपूर्ण अङ्ग इन रसमयी होली-लीलाओं' से लाभान्वित हों; इसी उद्देश्य से ही महाराजश्री की ही प्रेरणा से ब्रज की होली से सम्बन्धित पदों एवं रसियाओं का संकलन "मानमन्दिर की रंगीली होली" नामक सद्ग्रन्थ में मानमन्दिर सेवा संस्थान द्वारा प्रकाशित किया गया, प्रस्तुत संस्करण यद्यपि बहुत लघु रूप में रहा, फिर भी पाठकों ने इसे खूब सराहा और हमसे बराबर अपेक्षाएँ रहीं कि इसे और समृद्ध बनाया जाए । 'होली' श्रृंगार-प्रधान

गायन-शैली है, जिसमें ‘प्रिया-प्रियतम के दिव्य केलि-रस की भाव-रश्मियाँ’ भावुक उपासकों के हृदय की रस-तरङ्गिणी का प्रवाह बनकर लोक-कल्याण का हेतु बनती हैं परन्तु अन्ध-जगत के रस-लम्पटों के लिए यह ग्राह्य नहीं है; अतः अगाध समुद्र को सर्वसुलभ कराना सम्भव नहीं है, इसलिए बहुत-सी रचनाओं को प्रकाशित नहीं किया जा सकता, फिर भी सागर तो सागर ही रहता है; अतएव इस नवीन प्रकाशन का नाम **‘होरी-सागर’** दिया जा रहा है, श्रीयुगल के होरीलीलारसमय इस अलौकिक सागर में अवगाहन करो और भव-सागर से पार हो जाओ । प्रस्तुत दिव्य रस-ग्रन्थ में श्रीचन्द्रसखी, दया सखी, हीरासखीजी, श्रीमीराजी, सूरदासजी, नागरीदासजी, रसखानजी, कासिमजी, आनन्दघनजी, सूरदासमदनमोहनजी, ललित किशोरीजी, नारायणस्वामीजी, ब्रजदूल्हजी, हरिदासजी, हरिश्चन्द्रजी, चाचावृन्दावनदासजी, कृष्णदासजी, घासीरामजी, पुरुषोत्तमजी...इत्यादि महापुरुषों की वाणी आलोकित हुई हैं ।

श्री रमेश बाबा जी महाराज

गुण-गरिमागार, करुणा-पारावार, युगललब्ध-साकार इन विभूति विशेष गुरुप्रवर पूज्य बाबाश्री के विलक्षण विभा-वैभव के वर्णन का आद्यन्त कहाँ से हो यह विचार कर मंद मति की गति विथकित हो जाती है।

विधि हरि हर कवि कोविद बानी ।
कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कहि जात न कैसे ।
साक बनिक मनि गुन गन जैसे ॥

(रा.बा.का.दोहा.३क)

पुनरपि

जो सुख होत गोपालहि गाये ।
सो सुख होत न जप तप कीन्हे कोटिक तीरथ न्हाये ।

(सू. वि. प.)

अथवा

रस सागर गोविन्द नाम है रसना जो तू गाये ।
तो जड़ जीव जनम की तेरी बिगड़ी हू बन जाये ॥
जनम-जनम की जाये मलिनता उज्ज्वलता आ जाये ॥

(बाबा श्री द्वारा रचित - ब्र. भा. मा.से संग्रहीत)

कथनाशय इस पवित्र चरित्र के लेखन से निज कर व गिरा पवित्र करने का स्वसुख व जनहित का ही प्रयास है।

अध्येतागण अवगत हों इस बात से कि यह लेख, मात्र सांकेतिक परिचय ही दे पायेगा, अशेष श्रद्धास्पद (बाबाश्री) के विषय में । सर्वगुणसमन्वित इन दिव्य-विभूति का प्रकर्ष-आर्ष जीवन-चरित्र कहीं लेखन-कथन का विषय है?

"करनी करुणासिन्धु की मुख कहत न आवै"

(सू.वि. प.)

मलिन अन्तस् में सिद्ध संतों के वास्तविक वृत्त को यथार्थ रूप से समझने की क्षमता ही कहाँ, फिर लेखन की बात तो अतीव दूर है तथापि इन लोक-लोकान्तरोत्तर विभूति के चरितामृत की श्रवणाभिलाषा ने असंख्यों के मन को निकेतन कर लिया, अतएव सार्वभौम महत् वृत्त को शब्दबद्ध करने की धृष्टता की।

तीर्थराज प्रयाग को जिन्होंने जन्मभूमि बनने का सौभाग्य-दान दिया। माता-पिता के एकमात्र पुत्र होने से उनके विशेष वात्सल्यभाजन रहे। ईश्वरीय-योजना ही मूल हेतु रही आपके अवतरण में। दीर्घकाल तक अवतरित दिव्य दम्पति स्वनामधन्य श्री बलदेव प्रसाद शुक्ल (शुक्ल भगवान् जिन्हें लोग कहते थे) एवं श्रीमती हेमेश्वरी देवी को संतान-सुख अप्राप्य रहा, संतान-प्राप्ति की इच्छा से कोलकाता के समीप तारकेश्वर में जाकर आर्त पुकार की, परिणामतः सन् १९३० पौष मास की सप्तमी को रात्रि ९:२७ बजे कन्यारत्न श्री तारकेश्वरी (दीदी जी) का अवतरण हुआ, अनन्तर दम्पत्ति को पुत्र-कामना ने व्यथित किया। पुत्र-प्राप्ति की इच्छा से कठिन यात्रा कर रामेश्वर पहुँचे, वहाँ जलान्न त्याग कर शिवाराधन में तल्लीन हो गये, पुत्र कामेष्टि महायज्ञ किया। आशुतोष हैं रामेश्वर प्रभु, उस तीव्राराधन से प्रसन्न हो तृतीय रात्रि को माता जी को सर्वजगन्निवासावास होने का वर दिया। शिवाराधन से सन् १९३८ पौष मास कृष्ण पक्ष की सप्तमी तिथि को अभिजित मुहूर्त मध्याह्न १२ बजे अद्भुत बालक का ललाट देखते ही पिता (विश्व के प्रख्यात व प्रकाण्ड ज्योतिषाचार्य) ने कह दिया –

“यह बालक गृहस्थ ग्रहण न कर नैष्ठिक ब्रह्मचारी ही रहेगा, इसका प्रादुर्भाव जीव-जगत के निस्तार निमित्त ही हुआ है।”

वही हुआ, गुरु-शिष्य परिपाटी का निर्वाहन करते हुए शिक्षाध्ययन को तो गये किन्तु बहु अल्प काल में अध्ययन समापन भी हो गया।

"अल्पकाल विद्या बहु पायी"

गुरुजनों को गुरु बनने का श्रेय ही देना था अपने अध्ययन से। सर्वक्षेत्र कुशल इस प्रतिभा ने अपने गायन-वादन आदि ललित कलाओं से विस्मयान्वित कर दिया बड़े-बड़े संगीत-मार्तण्डों को। प्रयागराज को भी स्वल्पकाल ही यह सानिध्य सुलभ हो सका "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि" ऐसे अचिन्त्य शक्ति सम्पन्न असामान्य पुरुष का। अवतरणोद्देश्य की पूर्ति हेतु दो बार भागे जन्मभूमि छोड़कर ब्रजदेश की ओर किन्तु माँ की पकड़ अधिक मजबूत होने से सफल न हो सके। अब यह तृतीय प्रयास था, इन्द्रियातीत स्तर पर एक ऐसी प्रक्रिया सक्रिय हुई कि तृणतोड़नवत् एक झटके में सर्वत्याग कर पुनः गति अविराम हो गई ब्रज की ओर।

चित्रकूट के निर्जन अरण्यों में प्राण-परवाह का परित्याग कर परिभ्रमण किया, सूर्यवंशमणि प्रभु श्रीराम का यह वनवास स्थल पूज्यपाद का भी वनवास स्थान रहा। “स रक्षिता रक्षति यो हि गर्भे” इस भावना से निर्भीक घूमे उन हिंसक जीवों के आतंक संभावित भयानक वनों में।

आराध्य के दर्शन को तृषान्वित नयन, उपास्य को पाने के लिए लालसान्वित हृदय अब बार-बार पाद-पद्मों को श्रीधाम बरसाने के लिए ढकेलने लगा, बस पहुँच गए बरसाना। मार्ग में अन्तस् को झकझोर देने वाली अनेकानेक विलक्षण स्थितियों का सामना किया। मार्ग का असाधारण घटना संघटित वृत्त यद्यपि अत्यधिक रोचक, प्रेरक व पुष्कल है तथापि इस दिव्य जीवन की चर्चा स्वतन्त्र रूप से भिन्न ग्रन्थ के निर्माण में ही सम्भव है अतः यहाँ तो संक्षिप्त चर्चा ही है। बरसाने में आकर तन-मन-नयन आध्यात्मिक मार्गदर्शक के अन्वेषण में तत्पर हो गए। श्रीजी ने सहयोग किया एवं निरंतर राधारससुधा सिन्धु में

अवस्थित, राधा के परिधान में सुरक्षित, गौरवर्णा की शुभ्रोज्ज्वल कान्ति से आलोकित-अलंकृत युगल सौख्य में आलोडित, नाना पुराणनिगमागम के ज्ञाता, महावाणी जैसे निगूढ़ात्मक ग्रन्थ के प्राकट्यकर्ता “अनन्त श्री सम्पन्न श्री श्री प्रियाशरण जी महाराज” से शिष्यत्व स्वीकार किया।

ब्रज में भामिनी का जन्म स्थान बरसाना, बरसाने में भामिनी की निज कर निर्मित गहवर वाटिका "बीस कोस वृन्दाविपिन पुर वृषभानु उदार, तामें गहवर वाटिका जामें नित्य विहार" और उस गहवरवन में भी महासदाशया मानिनी का मन-भावन मान-स्थान श्री मानमंदिर ही मानद (बाबाश्री) को मनोनुकूल लगा। मानगढ़, ब्रह्माचलपर्वत की चार शिखरों में से एक महान शिखर है। उस समय तो यह बीहड़ स्थान दिन में भी अपनी विकरालता के कारण किसी को मंदिर प्रांगण में न आने देता। मंदिर का आंतरिक मूल स्थान चोरों को चोरी का माल छिपाने के लिए था। चौराग्रगण्य की उपासना में इन विभूति को भला चोरों से क्या भय?

भय को भगाकर भावना की – "तस्कराणां पतये नमः" – चोरों के सरदार को प्रणाम है, पाप-पंक के चोर को भी एवं रकम-बैंक के चोर को भी। ब्रजवासी चोर भी पूज्य हैं हमारे, इस भावना से भावित हो द्रोहार्हणों (द्रोह के योग्य) को भी कभी द्रोहदृष्टि से न देखा, अद्वेष्टा के जीवन्त स्वरुप जो ठहरे। फिर तो शनैः-शनैः विभूति की विद्यमत्ता ने स्थल को जाग्रत कर दिया, अध्यात्म की दिव्य सुवास से परिव्याप्त कर दिया।

जग-हित-निरत इस दिव्य जीवन ने असंख्यों को आत्मोन्नति के पथ पर आरूढ़ कर दिया एवं कर रहे हैं। श्रीमन् चैतन्यदेव के पश्चात् कलिमलदलनार्थ नामामृत की नदियाँ बहाने वाली एकमात्र विभूति के सतत् प्रयास से आज ३२ हजार से अधिक गाँवों में प्रभातफेरी के माध्यम से नाम निनादित हो रहा है। ब्रज के कृष्ण लीला सम्बंधित दिव्य वन, सरोवर, पर्वतों को सुरक्षित करने के साथ-साथ सहस्रों वृक्ष

लगाकर सुसज्जित भी किया। अधिक पुरानी बात नहीं है, आपको स्मरण करा दें, सन् २००९ में "श्रीराधारानी ब्रजयात्रा" के दौरान ब्रजयात्रियों को साथ लेकर स्वयं ही बैठ गये आमरण अनशन पर, इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज-पर्वतों पर हो रहे खनन द्वारा आघात को सरकार रोक नहीं देगी, मुख में जल भी नहीं जायेगा। समस्त ब्रजयात्री भी निष्ठापूर्वक अनशन लिए हुए हरिनाम-संकीर्तन करने लगे और उस समय जो उद्दाम गति से नृत्य-गान हुआ, नाम के प्रति इस अटूट आस्था का ही परिणाम था कि १२ घंटे बाद ही विजयपत्र आ गया। दिव्य विभूति के अपूर्व तेज से साम्राज्य सत्ता भी नत हो गयी। गौवंश के रक्षार्थ गत् १३ वर्ष पूर्व माताजी गौशाला का बीजारोपण किया था, देखते ही देखते आज उस वट बीज ने विशाल तरु का रूप ले लिया, जिसके आतपत्र (छाया) में आज ५०,००० से अधिक गायों का मातृवत् पालन हो रहा है। संग्रह परिग्रह से सर्वथा परे रहने वाले इन महापुरुष की भगवन्नाम ही एकमात्र सरस सम्पत्ति है।

परम विरक्त होते हुए भी बड़े-बड़े कार्य संपादित किये इन ब्रज संस्कृति के एकमात्र संरक्षक, प्रवर्द्धक व उद्धारक ने। गत पञ्चषष्टि (६७) वर्षों से ब्रज में क्षेत्रसन्यास (ब्रज के बाहर न जाने का प्रण) लिया एवं इस सुदृढ़ भावना से विराज रहे हैं। ब्रज, ब्रजेश व ब्रजवासी ही आपका सर्वस्व हैं। असंख्यों आपके सान्निध्य-सौभाग्य से सुरभित हुये, आपके विषय में जिनके विशेष अनुभव हैं, विलक्षण अनुभूतियाँ हैं, विविध विचार हैं, विपुल भाव साम्राज्य है, विशद अनुशीलन हैं, इस लोकोत्तर व्यक्तित्व ने विमुग्ध कर दिया है विवेकियों का हृदय। वस्तुतः कृष्णकृपालब्ध पुमान् को ही गम्य हो सकता है यह व्यक्तित्व। रसोदधि के जिस अतल-तल में आपका सहज प्रवेश है, यह अतिशयोक्ति नहीं कि रस ज्ञाताओं का हृदय भी उस तल से अस्पृष्ट ही रह गया।

आपकी आंतरिक स्थिति क्या है, यह बाहर की सहजता, सरलता को देखते हुए सर्वथा अगम्य है । आपका अन्तरंग लीलानंद, सुगुप्त भावोत्थान, युगल मिलन का सौख्य इन गहन भाव-दशाओं का अनुमान आपके सृजित साहित्य के पठन से ही संभव है । आपकी अनुपम कृतियाँ – श्री रसिया रासेश्वरी, स्वर वंशी के शब्द नूपुर के, ब्रजभावमालिका, भक्तद्वय चरित्र इत्यादि हृदयद्रावी भावों से भावित कृतियाँ हैं।

आपका त्रैकालिक सत्संग अनवरत चलता ही रहता है । साधक-साधु-सिद्ध सबके लिए सम्बल हैं आपके त्रैकालिक रसार्द्रवचन । दैन्य की सुरभि से सुवासित अद्भुत असमोर्ध्व रस का प्रोज्ज्वल पुंज है यह दिव्य रहनी, जो अनेकानेक पावन आध्यात्मास्वाद के लोभी मधुपों का आकर्षण केंद्र बन गयी । सैकड़ों ने छोड़ दिए घर-द्वार और अद्यावधि शरणागत हैं । ऐसा महिमान्वित-सौरभान्वित वृत्त विस्मयान्वित कर देने वाला स्वाभाविक है।

रस-सिद्ध-संतों की परम्परा इस ब्रजभूमि पर कभी विच्छिन्न नहीं हो पायी। श्रीजी की यह गह्वर वाटिका जो कभी पुष्पविहीन नहीं होती, शीत हो या ग्रीष्म, पतझड़ हो या पावस, एक न एक पुष्प तो आराध्य के आराधन हेतु प्रस्फुटित ही रहता है। आज भी इस अजरामर, सुन्दरतम, शुचितम, महत्तम, पुष्प (बाबाश्री) का जग स्वस्तिवाचन कर रहा है । आपके अपरिसीम उपकारों के लिए हमारा अनवरत वंदन, अनुक्षण प्रणति भी न्यून है।

पदानुक्रमणिका

(श्री) स्यामाजू खेलत.........१४६
अँखियन में तोय १७४
अँगिया मैं का पै..................८९
अंग लिपट हँसि ८
अंगना ते छैल १०३
अंगिया दरक रही................६७
अइयौ-अइयौ रे १०२
अखियाँ गुलाबी १०९
अचक आय उँगरी ७
अजब देख्यौ १३१
अनोखौ होरी खेल १३२
अनौखो छैल......................५३
अब आयो फागुन १४८
अब चलो सब १५६
अरी ! याहि कल १७७
अरी चल नवल...................७७
अरी नाय मानै....................३५
अरी मेरी चूनर १५१
अरी ये तो फाग १५४
अरी वह नन्दमहर को..........४१
अरी होरी में......................८३
अरे क्यों ज्यादा १६७
अरे लाला तोहे १६२
अरे हेला वे ३३
अलगोजा श्याम.................७८
अलबेली कुँवरि १०
अलबेली के यार.................६६
अहो आज भोर १७१
अहो तकि घातनि १७९
अहो रस होरी १७९
आँख जिन आँजो................८४
आँखों में रंग डार................४३
आज खेलूँगी......................४२
आज देखो रँग है ९२
आज बिरज में १
आज ब्रजराज १२२
आज मैं रंग में १६४
आज मोहि नटवा................५१
आज यहीं रहो छैल १४
आज श्याम तुम..................६३
आज श्याम मग ३१
आज हरि डगर २०
आज है रई रे ९६
आजा-आजा साँवरा १८६

आजु वसंत बन्यो १५७
आय गई आय १०६
आय गई री होरी ३०
आय गयौ फागुन १२९
आय गयौ..........................५४
आयौ फागुन १०१
आयौ है फागुन ९७
आवै अचक मेरी बाखर ६
इक चंचल देखी ३८
इक चंचल नारी ३५
इक बात हमारी २२
इकली कहाँ जाति २२
इन गलियन काम १९
उँगरी पै नाच ६४
उठ देख सखी १२७
उड़ जा रे भँवर १६
उत मत जा १४४
एरी होरी कों.....................५२
एहो बचाय डारौ १४७
ऐसी होरी मचाई १०२
ऐसो चटक रंग डार्यौ ३
ओ कान्हा आजा १८०
ओ हो महीनो फागण १७९
कंकरी दै जेहर..................७१
ककरेजी तेरो चीर १५
कजरा तेरौ मारै १९४
कन्हैया रंग तोपै..................४८
करुँगी कपोलन लाल २८
कल तुम कहाँ १४८
काजर वारी गोरी.................४३
कान्हा ते कैसे ४८
कान्हा धरें मुकुट ११
कान्हा धरें मुकुट १३७
कान्हा निलजी...................६०
कान्हा पिचकारी.................४९
कान्हा पिचकारी.................७८
कान्हा मत मारे १८४
कान्हा म्हारे घर १८१
किन रंग दीनीं रे ९
कुँज विहारी कौ १५७
कृष्ण ने सुन बहिना १६५
कैसा है यह देश २७
कैसी होरी बिरज में २४
कैसी होरी मचाई १०९
कैसे आऊँ रे १४५
कैसे जाय छुप्यो.................४१
को खेलै श्याम २२
कोउ भलो बुरो..................५४

क्या करै अनोखे.................५३
खेल रहे रंग......................५९
खेलत- खेलत सबरी २३
खेलत सुंदरस्याम १११
खेलें संत सकल ११८
खेलें स्यामा-स्याम ९४
खेलैं नन्द दुलारो १३
खेलौ बलदाऊ..................५३
गलियन बिच धूम १२
गलियन में घिर १५०
गहरे कर यार ९
गारी कौ बिलग १०९
गावें दै दै तारियाँ ९८
गोरी आज बिरज १७३
गोरी कुँजन में २
गोरी चूनर........................५०
गोरी तेरे नैना १७
गोरी तेरे नैना.....................५९
गोरी सजले ९७
गोरी होरी तो ५७
गोरी-गोरी गुजरिया ५८
गोरे अंग गुवालिनी ३६
गोविन्द यदुबीर ३७
गोहन पर्‌यो मेरे..................५८
गौने आई एक नारि १५
गौहन लागी रे १५६
घनश्याम बुलावै १८७
घर आँगण न सुहावे १२४
घुँघटा दियो उघार १७८
घूँघट तौ मैं भरम १९३
चढ़ के नन्दगाँव..................९१
चढ़ती ज्वानी १३५
चल देखिये बरसाने १०२
चल देखियै बरसाने १०१
चल बरसाने......................६६
चलि री भीर तें १५९
चली चल यों ही २५
चलो अैयो श्याम १३
चलो खेलौ मोहन २१
चल्यो अइयो मेरे १०३
चहुँदिसि नदियाँ २९
चाहे रुठै सब.....................६२
चिरजीयौ होरी के रसिया १९
चुनरिया रंग में १७४
चूनर रंगै तो १७०
चूनरिया रंग में...................७९
चौंकि परी गोरी ३१
छबीली नागरी हो ६

छाँड़ो डगर मेरी ३
छिपि जिनि जैयौ ११६
छेड़ै रोज...........................८०
छैल रंग डार २७
छैला तोय बुलाय १२
छैला ने रँग में १२२
छैला मन बस......................४५
छैला मेरी गागर २८
छैला मेरी जोट ४०
छैला ये आज ३३
छैला ये आज ३३
जब ते धोखौ १३३
जब सों धोखो ४६
जसुदा री तेरौ लाल १७२
जागे मेरी सास १६
जान दे रे..........................३८
जानी-जानी तेरी.................४७
जिन जैयो रे......................७०
जुग-जुग जियो...................४५
जेहर फोर भिजई १३६
जो होरी तू.........................७३
जोगी रंग भीना १६३
झमकि चली हैं ११०
टोल ग्वालन को १४०
ठाड़ी रह ग्वालिन २०
ठाढ़ी अपनी अटरिया १३४
ठाढ़ो रे कनुवा १७
डगर चलत मसकै ७
डफ धर दे यार २२
डफ बाजे हैं ३५
डोरी डालूँगी महल १३
ढफ धरि दै.........................५०
ढफ बाजे कुँवरि ८
ढफ बाज्यो छैल १०
तुम आवो री १५२
तुम बिन खेल......................७१
तू कित आज १४२
तू छोड़ बलम १२६
तेने जुलम कियो १६८
तेरी पतरी कमर पै १३५
तेरी मेरी है........................६९
तेरी होरी खेलन ३४
तेरी होरी खेलन..................५१
तेरे जोवन कौ....................६६
तेरे जौवन कौ ९२
तेरो गोरो बदन....................५१
तो पै होरी..........................६३
दरसन दै चंदबदन गोरी २०

दरसन दै नन्ददुलारे १०
दरसन दै निकसि ९
दरसन दै मोरमुकुट वारे १९
देखि सखी वृषभानुकिशोरी २०
देखूँ तेरो हाथ ३९
देखो रघुबीर १८४
नंदगाँव अनौखौ..................६६
नई कुञ्ज..........................८०
नखरे ते बात १६०
नथ कौ तोता.....................६८
ननदी कू आपै ११३
ननदी दरवाजे पर २८
ननदी सजनी कैसे १२७
नन्द के गैल चलत ४
नन्द को छौना १०६
नन्दगाँव हमारौ खेरौ १९३
नव कुंज सदन...................८८
नारी गारी..........................७१
निकस नेक होरी में १४५
नित आयो कर लाला १४
नित्य मधुर ब्रजधाम ११९
निलजी गारी ६२
नेक आगे आ श्याम १०
नेक मोहणों मांडन दे १६
नेह लाग्यो मेरो..................७४
नैननि में पिचकारी दई ६
पकड़ो री बृजनार १४१
पकरे ब्रजजन १४०
पकरो-पकरो होरी...............४९
पकरौ री ब्रजनार ११६
पकरौ री ब्रजराज १०४
पनघट को श्याम १००
पनघट पै बटमार १३६
पनघटवा कैसे जाऊँ ११
पनघटवा पै होरी ११४
परि गयो आज ११५
पर्‍यो री या.......................५३
पल्ले पर गई......................७२
पांडो कर गये.....................७०
पानीरा भरन कैसे ३४
पानीरा भरन कैसे................५२
पायलागूँ कर जोरी १४९
पिय प्यारी दोउ आज ४
पिया तैनै मेरी ११२
प्यारी नवल वन १५३
प्यारी बिहारी लाल.............५६
प्यारी बिहारीलाल सौं १४७

प्यारे खेलूँगी २१
फगुआ दै मोहन १८
प्यारे पिया खेलत...............७४
प्यारे हम नहिं खेलत १३४
प्यारे हम नहिं...................५५
फगुना जाय मत रे २४
फगुना जाय मत रे २४
फाग खेलन बरसाने १०५
फाग खेलन बरसाने १२१
फाग खेलन बरसाने १५३
फाग खेलन......................४२
फाग खेलौ १५५
फाग लगौ जब ३२
फागुन के दिन १२३
फागुन में रसिया १८
फिर गाई रस की २५
बिहारी छाँड़ि दै २
बन आयो छैला १०
बरज रही नहीं मान्यौ ४
बरजो यशोदाजी कान्हा २९
बरसाने चल ९
बरसाने महल ९
बरसाने री गोप्यां १८२
बलि छलन......................६९
बलि मत दै......................६९
बसंती रंग में.....................५०
बह जायगी काजर ५७
बहुत बड़े हैं......................४४
बाबा नन्द के द्वार १४४
बाबा बृषभान के ९६
बारी बयस बुद्धि १७१
बारी बयस बुद्धि की १७५
बावरी बन आई..................५४
बिहारी काढ़ि दै ३
बृजवासी रंग १८३
बैंयां झकझोरी....................६०
ब्रज की तोहे लाज १८
ब्रज कौ दिन १६
ब्रज में हरि होरी २६
ब्रज मोहन छैल २२
ब्रजमण्डल देस ७
भाज न जाय १२३
भामिनि चंपे की...............१५४
भायेली मोय......................६५
मंदिरये में बैठो १८१
मचल गई गोरी १६०
मचल गई गोरी................१२६
मत डारौ अबीर..................८१

मत मारै छैल १५
मत मारो श्याम...................७३
मत रोके मेरी गैल................३८
मतले मेरी लाज..................५०
मतवारी ग्वालिन २३
मदगजचाल चलत १३९
मदनमोहन की ९३
मदनमोहन की यार ३८
मदमातो फागुन ३५
मदमातौ महिना..................७०
मन में घर.......................१३१
मनमोहन आवनहार ३१
मनमोहन की रिझवार..........५४
मनमोहन नन्द...................६२
मनमोहन री रिझवार ३१
मनुवाँ बडो गरीब १३०
मानत नाहिं कन्हाई १२१
मिलि खेलत फाग ११३
मुद्दई मेरौ जेठ....................५७
मृगनैनी नारि १४
मेरी अँखियन में..................८४
मेरी मानतौ कन्हैया १३२
मेरे गालन मली ११८
मेरे नैनन में.......................५२
मेरे नैननि में १३७
मेरे मन की ९४
मेरे मुख पै अबीर................८६
मेरो खोय गयो १४३
मेरौ पिय रसिया १३
मैं कैसे होरी.......................८८
मैं तो घिर गई १०८
मैं तो चौंक उठी २०
मैं तो मलूँगी गुलाल १२
मैं तो सोय रही ४०
मैं तो होरी.........................६४
मैं तौ होरी १५७
मैं दधि बेचन......................५१
मैं पानीरा..........................७९
मैं होरी कैसे ९५
मैंने सुनी भनक १६६
मैया तेरे लाला १२५
मो मन यह........................७०
मोतियन लड़ी भाल १७६
मोरी अँखिया गुलाबी १४६
मोहन आ गयौ १२८
मोहन गोहन १३९
मोहन फिरत मतवारौ १६९
मोहन मुदरी लै...................५२

मोहन हो-हो होरी २१
मोहि दै दे दान १४
म्हारी चुनड़ी १८२
म्हारे होरी को ३०
यमुना तट श्याम ११
यह तो रीति १७१
या ब्रज में ४७
या मतवारे मीत १४३
या मतवारे मीत १४६
या में कहा लाज.................८१
या मोहन मोहि १२०
ये कैसो ऊधम गार..............३६
ये गोरी अनमोल.................६०
यों ही जायगौ १२५
रंग डार गयो १५०
रंग डारत नन्द को लाल २९
रंग डारत लाज १४१
रंग बरसे आज ९९
रंग बरसै रे.......................३३
रंग बिन कैसे......................४६
रंग मत डारे १८०
रंग में रंग दई ३९
रंग में रंग रँगमगी १६२
रंग रसियो खेले १८८
रंगन भीजि गई..................७७
रंगभरी होरी......................६१
रंगरेज गमार......................३७
रंगीली होरी आई................८५
रंगीली होरी खेलन १५८
रस कूँ कूर ३०
लाख लोग नगरी बसौं ३
रस लै तो द्वार २३
रस लै रै रसिया २३
रसिक छैल नन्द कौ ४
रसिया आँखिन में २
रसिया आयो द्वार २१
रसिया आयौ महल १३
रसिया केसर की.................५६
रसिया को नार ११
रसिया को मोहल्ला २८
रसिया भँवर बन्यौ १
रसिया मेरी गागर................६८
रसिया मेरी लहर................६७
रसिया मोय मोल १५
रसिया होरी में १
रहसि रस राचे १५८
राग रंग गह १०३
राधा नव ब्रजबाल ९२

राधा मोहन खेलत...............६०
राधा सखियन सों............११४
राधावर खेलत ३२
राधे श्री वृषभान ९५
री ठाड़ो नंददुलारो.............४५
रूप दुरै किहि.....................५९
लगन तोते.........................६७
लटकाय आई केस ३८
लाड़ी जू थारौ १६१
लाल गोपाल १५६
लाल रसमातो ३०
वृन्दावन खेल रच्यो १८
लिये फूल की १४२
वसन्त-वर्णन १८९
वारे की नारि......................६७
वृन्दावन अधर कमल १९३
वृन्दावन आज १४२
वृन्दावन मोहन १८
वृषभानु की लली ११२
वृषभानु भवन की................६३
शंकर खेलत होरी १०१
श्याम करी बरजोरी.............७५
श्याम के मैं अंक................४४
श्याम ने खेली १११
श्याम मली मुख.................७६
श्याम मोसों......................७५
श्यामा श्याम सलोनी १८८
श्यामा श्याम सों ४७
श्रीगिरिधरलाल की १४५
श्रीबिहारी विहारिनि.............८३
सखि सब है गये १४९
सखी री दैया १०७
सखी री मेरी जुलम १२७
सखी री मोरमुकुट वारो २
सखी सब जुरि मिल १३३
सखी सब है गई ८९
सगरी रात श्याम.................४२
सजनी भागन ते १
सब की चोट.....................५६
सब खेलन फाग १८७
सब दिन की.......................५६
सब मिल खेलौ १०२
सबरी दई रंग में १२३
सहज सौंज १४३
साँची कहो मनमोहन १५०
साँवरिया तेरी....................८२
साँवरे मोते १५२
साँवरे मोते.......................७६

साँवरे मोहि रंग में २५
साँवरो अजहू ११३
साँवरो अजहूँ.....................५५
सांवरे ने गारी.....................६५
सानूदा होरी........................५५
सारे बरसाने वारे.................६८
सावन की बरसै १०६
सीता चरेहैं मिरग १२
सुन मोहन रसिया...............७२
सुन साँवरा यार..................६८
स्याबास रंग में.....................३६
स्याम ने पनघट पै १३७
स्याम सों कहियौ ११९
हम आईं बरसाने वारी.........३७
हम चाकर राधारानी के २३
हरि कौ सुख ९०
हरि तेरो...........................७०
हरि रसिया १६
हरि होरी कौ......................८२
हरि होरी रंग १७
हा हा ब्रजनारी....................७१
हाँ ए सखी १८५
हाँ कृष्णजी खेलें १४४
हेरी मेरो श्याम ५
हेली ये डफ......................४४
हो बिहारी सब ३१
होरी आई १८५
होरी आई री ९०
होरी आई श्याम १४
होरी आज ६१
होरी के खिलार..................८७
होरी के खिलैया ९९
होरी को खिलार ५
होरी को खिलार.................६१
होरी को बन्यो....................५९
होरी कौ त्यौहार १२९
होरी खेल ९०
होरी खेल न जाने...............५०
होरी खेलत ६७
होरी खेलत हैं १५१
होरी खेलत.......................७७
होरी खेलन आयो ३९
होरी खेलन की..................५८
होरी खेलन चली ११०
होरी खेलन दै ३३
होरी खेलि ९३
होरी खेलूँ स्यामसुंदर १२८
होरी खेलै तो....................८७

होरी खेलो तो १९
होरी तो खेल.....................६४
होरी तोते न खेलूँ...............४१
होरी न खेलूँ......................४६
होरी पिया बिन १२४
होरी मीठी न लगत १५९
होरी में काहे......................६५
होरी में कैसे.......................४३
होरी में गए हार १३८
होरी में गये हार ११७
होरी में गोरी ३४
होरी में नहिं मान १२०
होरी में नैन १०७
होरी में नैन १०८
होरी में बरजोरी १७
होरी में लाज १२
होरी रे होरी.......................६३
होरी हो ब्रजराज २७
होरी हो ब्रजराज.................७२
होली आई रे १००

होरी सागर

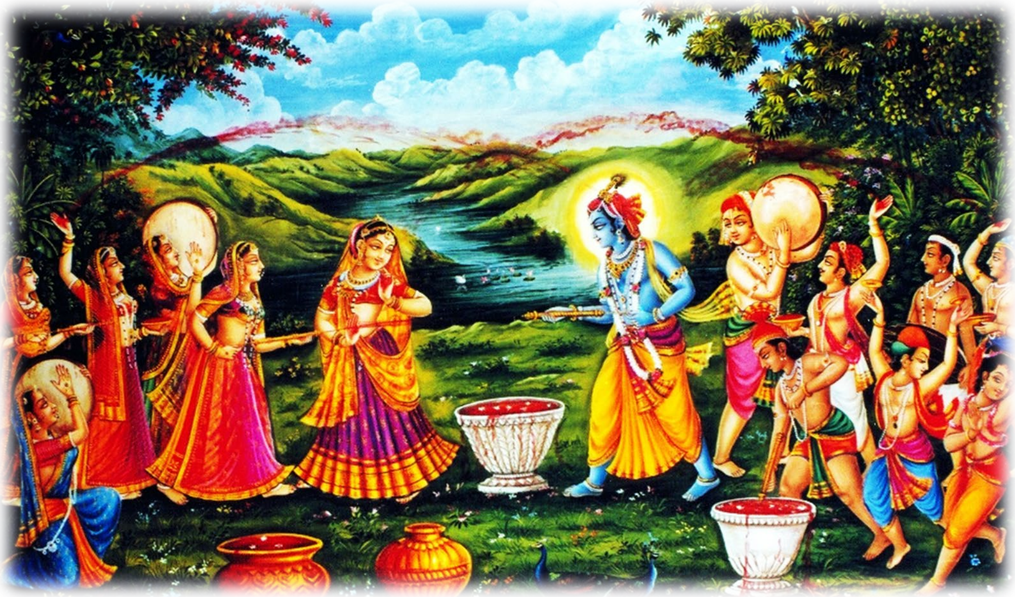

एक संग धाए नंदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि समाने उर आनँद मढै नहीं ।
धोय धोय हारी पदमाकर तिहारी सोंह,
अब तो उपाय एक चित्त में चढै नहीं ॥
कैसे करौं कहाँ जाऊँ कासों कहों कौन सुनै ॥
कोऊ बतावौ जासों दरद बढै नहीं ।
एरी मेरी बीर जैसें तैसें इन नैनन सों,
कढिगौ अबीर पै अहीर कौ कढै नहीं ॥

आज बिरज में होरी रे रसिया ।।
उतते आये कुँवर कन्हैया, इतते राधा गोरी रे रसिया ।
उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा, केशर गागर ढोरी रे रसिया ।
बाजत ताल मृदंग बांसुरी, और नगारे की जोरी रे रसिया ।
कृष्णजीवन लच्छीराम के प्रभु सौं, फगुवा लियौ भर झोरी रे रसिया।

सजनी भागन ते फागुन आयो, मैं तो खेलूँगी श्याम सँग जाय ।।
खेलूँ आप खिलाऊँ लाल को, मुख पे मलूँ गुलाल ।
वाने भिजोई मेरी फूलन अँगिया, मैं तो भिजोऊँ वाकी पाग ।
चोबा चन्दन अतर अरगजा, अबीर गुलाल उड़ाय ।
बरज रही बरज्यो नहिं मान्यों, हियरा में उठ्यो अनुराग ।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, करत अनौखे ख्याल ।
जो खेलो तौ सूधे खेलौ, न तो मारूँगी गुलचा गाल ।
कृष्ण जीवन लच्छी राम प्रभु सौं, मानूँगी भाग सुहाग ।

रसिया होरी में मेरे लग जायेगी, मत मारै दृगन की चोट ।।
अबकी चोट बचाय गयी मैं, कर घूँघट की ओट ।
मैं तो लाज भरी बड़े कुल की, तुम तो भरे बड़े खोट ।
पुरुषोत्तम प्रभु ह्वाँ जाय खेलो, जहाँ तिहारी जोट ।

रसिया भँवर बन्यौ बैठ्यौ रहियो रे, चल बस मेरी प्यौसार ।।
नथ गढाऊँ गुरदा गोखुरू रे, खँगवारी के छल्ला छार ।
पलका की दऊँ चाकरी रे, अँचरा ते करूँ ब्यार ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखै, तोते नैनां लड़ाऊँ द्वै चार ।

रसिया आँखिन में मेरे करके मत डारे अबीर गुलाल ॥
अछन-अछन पाछे अलबेली, निरखि नवेली बाल ।
नयो फाग जोबन रस भीनो, करत अटपटे ख्याल ।
दया सखी घनश्याम लाड़िले, भुज भरि करी निहाल ।

गोरी कुँजन में आज होरी मची है कहा बैठी है माँग सँवारे ॥
मेरी कही जो साँच न मानै, सुन लै ढफ धुँधकारे ।
उठ सजनी चल फाग खेल लै, प्रीतम तोहि पुकारै ।
नारायण तब बात बनेगी, तू जीतै पिय हारै ।

बिहारी छाँड़ि दै होरी में मो सौं बुरी हँसन की बान ॥
या ब्रज घर-घर मेरी तेरी, करत कुचरचा कान ।
औरन की तो कहा परेखौ, घर के करत गुमान ॥
तुम तौ छैल विदित या जग में, तुमरी नहिं कछु हान ।
निशिदिन सासुल डाटै हम कूँ, औ रखनी कुलकान ॥
जरै रीत या ब्रज की अनौखी, सुन-सुन भई हैरान ।
नागरिदास जो बादर फारै, वा दिन की मुसकान ॥

सखी री मोरमुकट वारो साँवरिया मोय मिल्यो साँकरीखोर ॥
गली साँकरी ऊँची नीची घटियाँ, दई है मटुकिया फोर ।
रतन जटित मेरी इंडुरी जामे, हीरा लाख करोर ।
एकौ हीरा जो खोवै, तेरी सब गायन कौ मोल ।
जैसी बजै तेरी बाँसुरी रे, मेरे नूपुर की घनघोर ।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु पर, डारूँगी तिनका तोर ।

छाँड़ो डगर मेरी चतुर श्याम बिंध जावोगे नैनन में ॥
भूल जाओगे सब चतुराई, मारूँगी सैनन में ।
जो तेरे मन में होरी खेलन की, लै चल कुँजन में ।
चोबा चन्दन और अरगजा, छिरकूँगी फागुन में ।
चंद्रसखी भज बालकृष्ण छबि, लागी है तन मन में ।

ऐसो चटक रंग डार्यौ श्याम मेरी चुनरी में पड़ गयो दाग ॥
मोहूँ ते केतिक ब्रजसुंदर, उनसों न खेलै फाग ।
औरन को अचरा न छुवै, या की मोही सौं पड़ गई लाग ।
श्रीबलिदास वास ब्रज छोड़ो, ऐसी होरी में लग जाय आग ।

बिहारी काढ़ि दै मेरी (बेदरदी) करकत आँख गुलाल ॥
सुरझावन दै उरझी मोहन, कंकन सों उरमाल ।
अति अधीर पीर नहिं जानत, मलत अबीर गुलाल ।
ललित किशोरी रंग कमोरी, ढोरत निठुर गोपाल ।

लाख लोग नगरी बसौं रसिया बिन कछु न सुहाय ॥
रायबेल केतकी मोंगरा, फूली बाग बहार ।
सबै फूल फीकै लगैं, बिना बलम भरतार ।
देखूँ हूँ दीखै नहिं वह कित, गयो नजर बचाय ।
देख सलोनो गाड़रु, सारिस ज्यों मँडराय ।
बौरी सी दौरी फिरूँ, मोय घर अँगना न सुहाय ।
ढूँढ़न के लाले परे, सागर के हिये समाय ।

रसिक छैल नन्द कौ री, हेली नैनन में होरी खेलै ॥
भरि अनुराग दृष्टि पिचकारी, आय अचानक मेलै ।
और कहा लगि कहौं सब विधि, करत भाँवती केलैं ।
रूम झूम रसिया आनंदघन, रिझै भिजै रस झेलै ।

पिय प्यारी दोउ आज होरी खेलत कालिंदी के तीर ॥
हँस-हँस बदन अरगजा डारत, मारत मूठ अबीर ।
चलत कुमकुमा रंग पिचकारी, भीजि रहे तन चीर ।
जनु घन दामिनि रूप धरै हैं, गोरे श्याम शरीर ।
बजत अनेक भाँति मृदु बाजै, होय रही अति भीर ।
नारायण या सुख निरखै बिन, कौन धरे मन धीर ।

बरज रही नहीं मान्यौ रंगीलौ रंग डार गयौ मेरी बीर ॥
तान दई मम तन पिचकारी, फार्‍यो कंचुकि चीर ।
चूनर बिगर गयी जरतारी, कसकत दृगन अबीर ।
मृदु मुसक्यान कमल नैनन के, छेदत तीर गँभीर ।
क्षण-क्षण छुअत छैल छतियन कौ, परसत सकल शरीर ।
निकस्यो निपट निडर ब्रजवल्लभ, निठुर प्रभु बेपीर ।

नन्द के गैल चलत मोय गारी दई तेरो आवै अचंभौ मोय ॥
निडर भयौ गलियन में डोलै, तोसों और न कोय ।
लै पिचकारी सँग ही सँग आवै, सबरी दई भिजोय ।
आनंदघन रसिया रस लोभी, अब न छोड़ूँगी तोय ।

हेरी मेरो श्याम भँवर मन लै गयो मेरे नैनन में मँडराय ॥
पनिया भरन मैं घर ते निकसी, (मेरे) बाँये बोल्यो आय ।
पनघट पै ठाढ़ो भयौ, मोय भर-भर देय उचाय ।
कैसे तो फूटै याकी गागरी, याय मिलै नन्द को लाल ।
है कोऊ मन की भाँवती, जो श्याम हि देय मिलाय ।
जुगल रूप छबि छैल की, रस सागर रह्यौ लुभाय ।

होरी को खिलार सारी चूनर डारी फार ॥
मोतिन माल गले सों तोरी, लहँगा फरिया रंग में बोरी ।
कुमकुम मूठा मारे मार, सारी चूनर डारी फार ॥
तक मारत नैनन पिचकारी, ऐसो निडर ढीठ बनवारी ।
कर सों घूँघट पट दै डार, सारी चूनर डारी फार ॥
बाट चलत में बोली मारै, चितवन सों घायल कर डारै ।
ग्वाल बाल संग लिये पिचकार, सारी चूनर डारी फार ॥
भरि-भरि झोर अबीर उड़ावै, केशर कीच कुचन लपटावै ।
या ऊधम सों हम गईं हार, सारी चूनर डारी फार ॥
ननद सुने घर देवै गारी, तुम निर्लज्ज भये गिरधारी ।
विनय करत कर जोर तुम्हार, सारी चूनर डारी फार ॥
जब सों हम या ब्रज में आईं, ऐसी होरी नाहिं खिलाई ।
दुलरी-तिलरी तोर्‌यो हार, सारी चूनर डारी फार ॥
कसकत आँख गुलाल है लाला, बड़े घरन की हम ब्रजबाला ।
तुम ठहरे ग्वारिया गँवार, सारी चूनर डारी फार ॥
धन-धन होरी के मतवारे, प्रेमी भक्तन प्रानन प्यारे ।
अवध बिहारी चरनन चित धार, सारी चूनर डारी फार ॥

नैननि में पिचकारी दई मोहि गारी दई होरी खेली न जाय ॥
क्यों रे लंगर लंगराई मोते कीनी, केसर कीच कपोलन दीनी,
लिये गुलाल ठाड़ो मुसकाय, होरी खेली न जाय ॥
नेक न कान करत काऊ की, नजर बचावै बलदाऊ की,
पनघट सों घर लो बतराय, होरी खेली न जाय ॥
औचक कुचन कुमकुमा मारै, रंग सुरंग सीस सों ढारै,
यह ऊधम सुन सास रिसाय, होरी खेली न जाय ॥
होरी के दिनन मोसों दूनो-दूनो अरुझै, शालिग्राम कौन याय बरजै,
अंग लिपट हँसि हा हा खाय, होरी खेली न जाय ॥

आवै अचक मेरी बाखर में होरी को खिलार ॥
अचक-अचक मेरे अँगना आवै, आप नचै और मोय नचावै,
देखत ननदुल खोल किंवार, होरी को खिलार ॥
डारत रंग करत रस बतियाँ, सहज हि सहज लिपट जाय छतियाँ,
यह दारी तेरो लगवार, होरी को खिलार ॥
जानै कहा सार होरी की, समुझै बहुत घात चोरी की,
आखिर तो गायन कौ ग्वार, होरी को खिलार ॥
शालिग्राम नेक हँस बोलै, कपट गाँठ हियरा की खोलै,
लिपटत होय गरे को हार, होरी को खिलार ॥

छबीली नागरी हो धन तेरो परम सुहाग ॥
तेरेइ रंग रंग्यौ मन मोहन, मानत है बड़भाग ।
आज फबी होरी प्रीतम संग, लखियत हैं अनुराग ।
श्रीरूपलाल हित रूप छके दृग, उपमा को नहिं लाग ।

डगर चलत मसकै मेरो पाँव तेरौ कैसो सुभाव ॥
क्यों मोहन गोहन नहिं छाँड़ै, गागर में काँकर दे फोरै ।
साँकरी गली लगावै दाव, तेरौ कैसो सुभाव ॥
साँकरी गली अचानक घेरी, बैयाँ पकर मेरी गागर गेरी ।
मानत नहिं चौगुनो चाव, तेरौ कैसो सुभाव ॥
मोहन प्रकट भयो ब्रज जब ते, शालिग्राम चाव भयो तब ते ।
गालन पै गुलचा द्वै चार, तेरौ कैसो सुभाव ॥

अचक आय उँगरी पकरी याने कैसी करी ॥
अँगुरी पकर मेरो पहुचो पकर्‍यो, कित ह्वै जाऊँ गिरारो सकर्‍यो,
लिपटत लाग रही धकरी, याने कैसी करी ॥
छतियन कीच दई केसर की, मुरकत गूँज खुली बेसर की,
मोतिन माल भली बिखरी, याने कैसी करी ॥
जो कहुँ ननद सुनैगी मेरी, ये होरी की बातें तेरी,
(अँखियन) छतियन बीच गुलाल धरी, याने कैसी करी ॥
शालिग्राम देखियत वारौ, श्रीमुखचन्द्र कमरिया वारौ,
अंतर को कारो सिगरी, याने कैसी करी ॥

ब्रजमण्डल देस दिखाय रसिया ॥
तेरे बिरज में मोर बहुत हैं, कोंहक मोर फटै छतिया ।
तेरे बिरज में गाय बहुत हैं, पी-पी दूध भई पटिया ।
तेरे बिरज में ज्वार-बाजरो, हरी-हरी मूँग उरद कचिया ।
तेरे बिरज में बंदर बहुत हैं, सूनो भवन देख धसिया ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखै, तेरे चरन मेरो मन बसिया ।

ढफ बाजे कुँवरि किशोरी के ।।
तैसी संग सखी रंग भीनी, छैल-छबीली गोरी के ।
हो हो कहि मोहन मन मोहत, प्रीतम के चित चोरी के ।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनी, कर डफ गावत होरी के ।

अंग लिपट हँसि हा-हा खाय होरी खेली न जाय ।।
भर-भर झोर अबीर उड़ावै, केसर कुमकुम मुख लपटावै,
या होरी को कहा उपाय, होरी खेली न जाय ।
कोरे माटन केशर घोरी, पचरंग चूनरि रंग में बोरी,
घर जाऊँ सुने सास रिसाय, होरी खेली न जाय ।।
घूँघट में पिचकारी मारै, सारी चोरी लहँगा फारै,
मुख सों अंचल देय हटाय, होरी खेली न जाय ।।
ग्वालबाल सखियन ने घेर्‌यो, अतर अरगजा नैनन गेर्‌यो,
कनक कलस रंग सिर सों च्वाय, होरी खेली न जाय ।।
सखियन पकरे नन्द कौ लाला, लाली रूप बनायो बाला,
काजर मिस्सी दई लगाय, होरी खेली न जाय ।।
साड़ी औ लंहगा पहिरायो, टिकुली सेंदुर मांग भरायौ,
सीस ओढ़ना दियो उढ़ाय, होरी खेली न जाय ।।
हाथन मेंहदी पांय महावर, बिछुवा पायल पहरे गिरधर,
अद्भुत शोभा बरनी न जाय, होरी खेली न जाय ।।
कान झुबझुबी बाला वारी, नथुनी बलका बेसर धारी,
सोलह सिंगार दियो रचाय, होरी खेली न जाय ।।
जसुदा ढिंग लालन धर धाई, दीन उरहनो बहुत खिजाई ।
अवध बिहारी मन ललचाय, होरी खेली न जाय ।।

बरसाने महल लाड़िली के ॥
और पास वाके बाग-बगीचा, बिच-बिच पेड़ माधुरी के ।
तिन महलन विहरत पिया-प्रीतम, निशिदिन प्रिया चाड़िली के।
वृन्दावन हित रंग बरसत है, छिन-छिन रस जु बाढ़िली के ।

बरसाने चल खेलैं होरी ॥
पर्वत पे वृषभानु महल है, जहाँ बसे राधा गोरी ।
चोबा चन्दन अतर अरगजा, केशर गागर भर घोरी ।
उतते आये कुँवर कन्हैया, इत ते राधा गोरी ।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन कूँ, चिरजीवो मंगल जोरी ।

गहरे कर यार अमल पानी ॥
कूंड़ी सोटा दाब बगल में, भाँग मिरच की मैं जानी ।
इत मथुरा उत गोकुल नगरी, बीच में यमुना लहरानी ।
लै चलि हैं बरसाने तोकूँ, होय भानुघर मेहमानी ।
तोय करैं होरी को भरुवा, हम होंगे तेरे अगवानी ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखैं, रस की है ह्वाँ रजधानी ।

किन रंग दीनीं रे रसिया केसर की बूँदन में,
अँगिया किन रंग दीनी रे ।
देखेंगी मेरी सास ननदिया, यह कहा कीनी रे ।
चोबा चन्दन और अरगजा, सौंधै भीनी रे ।
रसिक प्रीतम अभिराम श्याम ने, भुज भर लीनी रे।

दरसन दै निकसि अटा में ते ॥
लट सरकाय दरस दै प्यारी, निकस्यो चंद घटा में ते ।
कोटि रमा सावित्री भवानी, निकसी चरन छटा में ते ।
पुरुषोत्तम प्रभु यह रस चाख्यो, माखन कढ़्यो मठा में ते ।

दरसन दै नन्द दुलारे ॥
मोर मुकुट कानन में कुंडल, होठन बंसीवारे ।
हाथ लकुट कम्मर की खोई, गौअन के रखवारे ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, जीवन प्राण हमारे ।

ढफ बाज्यो छैल मतवारे को ॥
ढफ की गरज मेरो सब घर हाल्यो, हाल्यो खंभ तिवारे को ।
ढफ की गरज मेरो सब तन हाल्यो, हाल्यो झुब्बा नारे को ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, ये रसिया नन्द द्वारे को ।

अलबेली कुँवरि महल ठाड़ी ॥
गहे पिचक रंग भरत श्याम को, उतते प्रीति भरन गाढ़ी ।
हो-हो कहि मोहन मन मोहत, मनहुँ रूप-निधि मथि काढ़ी ।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनी, कर डफ गावति छवि बाढ़ी ।

बन आयो छैला होरी कौ ॥
मल्ल काछ सिंगार धर्‍यो है, फेंटा सीस मरोरी कौ ।
सोंधों भर्‍यो उपरना सोहै, माथे बिंदा रोरी कौ ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, ये रसिया या गोरी कौ ।

नेक आगे आ श्याम तोपे रंग डारूँ ॥
रंग डारूँ तेरे मरवट माढ़ूँ, गालन पै गुलचा मारूँ ।
एढ़ी-टेढ़ी पगिया बाँधूं, पगिया पै फुलरी पारूँ ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, तन मन धन जोवन वारूँ ।

रसिया को नार बनावो री ।।

कटि लँहगा उर माँहि कंचुकी, चूनर सीस ओढ़ावो री ।
बाँह भरा बाजूबंद सोहै, नथ बेसर पहिरावो री ।
गाल गुलाल नयन में कजरा, बेंदी भाल लगावो री ।
आरसी छल्ला औ खँगवारी, अनवट बिछुवा लावो री ।
नारायण तारी बजाय के, यशुमति निकट नचावो री ।

पनघटवा कैसे जाऊँ री ।।

पनघट जाऊँ पनघट जैहै, बिन भीजै नहिं आऊँ री ।
केसर कीच मची गैलन में, कैसे जल भर लाऊँ री ।
सुंदर स्याम गुलाल मलेंगे, लाजन मरि-मरि जाऊँ री ।
कृष्ण पिया सों मेरो मन मान्यो, का विधि नेह निभाऊँ री ।

कान्हा धरें मुकुट खेलैं होरी ।।

उतते आये कुँवर कन्हैया, इतते राधा गोरी ।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, मारत भर-भर झोरी ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्यामघन, जुग जीवौ यह जोरी ।

यमुना तट श्याम खेलैं होरी ।।

नवल किशोर श्याम घन सुंदर, नवल बनी राधा गोरी ।
नवल सखा गये नव उमंग में, नवल रंग केसर घोरी ।
नवल सखी ललितादिक हिलमिल, नवल त्रिया गावैं होरी ।
नवल गुलाल अबीर कुमकुमा, घुमड़्यो गगन चहूँ ओरी ।
कृष्णपिया नवजोवन राधे, चिरजीयो जुग-जग जोरी ।

छैला तोय बुलाय गई नथ वारी ।।
वा नथ वारी को लम्बो गिरारो, ऊँची अटा बैठक न्यारी ।
वा नथ वारी को नाम न जानूँ, मोय बताई तेरी घरवारी ।
कूंड़ी सोटा लै चल रसिया, खूब करै खातरदारी ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्यामघन, रोम-रोम तोपैं वारी ।

होरी में लाज न कर गोरी ।।
हम ब्रज के रसिया तुम गोरी, भली बनी है यह जोरी ।
जो हमसे सूधे नहिं बोलो, यार करेंगे बरजोरी ।
नारायण अब निकसि द्वार ते, छूटौ नहिं बनके भोरी ।

मैं तो मलूँगी गुलाल तेरे गालन में ।।
गाल गुलाल नैन में कजरा, बेनी गुहों तेरे बारन में ।
आज कसक सब दिन की काढ़ूँ, बेंदी दऊँ तेरे भालन में ।
चन्द्रसखी तोहि पकरि नचाऊँ, वीर बनूँ ब्रजबालन में ।

गलियन बिच धूम मचावै री ।।
ग्वालबाल लिये कुँवर कन्हैया, नित उठ भोरे हि आवै री ।
हाथ अबीर गुलाल फेंट भर, गागर रंग ढुरावै री ।
सुनि अति हि ऊधम रसिया को, जियरा बहुत डरावै री ।
बाजत ताल मृदंग बाँसुरी, गारी और सुनावै री ।
सूरदास प्रभु की छवि निरखत, नैनन हा-हा खावै री ।

सीता चरेहैं मिरग तेरी बारी ।।
कौन री बारी की बार करैगौ कौन करैगौ रखबारी ।।
लछमन देबर बार करैगौ राम करैगौ रखबारी ।।

चलो अैयो श्याम मेरे पलकन पै ॥
तू तौ रे रीझयो मेरे नवल जोवना, मैं रीझी तेरे तिलकन पै ।
तू तौ रे रीझयो मेरी लटक चाल पै, मैं रीझी तेरी अलकन पै ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, अबीर गुलाल की झलकन में ।

खेलैं नन्द दुलारो हुरियाँ री ॥
रंग महल में खेल मच्यो जहाँ, राधा लहुरि बहुरियाँ री ।
रंग गुलाल उड़ेलनि डारें, ललिता आदि छुहरियाँ री ।
वृन्दावन हित निरखि प्रशंसित, बाला रूप जुहरियाँ री ।

डोरी डालूँगी महल चढ़ अैयो रसिया ॥
पौरी में मेरो सुसर सोवत हैं, आँगन में ननदुल दुखिया ।
ऊँची अटरिया पलंग बिछ्यो है, तोषक गिलम गलीचा तकिया ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्यामघन, वहीं तेरी तपन बुझाऊँ रसिया ।

रसिया आयौ महल खबर कीजौ ।
जब रसिया गोंड़े में आयौ, भर लोटा अरग दीजौ ॥१॥
जब रसिया दरबाजे पै आयौ, हाथ पकरि भीतर लीजौ ॥
जब रसिया महलन में आयौ, अधरामृत रस प्याय दीजौ ॥२॥
जब रसिया सेजन पै आयौ, छतियाँ सों लिपटाय लीजौ ॥
पुरुषोत्तम प्रभु कुँवर रसिक, याके मन की तपन बुझाय दीजौ ॥३॥

मेरौ पिय रसिया री सुन री सखी तेरौ दोष नहीं री ॥
नवल लाल कौ सब कोउ चाहत, कौंन-कौन के मन बसिया री ।
एकन सों नयना जोड़े, एकन सों भौंह मरोरे, एकन को मुख हसिया री ।
कृष्णजीवन लछिराम के प्रभु, माई संग डोलत पूर्ण शशिया री ।

आज यहीं रहो छैल नगरिया में ।।
घर के बलम कूँ मीसी कूसी रोटी, रसिया कूँ पूवा थरिया में ।
घर के बलम दार मोठ की, रसिया को भात छबरिया में ।
घर के बलम कूँ खाट खरैरी, रसिया कूँ पलंग अटरिया में ।
पुरुषोत्तम प्रभु छैल हमारे, तेरे खिलौना मेरी अंगिया में ।

नित आयो कर लाला तोते सब राजी ।।
सासहु राजी ससुर हू राजी, कहा करै बलमा पाजी ।
उरद की दाल गेंहूँ के फुलका, बेंगन साग चना भाजी ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखै, रसिया सों मेरो मन राजी ।

होरी आई श्याम मेरी सुध लीजो ।।
मैं हूँ सास ननद के बस में, मेरी गलियन फेरा दीजो ।
खेलन मिस अैयो मेरे अँगना, जीवन कौ कछु रस लीजो ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, हियरा ते लिपटाय लीजो ।

मोहि दै दे दान घूँघट वारी ।।
खोल घूँघट मैं दान लेउँगो, मूठ गुलाल गालन मारी ।
फूल सुहाग हार पहराऊँ, सुन्दरी छोड़ो लाजन सारी ।
रसिक श्याम की बतियाँ सुनकै, मुदित भई है सुकुँवारी ।

मृगनैनी नारि नवल रसिया ।।
अतलस कौ याको लंहगा सोहै, झूमक सारी मन बसिया ।
अँगुरिन में मुँदरी रतनन की, बीच आरसी मन बसिया ।
बाँह भरा बाजूबंद सोहै, हिये हमेल दियै छतियाँ ।
बड़ी-बड़ी अँखियन कजरा सोहै, टेढ़ी चितवन मन बसिया ।

गोरी-गोरी बँहियन हरी-हरी चुरियाँ, बंद जंगाली मन बसिया ।
रंग महल में सेज बिछाई, लाल पलंग पचरंग तकिया ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै, सबै छोड़ मैं ब्रज-बसिया ।

गौने आई एक नारि बड़ी भोरी ॥
गोरौ बदन बंक वाकी चितवनि, बड़े-बड़े नैन उमर थोरी ।
कै तो वाके चोरौ माखन, कै चलि संग खेलौ होरी ।
रसिक गोविन्द अभिराम श्यामघन, बहुत गई रह गई थोरी ।

मत मारै छैल मेरे लग जायेगी ॥
छरी गुलाब की बहुत कटीली, गोरे अंग में चुभ जायेगी ।
स्यालू सरस कसब कौ लंहगा, खासा की अंगिया दरक जायेगी ।
भकुटी भाल तिलक केसर कौ, कजरा की रेख बिगर जायेगी ।
पुरुषोत्तम प्रभु कहत ग्वालिनी, चरनन माहि लिपट जायेगी ।

ककरेजी तेरो चीर कहाँ भीज्यौ ॥
जो तू कहत है पनियाँ भरन गई, मैं जान्यों नन्द को रीज्यौ ।
फागुन मास लाज अब कैसी, फिर पीछे बदलो लीजौ ।
गोविन्द प्रभु सों फगुवा लैके, अंकन भरि मन कौ कीजौ ।

रसिया मोय मोल मुल्याय लीजो ॥
जो रसिया मोय हलकी जानै, कांटे पै तुलवाय लीजो ।
जो रसिया मोय पतरी जानै, अपनो जोर जमाय लीजो ।
पुरुषोत्तम प्रभु कुँवर लाड़िले, तन की तपन बुझाय लीजो ।

जागे मेरी सास अटारी में ॥
पौरी खोल चलो मत अइयो, सोवै ननद तिवारी में ।
सुसर की रीति बड़ी है खोटी, डारै हाथ कटारी में ।
अब घनश्याम फेर तुम अैयो, आधी रात अन्ध्यारी में ।

उड़ जा रे भँवर तोहि मारूँगी ॥
उड़ि भँवरा छतियाँ पै बैठ्यो, कैसे बोझ सम्हारुँगी ।
एक भँवर सो प्रीति हमारी, दूजो नाहिं निहारुँगी ।
पुरुषोत्तम प्रभु भँवर हमारे, तन मन जोबन वारुँगी ।

ब्रज कौ दिन दूलह रंग भर्‌यो ॥
हो-हो होरी बोलत डोलत, हाथ लकुट सिर मुकुट धर्‌यो ।
गाढ़ै रंग-रंग रंग्यो ब्रज सगरो, फाग खेल को अमल पर्‌यो ।
वृन्दावन हित नित सुख बरषत, गान तान सुनि मन जु हर्‌यो ।

हरि रसिया खेलत हैं होरी ॥
मोर पखा मूठा सिर डोलत, झूमक दै नाचत गोरी ।
कनक लकुट लिये ब्रज नागरि, मुसकत है थोरी-थोरी ।
कर जेरी नग जटित श्याम के, अबीर गुलाल भरे झोरी ।
खेलत श्री ब्रजराज पौरि पै, होत परस्पर बरजोरी ।
वृन्दावन हित धाई-धाई, धरत भरत रंग दुहूँ ओरी ।

नेक मोहणों मांडन दे होरी को खिलैया ॥
जो तुम चतुर खिलार कहावत, अंगुरिन को रस लेहो। होरी..
उमडे घुमडे फिरत रावरे, सकुचत काहे हो । होरी को ...
सूरदास प्रभु होरी खेलो, फगुवा हमरो देहो । होरी को ...

हरि होरी रंग मचावत है ।।

जोबन रूप छक्यो मद ढोटा, तुव लखि नैन नचावत है ।
घर-घर जाय फाग के फोकट, निलजी गारी गावत है ।
आपुन भरत रंग पट बनितनि, इनकी चोट बचावत है ।
भर-भर कलश अरगजा मोहन, जुवतिन के सिर नावत है ।
दै करतारी हो-हो कहि-कहि, बाजे विविध बजावत है ।
जो कोउ गली गल्यारे निकसै, धाइ जाइ गहि लावत है ।
वृन्दावन हित नगर नंदीश्वर, आपुन भींजि भिंजावत है ।

गोरी तेरे नैना बड़े रसीले ।।

बिहँस उठत निरखत मेरो मुख, घूँघट पट सकुचीले ।
फागुन में ऐसी नहिं चहिये, ये दिन रंग रंगीले ।
ललित किशोरी गोरी खंजन, बिन अंजन कजरीले ।

होरी में बरजोरी करेंगी ।।

कहा चमकावत मोर के चंदा, बदन मांड ते हम न डरेंगी ।
कान पकरि मुख गुलचा दै हैं, अपु अधीन करि रंगन भरेंगी ।
वृन्दावन हित रूप लाड़िले, ऐंड़न रहि है अब निदरेंगी ।

ठाढ़ो रे कनुवा ब्रजवासी ।।

रंग ढारि कित भज्यो लंगरवा, लोग करैं मेरी हाँसी ।
बालपन खेलन में खोयो, गोकुल में बारामासी ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखैं, जनम-जनम तिहारी दासी ।

फगुआ दै मोहन मतवारे, फगुआ दै।
ब्रज की नारी गारी गावत, तुम द्वै बापन बिच वारे।
नन्दजी गोरे जसुमति गोरी, तुम याही ते भये कारे।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत, गोप भेष लिये अवतारे।

फागुन में रसिया घरवारी॥
हो-हो बोलै गलियन डोलै, गारी दै-दै मतवारी।
लाज धरी छपरन के ऊपर, आप भये हैं अधिकारी।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत, ग्वाल करैं सब किलकारी।

वृन्दावन खेल रच्यो भारी॥
वृन्दावन की गोरी नारी, टूटे हार फटी सारी।
ब्रज की होरी ब्रज की गारी, ब्रज की श्री राधा प्यारी।
पुरुषोत्तम प्रभु होरी खेलैं, तन मन धन सर्वस वारी।

वृन्दावन मोहन दधि लूटी॥
कहाँ तेरो हार कहाँ नक बेसर, कहाँ मोतिन की लर टूटी।
जाय कहूँ यशुमति के आगे, झकझोरत मटकी फूटी।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को, सर्वस दै ग्वालिन छूटी।

ब्रज की तोहे लाज मुकुट वारे॥
सूर्य चन्द्र तेरो ध्यान धरत हैं, ध्यान धरत नव लख तारे।
इंद्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर, तब गिरिवर कर पर धारे।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत, गाय गोप के रखवारे।

चिरजीयौ होरी के रसिया ॥
नित ही आवो मेरे होरी खेलन, नित गारी नित ही बसिया ।
जो लो चंदा सूरज उदय रहैं, तो लौं ब्रज में तुम बसिया ।
हरीचंद इन नैन सिरायो, पीत पिछोरी कटि कसिया ।
हँसत खेलत मेरी उमर बितानी, तेरी कृपा ब्रज में बसिया ।
मोर मुकुट पीतांबर सोहै, अति रस की पगिया कसिया ।
ब्रज दूलह यह छैल अनोखो, (तेरी) हँस चितवन मेरे मन बसिया ।

दरसन दै मोरमुकुट वारे ॥
कटितट राजत सुभग काछनी, फरकत पीरे पटवारे ।
वृन्दावन में धेनु चरावैं, बाजत वंशीवट वारे ।
पुरुषोत्तम प्रभु के गुन गावैं, शेष सहस मुख रट हारे ।

इन गलियन काम कहा तेरो ॥
इन गलियन मेरो स्यालूरा फाटयो, मैं फारुँगी श्याम झगा तेरो ।
इन गलियन मेरो खोयो रे नगीना, मैं जोरुँगी पंच करुँगी नेरो ।
इन गलियन तू तो ऐंड़ो ही डोले, तेरी काढ़ूँगी ऐंड़ करुँगी चेरो ।
प्राण जीवन लच्छीराम के प्रभु प्यारे, हरि चरनन में मन मेरो ।

होरी खेलो तो कुँजन चलो गोरी ॥
एक ओर रहो सब ब्रजवनिता, तुम रहो राधे जू हमारी ओरी ।
चोबा चन्दन अतर अरगजा, लाल गुलाल भरे झोरी ।
ललित किशोरी प्रिया प्रीतम मिलि, खेलेंगे फाग सरा बोरी ।

ठाड़ी रह ग्वालिन मदमाती ॥
यह अवसर होरी को हैरी, हम तुम खेलैं संग साती ।
भूलि गयो घर गैल हमारी, लै लगाय अपनी छाती ।
पुरुषोत्तम प्रभु हँसत हँसावत, ब्रजबनिता सब गुन गाती ।

मैं तो चौंक उठी डफ बाजन सों ॥
सोवत ही अपने आँगन में, जागी गारी गाजन सों ।
देखूँ तो द्वारे मोहन ठाड़े, सजे छैल सब छाजन सों ।
पुरुषोत्तम मेरो नाम लै लै तिन, गारी दई बिन लाजन सों ।

देखि सखी वृषभानु किशोरी ॥
निज प्रीतम को रूप निहारति, जा विधि चंद्र चकोरी ।
जो लों फाग खेलन को निकसी, बीच भई चित की चोरी ।
नारायण अटके दृग छबि में, भूलि गई सुधि होरी ।

आज हरि डगर मचाई धूम ॥
जो ब्रज नारि गई जल भरवे, बीचहिं ते आई घूम ।
अति सुंदर नव जोबन भोरी, गज गति चलति है झूम ।
नारायण जो तू बच आवै, लेहूँ तेरे पग चूम ।

दरसन दै चंदबदन गोरी ॥
यह ओसर नहिं सकुच करन कौ, फागुन में छैल करैं जोरी ।
मुख निकासि घूँघट पट में ते, ललित कपोल मलैं रोरी ।
हीरा सखी हित ब्रज में बसिके, लाज के काज न तज होरी ।

रसिया आयो द्वार खोल गोरी ॥

फागुन मास न लाज करन को, बाहर निकसि खेलि होरी ।
बार-बार हम कहत न मानत, दुरि क्यों रहि है भवन ओरी ।
हीरा सखी हित सुन नव नागरी, विनय करूँ तेरी कर जोरी ।

मोहन हो-हो होरी ॥

कान्हि हमारे आँगन गारी, दै आयो सो कोरी ।
अब क्यों दुरी बैठे जसुदा ढिंग, निकसो कुंजबिहारी ।
उमंगि-उमंगि आयी गोकुल की, सकल मही धन वारी ।
तबहि लला ललकारि निकारी, रूप सुधा की प्यासी ।
लपटि गई घनश्याम लालसों, चमकि-चमकि चपलासी ।
काजर दै बनाई भरुवा कह, हँस-हँस ब्रज की नारी ।
कहि रसखान एक गारी पै, सौ आदर बलिहारी ।

चलो खेलौ मोहन संग होरी ॥

केसर रंग भरी पिचकारी, अबीर गुलालन की झोरी ।
ललिता सुन बिन कहे तू मेरे, जइयो मत उनकी ओरी ।
हीरा सखी हित आज श्याम कूँ, पकर नचावो नव ओरी ।

प्यारे खेलूँगी तुम संग होरी ।

बड़े खिलार कहावत हौ हरि, हम तो हैं अति ही भोरी ।
खबर परैगी आज फाग में, कैसी तिहारी बरजोरी ।
हीरा सखी हित कहत कठिन है, जानो मति माखन चोरी ।

ब्रज मोहन छैल नवल रसिया ॥
आठो पहर फाग नित होरी, राखत राधा मन बसिया ।
कर लिये ताल गुलाल फेंट में, नव नागरि उर को बसिया ।
हीरा सखी हित अचल रहौ यह, रसिक जनन दृग फँसिया ।

इकली कहाँ जाति आज गोरी ॥
मिली बहुत दिन में औचक ही, खेलूँ अब तो संग होरी ।
हिय बिच और बिचार करै जिन, मेरी तेरी बनी युगल जोरी ।
हीरा सखी हित फाग मनावो, होई तबै सुख उर ओरी ।

को खेलै श्याम तुम ते होरी ॥
बातन सूंगढ़ टूटत नाहिन, छोड़ो मग करिबो जोरी ।
लग्यो मास फागुन जा दिन ते, भूलि रहे माखन चोरी ।
हीरा सखी हित कहत साँवरे, जानों मति मोंकूँ भोरी ।

इक बात हमारी सुन गोरी ॥
पट लगाइ मंदिर कित बैठी, बाहिर आ खेलैं होरी ।
फागुन में यह धरम अली री, या में समझि कहा चोरी ।
हीरा सखी हित मानि सिखि किन, प्रीति नई जिन दे तोरी ।

डफ धर दे यार गई पर की ॥
खेलत-खेलत देह पिरानी, और मलीन भई तरकी ।
सैन अनंग सकल सकुचानी, कुम्हलानी कमल कली सरकी ।
सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि, शरणागत राधावर की ।

खेलत- खेलत सबरी भींज गई तरकी ।।
हार सिंगार मेरो सबै भिजोयो, नक बसेर की मुर उरझी ।
ब्रज दूलह यह छैल अनोखो, बलिहारी राधावर की ।
सूरदास प्रभु है रस की छवि, होरी खेलै रंगीली गली की ।

रस लै रै रसिया फाग को ।।
अब तोहि नन्द के खबर परैगी, या होरी के अनुराग कौ ।
बाहर लोग चबाव करत हैं, या तेरी मेरी लाग को ।
दया सखी मोहन जब आवै, तब मानूँगी भाग को ।

हम चाकर राधारानी के ।।
ठाकुर श्रीनंदनंदन के, वृषभानुलली ठकुरानी के ।
निर्भय रहत वदत नहीं काहू, डर नहिं डरत भवानी के ।
हरिश्चन्द्र नित रहत दिवाने, सूरत अजब निवानी के ।

रस लै तो द्वार पर्‍यो रहियो ।।
जो तू रसिया रस को भूखो, मार धार सब की सहियो ।
जइयो ना कहुँ इन द्वारन ते, लली चरनन को सुख पइयो ।
पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखै, प्रेम सुधा कौ रस चखियो ।

मतवारी ग्वालिन अँचरा सँभार ।।
तब ही ते कछु अधिक भई है, धरत धरनि पर भार ।
तनसुख सारी गुजराती लहँगो, अरु अँगिया पर हार ।
कृष्णजीवन लच्छीराम के प्रभु प्यारे, छवि पर हो बलिहार ।

फगुना जाय मत रे होरी कौ खिलैया यार ॥

जो फागुना तू जयगो रे, मरूँगी जहर विष खाय ।
फगुना फूल गुलाब कौ रे, धूप लगे कुम्हलाय ।
रसिया कौ घर सामई, गोरी की लाल किवार ।
लचक-लचक गोरी जल भरे, मल-मल रसिया न्हाय ।

कैसी होरी बिरज में आय लगी ॥

कान्हा होरी को आयो मोर मुकुट धर, द्वार पै धूमस होन लगी ।
कोई एक गावै डफहि बजावै, मेरी छतियन धक-धक होन लगी ।
होरी में आग लगी न लगी, मेरे जियरा में नेह की आग लगी ।
होरी खेलन मैं तो बाहर आई, मेरे गाल गुलाल की मूठ लगी ।
मैं तो भाजी मोय पकरी और बोल्यो, मेरी तोते गोरी लगन लगी ।
कैसी होरी बरजोरी मैं तो खीझी जोराजोरी, मेरे हाथ पीताम्बर की फैंट लगी ।
पीत पट जो छुड़ायो संग घर घुस आयो, पैंया पर वाकी हा-हा होन लगी ।

फगुना जाय मत रे होरी कौ खिलैया यार ॥

फगुना आयो मेरे पाहुने, याको कहा लऊँ आदर भाव ।
काहे की पातर करूँ, कौन परोसन हार ।
हियरा की पातर करूँ, दोउ नैन परोसन हार ।
काहे को गूँजा करूँ, काहे को भरूँ कसार ।
गालन को गूँजा करूँ, होठन को भरूँ कसार ।
काहे को लड़ुआ करूँ, काहे की रांधूँ खीर ।
जोबन को लड़ुआ करूँ, रस की रांधूँ खीर ।
न्यौत जिमाऊँ बालमा, मेरी सगी ननदी कौ बीर ।

चली चल यों ही बके बजमारो ये तो होरी को छैल मतवारो ॥
जब ते लगी बसंत पंचमी, रोकत गैल गिरारो ।
एक दिना मोहे अंक भर लीनी, हँस-हँस घूँघट टारो ।
जो कहुँ होती सखी कोउ संग में, तो कछु देती सहारो ।
ऊबट बाट फँसी गहवर में, कैसे होय किनारो ।
तू भोरी छल बल नहिं जाने, है जोबन तेरो बारो ।
नागरिया जो तोय देखेगो, नेक टरेगो न टारो ॥

साँवरे मोहि रंग में बोरी ॥
बैंया पकर के मेरी गागर, छीन के सिर ते ढोरी ।
रंग में लालन रंगमगी कीनी, डारी गुलाल की झोरी ।
गावन लग्यो मुख ते होरी ॥
आज अचानक मिल्यो री डगर में, तब निरख्यो नन्द कौ री ।
भरि भुज लै मोहि ब्रजजीवन ने, पकरी करि बरजो री ।
माल मोतियन की तोरी ॥
मर्यादा मेरी कछु न राखी, कही इक बात ठगोरी ।
तब उनको मैं आँख दिखाई, मत जानों मोहि भोरी ।
जानूँ तेरे चित की चोरी ॥
मेरो जोर कछु नाय चाल्यो, कंचुकी की कस तोरी ।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलन को, रसिया ने रंग में बोरी ।
गई मैं नन्द की पौरी ॥

फिर गाई रस की सोई गारी ।
मदन बसीकर सिद्धमन्त्र-सी श्रवण परी धुनि आज हारी ॥
फेर ओट ढफ की करि चितई चितवनि प्रेम भरीई प्यारी ॥
हरीचंद हिय लगी चटपटी व्याकुल भई लाज की मारी ॥

ब्रज में हरि होरी मचाई ॥

इततें आईं कुँवरि राधिका, उतते कुँवर कन्हाई ।
हिलमिल फाग परस्पर खेलत, शोभा बरनी न जाई ।
नन्द घर बजत बधाई ॥
बाजत ताल मृदंग बांसुरी, बीन ढफ शहनाई ।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रह्यो सकल ब्रज छाई ।
मानो मघवा झर लाई ॥
लै-लै रंग कनक पिचकाई, सन्मुख सबै चलाई ।
डारत रंग अंग सब भीजे, झुकि-झुकि चाँचरि गाई ।
परस्पर लोग लुगाई ॥
राधे सैन दई सखियन को, झुण्ड-झुण्ड घिरि आईं ।
लपट-झपट लइ श्यामसुंदर सों,बरबस पकरि लै आईं ।
लाल को नाच नचाई ॥
छीन लई मुरली पीताम्बर, सिर चूनरी उढ़ाई ।
बेंदी भाल दृगन बिच अंजन, नक बेसर पहराई ।
मानों नई नारि बनाई ॥
मुसकत हौं मुख मोरि-मोरि कै, कहाँ गई चतुराई ।
कहाँ गये तेरे पिता नन्द जू, कहाँ यशोदा माई ।
तुम्हें अब लेहिं छुड़ाई ॥
फगुवा दिये बिन जान न पैहौ, कोटि करो चतुराई ।
लैहैं काढ़ि कसक सब दिन की, तुम चितचोर कन्हाई ।
बहुतै दधि माखन खाई ॥
कृष्ण रंग फगुवा जु भाँवतो, दैके बहुत रिझाई ।
श्यामा-श्याम युगल जोरी पै, सूरदास बलि जाई ।
प्रीति उर रही समाई ॥

होरी हो ब्रजराज दुलारे ॥
अब क्यों जाय छिपे जननी ढिंग, द्वै बापन के वारे ।
कै तो निकस के होरी खेलो, कै कहो मुख ते हारे ।
जोर कर आगे हमारे ॥
बहुत दिनन सों तुम मनमोहन, फाग हि फाग पुकारे ।
आज देखियो खेल फाग कौ, रंग की उड़त फुहारे ।
चले जहाँ कुमकुम न्यारे ॥
निपट अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरारे ।
नारायण अब खबर परेगी, नेक निकस आय द्वारे ।
सूरत अपनी दिखला रे ॥

कैसा है यह देश निगोरा, जग होरी ब्रज होरा ॥
मैं यमुना जल भरन जात ही, देख रूप मेरा गोरा ।
मोते कहै नेक चल कुंजन, तनक-तनक से छोरा ।
परे नैनन में डोरा ॥
मन मेरो हर्‌यो नन्द के ने सजनी, चलत लगावत चोरा ।
कहा बूढ़े कहा लोग लुगाई, एक ते एक ठिठोरा ।
न मान्यो एक निहोरा ॥
जियरा देख डरात री सजनी, आयो लाज सरम को ओरा ।
कहे रसखान सिखाय सखन को, सब मेरो अंग टटोरा ॥

छैल रंग डार गयो मेरी बीर ॥
भींज गयो मेरो अतलस रोटा, हरित कंचुकी चीर ।
डारै कुमकुम ताकि कुचन पै, ऐसो निपट बेपीर ।
ललित किशोरी कर बरजोरी, मलत गुलाल अबीर ।

करूँगी कपोलन लाल मेरी अंगिया न छूवो ॥
यह अंगिया नहिं धनुष जनक कौ, छुवत टूट्यो तत्काल।
नहिं अंगिया गौतम की नारी, छुवत उड़ी नन्दलाल।
कहा विलोकत भृकुटी कुटिल कर, नहिं ये पूतना ख्याल।
यह अंगिया काली मत समझो, जाय नाथ्यौ जाय पाताल।
गिरिवर धार भयो गिरिधारी, नहिं जानो ब्रजबाल।
जावो जी खेलो सखन के संग मिलि, गौवन के प्रतिपाल।
इतनी सुन मुसकाय साँवरे, लीनो अबीर गुलाल।
सूरदास प्रभु निरखि छिरकि अंग, सखियन कियो निहाल।

रसिया को मोहल्ला न्यारो री रसिया को ॥
ऊँचे पे नंदगाँव बसत है, जहाँ राजत वंशीवारो री।
बरसाने याकी भई है सगाई, यह राधा को घरवारो री।
बाबा वृषभानु को नगद जमाई, श्री दामा याको सारो री।
पुरुषोत्तम प्रभु कुँवर लाड़ले, यह यशोमति नन्द दुलारो री।

ननदी दरवाजे पर आय अड़ो याहे होरी को चसको।
हा-हा खाय खेल मेरे संग, अरी यह फागुन दिन दस को।
नजर बचाय अंक भरि लीन्ही, याने मिस कर उर मसको।
सूरदास यह तो रसिक शिरोमणि, अरी यह भोगी या रस को।

छैला मेरी गागर उतार ए जी लहजो दै चढ़ती ज्वानी को ॥
हम तो आये दूर ते हैं, कोई रंचक पानी प्याय।
हमरो पानी विष भर्‌यो है, पीवै सो मर जाय।
जो तेरो पानी विष भर्‌यो है, कैसे पीवै बलम भरतार।
छोरा हमरो तो घर को गारुड़ी है, पीवे लहर उतार।

चहुँदिसि नदियाँ रंग सों भरीं हो, डगर निकसन को नाय रही ॥

मैं दधि बेचन जात वृंदावन चखि, लेत गुपाल गलिन में दही ।
बरज रही बरज्यौ नहिं मानै, प्यारी ऐसो ढीठ यही ॥
कहत ग्वालिनी सुनि री यशोदा मै तो, बैयाँ पकरि के करूँगी सही ।
चन्द्रसखी के रसिक विहारी, मेरी हँसि-हँसि बाँह गही ॥

बरजो यशोदा जी कान्हा ॥

मैं जमुना जल भरन जात ही, मारग निकस्यो आना ।
बरजत ही मेरी गागर फोरी, ले अबीर मुसकाना ।
सखी सब दैहैं ताना ॥
मेरो लाल पलना में झूले, बालक है नादाना ।
ये क्या जाने रस की बतियाँ, क्या जाने खेल जहाँना ।
कहाँ तुम भूली ग्याना ॥
तुम साँची तुमरो सुत साँचो, हमहीं करत बहाना ।
सूरदास ब्रजवासिन त्यागे, ब्रज से अनत न जाना ।
करो अपना मनमाना ॥

रंग डारत नन्द को लाल ॥

ऐसो भयो सखि सुघर खिलारी, मारग रोक ठाड़ो बनवारी ।
देखो मेरी आली, ऐसौं निठुर वो बाल ।
मारत तान कनक पिचकारी, गेरत दृगन अबीर अपारी ।
मोसों करे बरजोरी, मलै मुख में गुलाल ।
परसै सकल अंग गिरधारी, वासुदेव मर्याद बिसारी ।
ब्रजवल्लभ सों हारी, सब ब्रज की बाल ।

आय गई री होरी खेलन हारी ॥

नारो झुब्बादार कमर में, लंहगा अंगिया चूनर सारी ।
ज्वानी छाय रही है यापै, फूल गुलाब से गालन वारी ।
रसिया भँवर बन्यो मँडरावै, बच रही है चम्पे की डारी ।
होरी में ये हाथ परी है, मारै भर-भर रंग पिचकारी ।

रस कूँ कूर कहा पहिचानै ॥

चढ़ गयी महल अटा भई ठाढ़ी, तक-तक गोंदा तानै ।
रसिया फूल बन्यो गेंदा को, जाय गुबरैटी में सानै ।
पुरुषोत्तम याय नीचे लै ले, तब मेरो मनुवा मानै ।

म्हारे होरी को त्यौहार ननदुल बैर परी ॥

होरी गावत धूम मचावत, एरी मोहन आये हैं हमारे द्वार ।
मोपै रह्यो नहिं जात मंदिर में, वाके सुन ढफ की धधकार ।
देख्यो मैं चाहत नंदनंदन को, एरी वो तो भेरत कुटिल किवांर ।
जा दिन ते गौने हम आई, वाको वाई दिन को व्यवहार ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, एरी मैं तो मिलिहौं गलभुज डार ।

लाल रसमातो खेलै होरी ॥

वो तो होरी के मिस आवै, मेरी गलियन धूम मचावै ।
करै बरजोरी ॥
वो तो केशर माँट ढुरावै, मो पै भर-भर लोटा ढारै ।
करे सराबोरी ॥
वो तो ठाढ़ो कदम की छैंया, मेरी पकर मरोरी गोरी बैयाँ ।
झटक लर तोरी ॥
वो तो चन्द्रसखी को प्यारो, जशुदा कौ राजदुलारो ।
मटुकिया फोरी ॥

मनमोहन री रिझवार एरी तेरे नैन सलोने ॥
तू अलबेली आन गाँव की, अब ही आई है गौने री।
मनमोहन तेरे द्वारे ठाढ़े, तू धसि बैठी है कोने री।
होरी के ढफ बाजन लागे, तू गहि बैठी मौने री।
दया सखी या ब्रज में बसके, नेम निभायो कौने री।

हो बिहारी सब रंग बोर दई ॥
सुई सी सारी कसूमल अंगिया, अब ही मोल लई।
देखेगी मेरी सास ननदिया, होरी खेलत नई।
चले जाव पिया कुंजबिहारी, जो कछु भई सो भई।

आज श्याम मग धूम मचाई, धूम मचाई करत ढिठाई।
बिन रंग डारे देत नहिं निकसन, मैं तेरी सों देखि कै आई।
तू कहूँ भूल कै मति उत जैयो, जाने कहा वह करे लंगराई।
नारायण होरी के दिनन में, अपने ही हाथ है अपनी बड़ाई।

चौंकि परी गोरी होरी में श्याम अचानक बाँह गही री ॥
सम्हरि छुड़ाय रिसाय चढ़ी भ्रू, अनषि अधर कछु बात कही री।
चितै-चितै हँसिकै बसिकै, कसिकै भुज में रस रास लही री।
श्रीकुंजलाल हित बाल जाल छवि, ख्याल रसालहिं देख रही री।

मनमोहन आवनहार होरी खेलूँगी ॥
उबटन मज्जन कर लियो सजनी, नव सत साज समार।
हाथन मेंहदी पांय महावर, कजरा लियो लगाय।
बेसर को मोती अति सुंदर, सोंधे बींधे बार।
भामर सो फिरबोई करत है, यह तेरो रिझवार।
दया सखी घनश्याम लाल कौ, करि राख्यो हियहार।

राधावर खेलत होरी ॥

नंदगाँव के ग्वाल इतै-उत, बरसाने की गोरी ।
डफ करताल बजावत गावत, केसर कुमकुम घोरी ।
परस्पर रंग में बोरी ॥
गावत गारी गँवार मनो, नव नागरि जोबन जोरी ।
नन्द को लाल बड़ो रसिया है, हम ते करत कछु जोरी ।
फागुन में कौन की जोरी ॥
दसहु दिस में गुलाल घुमड़ रह्यो, काहू न लख न पर्‍यो री ।
औचक धाय चली चन्द्रावलि, ललितादिक सब दोरी ।
गह्यो कुँवर बरजोरी ॥
मोर मुकुट वनमाल मुरलिका, पीताम्बर लियो छोरी ।
भामिनि वेष बनाय कहत हैं, नंदराय की छोरी ।
बनी छवि काम करोरी ॥
दे दे तारी नचावत ग्वालिन, अपनी-अपनी ओरी ।
वा दिन की सुधि भूले लल्ला, यमुना तट चीर हरो री ।
आज सखी दाव परो री ॥
कृष्ण रंग फगुवा जो भामतो, देकर बहुत निहोरी ।
ह्वै अधीन वृषभानु सुता के, बिनती करे करजोरी ।
देउ अपनों कर छोरी ॥

फाग लगौ जब ते मोरी आली बाँके सामलिया ने धूम मचाई ॥

अटकत निडर नन्द को नटखट, लोक लाज कुल कान गँवाई ।
बैयाँ मृदुल पकरि झक झोरत, माँगत दान जोबन मुसकाई ।
खेंचि दुकूल मलत मुख रोरी, होरी के मिस अंक लगाई ।
पैज परी उत वासुदेव सों, सास ननद इत करत लराई ।

अरे हेला वे डफ बाजें पियारी के, वा श्री वृषभानुदुलारी के,
कीरतिजा रूप उजारी के, धुनि सुनि उर चौंप बढ़ी भारी ॥
रंग रंगीली अलीं संग लिये फूलि रही छबि फुलबारी ।
अरे हेला छाइ रह्यौ अनुराग रंग गावैं मैंन मद सनी रुचिर मारी ।
दया सखी घनश्याम लाल कह्यौ (नर्म सखन सो) चलो जाइ देखैं
(अपने) प्राणन की निज है जियारी।

छैला ये आज रंग में बोरो री एरी सखी लाग्यौ हमारो दाँव ॥
फेंट पकर याके गुलचा मारो, पैयाँ परै तब छोरो ।
हरे बाँस की बाँसुरिया याकी, लैके तोर मरोरो ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, याही ते यारी जोरो ।

रंग बरसै रे गुलाल बरसै, राधारानी हमारी पै रंग बरसै ॥
रंग बरसै रे गुलाल बरसै, मोहन प्यारे हमारे पै रंग बरसै ॥
(अरी रंग बरसै कहुं दामिनी बरसै, और बरसै कस्तूरी)

होरी खेलन दै मेरी बीर वीर मेरी ननदी ॥
ढफ मुरली ऊधम सुन मेरो, जियरा धरे न धीर ।
जान दीजिये यह रस लीजै, मेरी नेक करो न पीर ।
किशोरीदास ब्रजचन्द्र बिहारी, सुख बिहरत जमुना तीर ।

छैला ये आज रंग में बोरो री एरी सखी लग्यौ हमारो दाव ॥
केशर घोर याके अंग लगावौ, कारे ते करो गोरो ।
जिनहिं भुज गिरिराज उठायौ, तिन भुज पकरि मरोरौ ।
आनंद घन याहे पकरि नचावौ, हा-हा खाय तो छोरौ ।

तेरी होरी खेलन में टोना मैं तो नई आई श्याम सलोना ।
तैने कैसो खेल रचायो, मानो दुलहा ब्याहन आयो ।
जो खेलै सो होय बराती, यहीं ब्याह यहाँ गौना ।
चौबा चन्दन अतर अरगजा, लिये अबीर भर दोना ।
काहे बैठी है ओट मुड़ेली, मैं तो नई-नई नार नवेली ।
अब तुम हमसों खेलो होरी, फिकर काहू की करो ना ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, होनी होय सो होना ।

होरी में गोरी मेरे लग जाएगी मत मारै नैन कटार ॥
भले ही रंग तू डार लै, पर घूँघट नेक उघार ।
प्रेम सों होरी खेल लै अरी, सुन अलबेली नार ।
हियरा को घायल करै तेरे, बिछुवन की झनकार ।
हिल-मिल होरी खेल ले, आज कर मोहन सों प्यार ।
ब्रज कौ राजा साँवरो कोई, रानी राधे कुमार ।
फेंटन झोरी गुलाल ह्वै, ह्वाँ मच रह्यो धूँआधार ।
फगुवा लेउ मन भाँवतो, तुम सगरी ब्रज की नार ।
मोहन फगुवा बाँटते, कोइ कृष्णदास बलिहार ।

पानीरा भरन कैसे जाऊँ मेरे राम पनघट पै ठाढ़े श्याम ॥
सज मतवारो साँवरो रे, रसवादी है याको सबरो गाम ।
गावैं बजावैं प्रेम सों रे, मुरली में लै-लै मेरो नाम ।
राह रोक ठाढ़ो भयो रे, मारग में निरखै मेरी जाँघ ।
जुगल रूप छवि छैल की रे, मन अटक्यो है सागर के माँझ ।

अरी नाय मानै रे नाय मानै रे,
अनोखो छैल लंगर नाय मानै रे ॥
मेरे पिछवारे ते आवै रे, अरी मोय दै-दै सैन बुलावै रे ।
मेरे अगवारे ते आवै रे, अरी मेरे अँगना धूम मचावै रे ।
मोय औचक नींद न आवै रे, अरी सुपने में आय जगावै रे ।
होरी खेलन के मिस आवै रे, अरी वो भर-भर गड़ुवा ढारै रे ।
मैं कैसे करूँ कित जैये रे, अरी रस सागर बीच लुभैये रे ।

मदमातो फागुन जाए तनक गोरी रसिया सों बतराय लीजौ ॥
यह जोबन दिन चार को है, दो-दो नैना ते नैना लड़ाय लीजौ ।
सास ननद को डर मत करियो, घूँघट में बतराय लीजौ ।
रसिया कौ रस भर्यो ही डोलै, छतियाँ सौ लिपटाय लीजौ ।
फगुना में केला लै आयो, चुपचाप अँधेरे में खाय लीजौ ।
कृष्णजीवन लच्छीराम के प्रभु सों, तन की तपन बुझाय लीजौ ।

इक चंचल नारी अटा चढ़के मेरे मारी दुबारा धर के ॥
काहे की याने चोट चलाई, काहे को बल करके ।
नयन बान की चोट चलाई, जोबन को बल करके ।
काहे को याने कोप कर्यो है, काहे को मन करके ।
प्रम रूप को कोप कियो है, मिलवे को मन करके ।
चन्द्रसखी कौ नेह जुर्यो है, श्यामसुंदर सों अरके ।

डफ बाजे हैं राधारानी के ।
श्यामसुन्दर की प्राण-पोषिका, सुख बर्द्धनि सुखदानी के ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रमनी रूप गुमानी के ।
वृन्दावन हित रूप स्वामिनी, वृन्दावन रजधानी के ॥

स्याबास रंग में बोरी अंगिया गरक रही ॥
चोबा चन्दन अतर अरगजा, केसर गागर घोरी ।
लै पिचकारी सन्मुख मारी, भींज गई सब चोली ।
छतियाँ हाथ लगावत धरकी, चुरिया मेरी करकी ।
सास बुरी घर ननद हठीली, देखैं सखी बगर की ।
लै रोरी गोरी मुख माँड़्यो, होरी नये बगर की ।
लाल जाऊँ बलिहार तिहारी, बात बनी घर-घर की ।

गोरे अंग गुवालिनी गोकुल गाम की ॥
लहर-लहर जोबना करै हो, थहर-थहर करै देह ।
छतियाँ धुकर-पुकर करै, बाको नयो रसिक सों नेह ।
कुबरा कौ पानी भरै, गोरी नवि-नवि लेजू लेय ।
घूँघट दाबै दांत सों ये, गर्व न उत्तर देय ।
पहरे नौतन चूनरी, लावन लई सकोरि ।
अरग थरग सिर गागर, वह चितै चली मुख मोरि ।
चाल चलै गज हंस की, ऊँची नीची दीठि ।
ओढ़न के मिस मुरक के, नेक हरि ही दिखावै पीठि ।
ठमकि चलै मुरि-मुरि हँसै, गोपी फिर-फिर ठाढ़ी होय ।
घायल-सी घुमत फिरै, याको मर्म न जानै कोय ।
तिलक बन्यौ अंगिया बनी, वाकी पायल की झनकार ।
बड़े बगर ते नीकसी, ह्वां श्याम खरे दरबार ।

ये कैसो ऊधम गार याको पीतांबर छोरौ री ॥
आज हमारो दाव बन्यो है, देखो कैसो आज सज्यो है ।
ठकुराई लेओ निकार याको रंगन में बोरो री ॥
सब मिल पकरी नन्द को लाला, मगन भई सब ब्रज की बाला ।
हँस देवे गुलचा मार राख्यो हरि करि कै चेरो री ॥

हम आईं बरसाने वारी निकस छैल नन्दगैंयाँ रे ॥
ऊबट बाट नचायो बहुत दिन, अब क्यों नार नवैयाँ रे ।
कै तो निकस के होरी खेलो, कै परो प्यारी जू के पैंयाँ रे ।
यह कह नागर घेर लई सब, अबीर गुलाल उड़ैंयाँ रे ।

गोविन्द यदुबीर मेरे मन बस्यो है गोविंदा ॥
वृंदाविपिन सुहावनो, कोंहके जहँ मोर ।
कोयल बोले शब्द भरी, सुन नन्द किशोर ।
साँवरो धेनु चरावे, यमुना के तीर ।
मुख ते वेणु बजावे, हलधर यदुवीर ।
आपन बैठ कदम पै, ग्वाला दिये हैं सिखाय ।
दोनाई दोना लै गये, दधि दई है लुटाय ।
राधे अटरिया चढ़ गई, खिरकिन दे ओट ।
साँवरे हाथ मुरलिया, सब दल की ओट ।

रंगरेज गमार अंगिया रंग नाय जानै ॥
याही अंगिया कु ही लिख दै, याही में लिख दै बाज ।
याही में मोरा लिख दै, कोंहके दिन रात ॥
याही अंगिया में कुआ लिख दे, याही में लिख दे बाग ।
याही में माली लिख दे, सींचे दिन रात ॥
याही अंगिया में पलंग लिख दे, याही में लिख दे मोय ।
याही में बलमा लिख दै, जब ढोरुँगी ब्यार ।
याही अंगिया चौपर लिख दै, याही में लिख दे गोर ।
याही में कांसे लिख दै, खेलैं दिन रात ॥

इक चंचल देखी हो प्यारे मार गई सैनन में ॥
स्यालू सरस रेसमी लहँगा, हीरा लगे लामिन में ।
शीशफूल माथे पै बेंदा, सुरमा लगे आँखिन में ।
गोरे हाथ रचाय लई मेंहदी, बरहा परे हाथन में ।
हार हमेल गुदी खँगवारो, डूब रही सब धन में ।
वन के से टेंट कदम के से ढोटा, फूल रही जोबन में ।
गजनिन मार गई सैनन में ॥

जान दे रे तेरे पांय परत हौं रे कन्हैया ॥
टूट गये हार छूट गये अँचरा, भींजि गई अंगिया रे दैया ।
या मग मोहि न कर बरजोरी, हैं गोकुल के लोग चबैया ।
नागरिया धनि रीत तिहारी, धनि यह खेल धनि तुम खिलवैया ।

मदन मोहन की यार भोरी गूजरी ॥
मदन मोहन याको भोरो भारो, गूजर असल छिनार ।
लहँगा याको घूम घुमारो, चूनर बूँटेदार ।
मदनमोहन बिन और न भावै, वो याकी रिझवार ।

मत रोके मेरी गैल लड़कवा जान दै ॥
अब कोई कैसे निकसैंगीं, नित ही मारग रोकै ।
या ब्रज में बस ढीठ भये हो, माँगत दान दही कौ ।
जाय कहूँ जसुमति के आगे, तेरो कान्ह लड़ेरो ।

लटकाय आई केस भँमर कारे ॥
कौन पै पहरी तैनें हरी-हरी चुरियाँ, कौन पै किये है नैन कारे ॥
श्याम पै पहरी तैनैं हरी-हरी चुरियाँ, रसिया पै किये है नैन कारे ॥

देखूँ तेरो हाथ दरद कैसो ॥
तू गोरी जोबन मदमाती, दरद नांय ऐसो वेसो ।
नस-नस को मैं दरद निकासूँ, मैं नाय वैद ऐसो वेसो ।
दया सखी फागुन के महीना, वैद मिलो मन को जैसो ।

रंग में रंग दई बाँह पकर के लाजन मर गई होरी में ॥
इकली भाज दई होरी में हुरमत लाज गई होरी में ।
चटक दार चोली में सरवट पर गई होरी में ।
चूनर रंग बोरी होरी में पिचकारी मारी होरी में ।
ह्वै के श्याम निशंक अंक भुज भर लई होरी में ।
गाल गुलाल मल्यो होरी में मोतिन लर तोरी होरी में ।
लोक लाज खूंटी पै कान्हा धर दइ होरी में ।
बरजोरी कीन्ही होरी में ऐसी बुरी भई होरी में ।
घासी राम पीर सब तन की हर लइ होरी में ।

होरी खेलन आयो श्याम आज याहे रंग में बोरो री ॥
कोरे-कोरे कलश मँगावो, वामे केशर घोरो री ।
लोक लाज कुल की मर्यादा, फागुन में तोरो री ।
मुख ते केशर मलो करो, कारे ते गोरो री ।
हाथ जोर के करे बीनती, याकी तनियाँ तोरो री ।
सब सखियाँ जुर मिलके, याकूँ मग में घेरो री ।
रतन जटित पिचकारी, याके सन्मुख छोरो री ।
हरे बांस की बांसुरिया, याहि तोर मरोरो री ।
चन्द्रसखी यों कहे आज, बन आयो भोरो री ।

मैं तो सोय रही सपने में मोपै रंग डार्यो नन्दलाल ॥
सपने में श्याम मेरे घर आये, ग्वालबाल कोउ संग ना लाये।
टटोरन लाग्यो मेरे अंग, पौढ़ पलका पै मेरे संग ।
करन लाग्यो जोबन सों जंग, पिचकई मारी भर-भर रंग।
पिचकारी के लगत ही, मो मन उठी तरंग ।
मानो मिसरी कंद की, घोंट पी लई भंग ।
घोंट पी लई भंग गाल कर दिये गुलालन लाल ॥
हँसि-हँसि के मोहि कंठ लगाई, मानो कुछ मोय दौलत पाई।
खुले सपने में मेरे भाग, मनों मेरी गई तपस्या जाग ।
हँस खूब मनाय रही फाग, रसीली जुरी हमारी लाग ।
हँस-हँस फाग मनाय रही, चरण पलोटत जाय ।
धन्य-धन्य या रहन कूँ, फिर ऐसी नाय पाय ।
फिर ऐसी नाय पाय भई सपने में मालामाल ॥
इतने में खुल गये मेरे नयना, देखूँ तो कछु लेन न देना।
परी पलका पै मैं पछतात, मैं दोनों मलती रह गई हाथ।
जो सपनो देख्यो मैंने रात, अधूरी रह गई मन की बात।
मन की मन में रह गई, हौन लग्यो परभात ।
बजत गजर के फजर ही, तीन ढाक के पात ।
तीन ढाक के पात रही कंगालन की कंगाल ॥

छैला मेरी जोट मिलाय लीजो ॥
जो रसिया मोय गुट्टी जानो, फीता ते नपवाय लीजो ।
जो रसिया मोय हलकी जानो, काँटे पै तुलवाय लीजो ।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण को, मन की हौंस बुझाय लीजो।

कैसे जाय छुप्यो कोने में मेरी चोली पै रंग डार।
बहुत दिनन ते तुम मनमोहन, फाग ही फाग पुकार।
आज देखियो खेल फाग को, रंग की उड़त फुहार।
बहुत अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरार।
आज नन्द के खबर परैगी, झोरी भरी गुलाल।
बाजे सभी बजाओ सजनी, ढफ मृदंग करताल।
माधुर-माधुर बंसी बाजे, मुहचंग और सितार।
नारायण न बहुत इतराओ, आवो भवन के द्वार।
बहुत ही नाच नचायो हमको, तुम चित चोर मुरार।

अरी वह नन्द महर को छोहरा बरज्यो नहिं माने ॥
प्रेम लपेटी अटपटी और, मोहि सुनावे दोहरा।
कैसे के जाऊँ दुहावन गैया, आय अघोरे गोहरा।
नख शिख रंग बोरे और तोरे, मेरे गरे को डोरा।
गारी दे दे भाव जनावै, और उपजावे मोहरा।
गोविन्द प्रभु बलबीर बिहारी, प्यारी राधा को पति मनोहरा।

होरी तोते न खेलूँ श्याम रसिया ॥
घूँघट में पिचकारी मारे बेंदी की चटक बिगारै रसिया।
नैनन में पिचकारी मारे कजरा की रेख बिगारै रसिया।
होठन में पिचकारी मारै नथली की गूंज बिगारै रसिया।
छातियन में पिचकारी मारै चोली की चटक बिगारै रसिया।
घुटुमन में पिचकारी मारै लंहगा की घूम बिगारै रसिया।

सगरी रात श्याम सों खेलूँ चन्दा छिप मत जैयो रे ॥
फागुन कौ अवसर मनमानो, होरी को है खेल सुहानो ।
अलबेलो साजन मस्तानो ।
अरे नन्द के छैल आज कहुँ, भाज न जैयो रे ॥
चोट दऊँगी मैं भी ऐसो, भूल जायगो ऐसो वेसो ।
बन के डोले छैला कैसो ।
पतरी सी मत जानै छलिया, भज मत जैयो रे ॥
अड़के होरी मैं खेलूँगी, लठिया मार ढाल तोरुँगी ।
गुलचन गाल लाल कर दूँगी ।
गली साँकरी छेड़-छाड़ को फल तू पैयो रे ॥

आज खेलूँगी तुझसे होरी तैने चूनर भिगोई है मेरी ॥
तू है नंदगाँव का ग्वाला, मैं हूँ बरसाने की छोरी ।
तू है नामी लुटेरा माखन का, आज मरजादा मैंने भी तोरी ।
रोका रस्ते को साँकरी खोरी, आज तुझको बनाऊँगी गोरी ।
तेरी आँखों में लगाऊँ सुरमा, रेख कजरा बनाऊँगी थोरी ।
खोल पीताम्बर अपनी कमर से, लँहगा पहनाऊँगी कसके डोरी ।
बातों ही बातों में पकड़ जो लिया, सिर पै रंग की है गागर ढोरी ।
लाल की पाग रंग में है बोरी, है उड़ाई गुलाल की झो़री ।

फाग खेलन कैसे जाऊँ सखी री हरि हाथन पिचकारी रहत है ॥
सबकी चुनरिया कुसुम रंग बोरी, मेरी चुनरिया गुलनारी रहत है ।
कोई सखी गावत कोई बजावत, हमको तो सुरत तिहारी रहत है ।
कहत है कासिम अपनी सखी सों, सैंया की सुरत मतवारी रहत है ।

आँखों में रंग डार पिया कहाँ जायेगा।
पकड़ी मैंने फेंट भाग नहीं पायेगा॥
बहुत दिनों तक चोरी करके, माखन खाया नीयत भरके।
भरे हैं पोट गुलाल मार तू खायेगा॥
टेढ़ी चाल छुड़ाऊँगी मैं, सीधा आज बनाऊँगी मैं।
दूँगी गुलचा गाल मजा तब आयेगा॥
कहाँ गये तेरे सब ग्वाला, करते सब माखन का घुटाला।
तुमको दूँगी बाँध न कोई छुड़ाएगा॥

काजर वारी गोरी ग्वार, या साँवरिया की लगवारि॥
निसिदिन रहत प्रेम रंग भीनी, हरि रसिया सों याने यारी कीनी।
मदन गोपाल जानि रिझवार, नाना विधि के करे सिंगार॥१॥
मिलन काज रहे अंग अगोछे, सरस सुगंधनि तेल तिलौछें।
अंजन नाहिं भटू यह दीये, स्याम रंग नैनन में लियें॥२॥
गायन को यशुमति गृह आवें, कृष्ण चरित्रहिं गाय सुनावें।
सुंदर श्याम सुनें ढिंग आय, चितवत ही चितवत रहि जाय॥३॥
रामराय प्रभु यों समुझावें, भगवान तू नीके गुन गावें।
लखि घनश्याम कियौ निरधार, यह लगवारिन वह लगवार॥४॥

होरी में कैसे बचेगो ये जोबन तेरो॥
जो कहूँ दृष्टि परैगी श्याम की, संग लै तोय नचैगो।
अब की फागुन तेरेई बगर में, होरी रंग मचेगो।
छैल बड़े छल चितवन चोरे, नैनन बीच डसेगो।
गोकुल कृष्ण की लगन यही है, तेरे ही भवन बसेगो।

श्याम के मैं अंक लगूँगी कलंक लगै तो लगौ री ॥
अंक लगे बिन पल-छिन न रहूँगी, सिर पर तोप दगे तो दगो री।
लाज तजूँ ग्रह-काज तजूँगी, घर सास लड़े तो लड़े री ।
रसिक प्रीतम गुरुजन सिर ऊपर, धार परै तो परो री ।

बहुत बड़े हैं उत्पात नन्दलाल के,
भाज गयो श्याम मोपे आज रंग डार के ॥
परसों की बात कहूँ, सुनो नन्द रानी ।
मैं तो गई थी भरवै, जमुना को पानी ।
चारों तरफ से घेर्यो संग ग्वाल बाल के ॥१॥
पकर जो पाऊँ वाको, ऐसो मैं हाल करूँ ।
दे दे गुलचा वाके, दोउ गाल लाल करूँ ।
मोसों बरजोरी करे बीच ब्रजबाल के ॥२॥
और एक बात कहूँ, सुनो मेरी मैया ।
पाय अकेली श्याम, लागे मेरी पैयाँ ।
कहत न आवै याके घात हैं कुचाल के ॥३॥
एक दिना मिल्यो, साँकरी गली में ।
बरबस लै गयो, गह्वर वन में ।
झटक-झटक तोरी लरी मोती माल के ॥४॥

हेली ये डफ बाजै छैला के, मनमोहन रसिया नागर के ।
वा जुलमी औगुन गारे के, धुनि सुनि जिय अति अकुलाय गई ॥
कहा कीजैरी आवत उमगि हियो निधि ज्यों अब कापै रोक्यौ जाइ दइ।
उर गुरु जन की लाज दहति उर धरि नहिं सकिये देहरी पाइ।
दया सखी अब होइ सु हूजौ मिलों घनश्यामहि धाइ ।

जुग-जुग जियो होरी खेलन हारी ॥
एसो आशीष फले रसिया को, हू जो पामन भारी ।
नोमे महीना तोपे छोरा होगो, धरियो नाम हजारी ।
या गोरी पे दो दो हू जो, एक मुकदम एक पटवारी ।
जो रसिया मोपे छोरा होयगो, दउँगी पात तिहारी ।
पूरी ऊपर बूरो दूँगी, और आलू की तरकारी ।
ये होरी रहे अजर अमर, गोरी रसिया पे बलिहारी ।

छैला मन बस में करैगी ॥
लै लै लाल गुलाल मलेंगे, गोल कपोल सहैगी ।
तक तक तेरे उंचे कुचन पर, कुमकुम मार मचैगी ।
मौज सब तन की लुटैगी ॥
तो चूनरि औ पीताम्बर की, पिय संग गांठ जुरैगी ।
नागरीदास बीच सखियन के, मोहन संग नचैगी ।
स्वाद रस को समझेगी ॥

री ठाड़ो नंददुलारो जाही पै डारयो क्यों न रंग ॥
गिरि को उठाय भये गिरिधारी, इंद्र मान कियो भंग ।
री यह ब्रज रखवारो जाही पै डारयो क्यों न रंग ॥
गौतम नारी अहल्या तारी, कुब्जा को कियो संग ।
री प्रहलाद उबारो जाही पै डार्‍यो क्यों न रंग ॥
द्रुपद सुता को चीर अक्षय कियो उघरन न दियो अंग ।
री यह द्वारका वारो जाही पै डार्‍यो क्यों न रंग ॥
पुरुषोतम प्रभु की छवि निरखै केसर घोरो रंग ।
री मनमोहन प्यारो जाही पै डार्‍यो क्यों न रंग ॥

रंग बिन कैसे होरी खेलै री या साँवरिया के संग ।
कोरे-कोरे कलस मँगाये, विन में घोरो रंग ।
भर पिचकारी संमुख मारी, मेरी चोली है गई तंग कोरे ॥
ढोलक झांझ मजीरा बाजै, सारंगी मृदंग ।
सांवरिया की बंसी बाजै, राधा जू के संग ॥
लंहगा रंग मेरी चूनर रंग दइ, रंग दियो सारो अंग ।
श्याम सुंदर की कारी कामर, चढ़े न दूजो रंग ॥
राधे सब सखियन सों बोली, घोर लेवो बहु रंग ।
देखैं कैसे साँवरिया पै, चढ़े न दूजो रंग ॥
भरि पिचकारी श्याम पै मारी, चढ़्यो न कोई रंग ।
मोहन ब्रज गोपिन सों बोले, रंग भयो बदरंग ॥

होरी न खेलूँ तोते रसिया ॥
तन को कारो मन कों कारो, घूँघट कैसे खोलूँ ।
बहियाँ पकर कुञ्ज लै जावै, तेरे संग न चलूँ ।
होरी मिस यारी जोरै, मन को भेद न खोलूँ ।

जब सों धोखो दै के गयो श्याम संग नांय खेली होरी ॥
मथुरा जनम लियो हरिराई, गोकुल जाय चराई गाई,
लूट-लूट दधि खाय करी याने माखन की चोरी ।
ऊधो जी तुमकूँ समझाऊँ, एक दिना की बात बताऊँ,
जमुना न्हायवे गई घेर लई गोपन की छोरी ।
अब तो निठुर भये बनवारी, गोपिन की सुध नाय सँवारी,
कुब्जा के संग रमे छोड़ दई राधा-सी गोरी ।

या ब्रज में कैसी धूम मचाई ।।
इतते आई कुँवरि राधिका, उतते कुँवर कन्हाई ।
खेलत फाग परस्पर हिलमिल, यह छवि बरनी न जाई ।
बाजत ताल मृदंग झांज ढफ, मंजीरा शहनाई ।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर कीच मचाई ।
पकरो री पकरो श्याम सुंदर को, यह अब जान न पाई ।
छीन लेओ मुरली पीताम्बर, सिर पर चूनर उड़ाई ।
बेंदी भाल नयन बिच कजरा, नख बेसर पहराई ।
कहाँ गये तेरे पिता नन्द जू, कहाँ गई यशुमति माई ।
कहाँ गये तेरे सखा संग के, कहाँ गये बलदाई ।
धन गोकुल धनि-धनि वृन्दावन, धन यमुना यदुराई ।
राधा-कृष्ण युगल जोरी पर, नंददास बलि जाई ।

श्यामा श्याम सों होरी खेलत आज नई ।।
नंदनंदन को राधे कीनो माधव आप भई,
सखा सखी भये सखी सखा भये जसुमति भवन गई ।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ नाचत थेई-थेई,
गोरे श्याम सांवरी राधे यह मूरति चितई ।
पलटयो रूप देख जसुमति की सुध बुध बिसर गई,
सूर श्याम को बदन विलोकत उघर गई कलई ।

जानी-जानी तेरी लगन लगी है ।।
मौहे सोंह है नन्द के घर की मोहन रंग रंगी है ।
नैन उनींदे लगत सोहने सबरी रात जगी है ।
यह प्रताप होरी को गोरी कुल की कानि भगी है ।

कन्हैया रंग तोपै डारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ।।
पहली पिचकारी तेरे माथे मारै,
बिंदिया की सुरंग बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ।
दूजी पिचकारी तेरे अँखियन मारै,
कजरा की रेख बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ।
तीजी पिचकारी तेरे मुख पै मारै,
नथली की गूंज बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ।
चोथी पिचकारी तेरे छतियन मारै,
चोली की चटक बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ।
पांची पिचकारी तेरे पायन मारै,
लंहगा कौ घूम बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ।
छटी पिचकारी तेरे पायन मारै,
बिछुवन कौ घोर बिगारैगो सखि घूँघट काहे खोलै ।
साती पिचकारी तेरे सबरांई मारै,
जोबन कौ फूल बिगारैगो सखि घूंघट काहे खोलै ।

कान्हा ते कैसे खेलूँगी मैं होरी ।।
सबरे ब्रज में धूम मचाई लै मेरो नाम बकै होरी ।
नई-नई मैं आयी नवेली कबहुं न खेली ब्रज होरी ।
होरी के हुरियारे छैला जान न देवै कोई गोरी ।
कैसे बचेगी या होरी में पीहर की चूनर कोरी ।
पोटन भरे गुलाल छैल सब लै लै माटन रंग घोरी ।
ऐसी होरी जरे निगोरी बाहर भीतर रंग बोरी ।
होरी में बरजोरी करके सबकी लाज मटकी फोरी ।
रसियन के छल बल नहिं जानूँ दांव पेच में मैं भोरी ।

कान्हा पिचकारी मत मारै चूनर रंग बिरंगी होय ।
चूनर नई हमारी प्यारे हे मनमोहन वंशी वारे ।
इतनी सुन लै नन्द दुलारे ॥
पूछेगी वो सास हमारी कहाँ ते लई भिजोय ॥१॥
सबको ढंग भयो मतवारौ, दुःख दायी है फागुन वारो,
कुलवंतिन कौ औगुन गारौ ।
मारग मेरौ अब मत रोकै मैं समझाऊँ तोय ॥२॥
बहु विधि विनय करै सुकुमारी, आड़े ठाड़े हैं गिरिधारी,
बोले मीठे वचन बिहारी ।
होरी खेल अरी मन भाई फागुन के दिन दोय ॥३॥
छांड दई रंग की पिचकारी, हँस-हँस के रसिया बनवारी,
भीज गई सबरी ब्रजनारी,
ग्वालिन ने हरि को पीताम्बर छोर्‌यो मद में खोय ॥४॥

पकरो-पकरो होरी खेलन ते नंदलाला भाग्यो जाय ॥
पहले याने चोट चलाई, तान दई भर के पिचकारी,
भर के फेंट गुलाल उड़ाई,
अब भाग्यो है पीछो करके याको लेओ घिराय ॥१॥
बड़ो खिलार बन्यो नन्दगैंयां, नित-नित ऊधम नित लंगरैयां,
छोड़ो मत चाहे परे ये पैंयां,
छल बलिया है बहुत दिना ते हाथ परयो है आय ॥२॥
सब मिल पकर लई गिरिधारी जुर आई सब ब्रज की नारी,
बंसी छीन लई है प्यारी,
बंसी रही बजाय राधिका सब मिल श्याम नचाय ॥३॥

गोरी चूनर कुसुम रंगाय लै री ।।
अंगिया लाल कसुमी लंहगा काजर नैन लगाय लै री ।
सीस फूल बेंदी माथे पै चोटी फूल गुंथाय लै री ।
गोरे गालन झुमका बेसर मोती नाक सजाय लै री ।
हाथन कंगन और आरसी चूरी हाथ चढ़ाय लै री ।
तोसी न नागरी मोसों न रसिया जिय की हौस मिटाय लै री ।
पांय पकरि तेरी वीनती करत हौं हंस के अंक लगाय लै री ।

ढफ धरि दै यार गई पर की ।।
खेलत फाग थकित भई ग्वालिन मेंहदी मलिन भई करकी ।
क्षेत्र छोडि भाग्यो है रति पति मुरकी अनी कुसुम शर की ।
पुरुषोतम या होरी खेल में जीत भई राधावर की ।

होरी खेल न जाने रे कन्हैया मेरी चूनर भीजैगी दैया ।
अबही मोल लइ मनमोहन सास लरै घर सैंया ।
नगर चबाव करै नरनारी तेरे परूँ मैं पैंया ।
ब्रजदुलह होरी खेलि न जानै बहुत करै लरकैंया ।

बसंती रंग में बोर दै रे । चुनरिया मेरे छोरा रंगरेजवा ।।
मेरी चुनरिया मेरे पिया की पगरिया एकइ रंग में झकोरि दै रे ।
अब के फागुन मेरे पिया घर आवै सौतिन कौ मुख मोरि दै रे ।
विष्णुदास मुंह मांगे दाम लै औ चरण कमल चित चोरि दै रे ।

मतले मेरी लाज दुपैरी में ।
आस पास कोई घर नाहीं मै हूँ अकेली हवेली में ।।१।।
जाय पुकारूँ राजा कंसके आगे मेरौ तेरौ न्याव कचैरी में ।।
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखै तू छैला अलबेली मैं ।।२।।

आज मोहि नटवा की होरी खिलाई नट नागर के मन भाई
इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीच में जमुना बहाई ॥
भरि पिचकारी सन्मुख मारी नेक लाज नाय आई ॥१॥
मैं जमुना जल भरन जात ही मारग रोक्यो है आई
सिर पै ते मेरी गगरी पटकी बैयाँ पकरि घुमाई ॥२॥
वंशी वट पर वंशी बजाई लै लै नाम बुलाई
वृन्दावन में रास रच्यो है दै दै तारि नचाई ॥३॥
पिचकारिन कौ बांस गाढ़ि कै तापै मोय चढाई
ब्रजनिधि रसिया मानत नाहीं सौर कला खवाई ॥४॥

मैं दधि बेचन जात वृन्दावन चखी लेत गुपाल गलिन में दही ॥
बरज चहुँ दिसि नदिया रंग सों भरी हो, डगर निकसन कों नाय रही,
बरज्यो नहिं मानै प्यारी ऐसो ढीठ यही ।
कहत ग्वालिनी सुनि री जसोदा, मैं तो बैंया पकरि के करूँगी सही,
चन्द्रसखी के रसिक बिहारी मेरी हँसि-हँसि बाँह गही ।

तेरी होरी खेलन में टोना मैं तो नई आई श्याम सलोना ॥
कर मेरो पकरि करैया मोरी या होरी में कछु होना ।
रात-रात भर होरी गावै नाचै मटक हँसौ ना ।
चन्द्रसखी फागुन के महीना नाय मानै नंदजू कौ छौना ।

तेरो गोरो बदन और जुबना नयौ होरी में कैसे बचैगो ॥
एक डर लागत है वा दिन को जा दिन रंग रचैगो ।
चोवा चन्दन अतर अरगजा तोपे अबीर गुलाल परैगो ।
कहत ग्वालिन सुनि री सहेली तेरे अंगना में श्याम नचैगो ।

मेरे नैनन में डारयो है गुलाल सजनी,
मलत-मलत हुई अँखियाँ लाल ।।
मचि रह्यो फागु भानु पौरी पै खेलत मदन गुपाल ।
चोवा चन्दन अतर अरगजा छिरकत पिया नन्दलाल ।
ग्वालबाल सब सखा संग लै घेरी लई ब्रजबाल ।
अबीर गुलाल फैंट भरि लीने तकि मारे करि ख्याल ।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि चिरजीवो दोउ लाल ।

मोहन मुदरी लै गयो री मेरी आछी ननद सटकारी री ननदिया ।।
हाथन की मुदरी लइ मेरो और गरे हार ।
वास न वसिये नन्द के रे मेरी कोई नाना सुनै पुकार ।
लै गयो तो लै जान दै जाने मेरी बलाय ।
पीहर जाऊं बाप के रे और लाऊँ गढ़वाय ।
दया सखि घनश्याम लाल कौ बाढ़यो है रंग अपार ।
चरन कमल के आसरे रे तन-मन-धन बलिहार ।

एरी होरी कों रसिया रस लोभी निकसन देय न बाट ।।
भर-भर रंग सबै तन ढारे यह ऊधमी विराट ।
कर डफ लै कछु ऐसौ गावै सुनि जिय होत उचार ।
वृन्दावन हित रूप माँगि सुख लिख्यो विधि श्याम लिलाट ।

पानीरा भरन कैसे जाऊँ री मोपै माँगै जुबनवा कौ दान ।।
ढपै बजावै गारी गावै लै लै कै मेरो नाम ।
या ब्रज की कछु उलटी रीति है मेरो बाहर परत न पाम ।
या माधव ते कैसे बचूँगी रसवादी है गोकुल गाम ।

अनौखो छैल मेरे आवै रे ।।
धमकि अटा चढ़ी आवै रे एरि मोय ओचक आय जगावै रे ।
सूनी बाखर आवै रे एरि मोय दे दे सैन बुलावै रे ।
केसरि रंग बनावै रे एरि मोपै भरि-भरि गड़ुवा ढारै रे ।
ठोर कहाँ जहँ जैये रे रस सागर बीच लुभैये रे ।

खेलौ बलदाऊ जी सों होरी ।।
वे तो कहिये ब्रज के राजा फगुवा लैन चलो री ।
फागुन में हिय उमगि भरयो है मन भावै सोई करौ री ।
लाज सब दूर धरो री ।।
चोवा लाओ चन्दन लाओ अबीर बनाओ भर झोरी ।
बैंया पकरि के याहि नचाओ (याकि) मुख ते लगाय देओ रोरी ।
हाल ऐसो ही करो री ।।
कहत मुकुंद बार नाय कीजै पकरि लेउ बरजोरी ।
कोई काजर कोई बेंदी लगाओ (याके) सेंदुर मांग भरो री ।
नील पर धूरि धरो री ।।

क्या करै अनोखे बान रसिया होरी में ।।
एक मार रंग की पिचकारी, दूजै नैन कटार ।
एक मार मीठी मुसकनकी, दूजै अलबेलो सिंगार ।
एक मार मीठी बंसी की, दूजै नूपुर की झनकार ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि, रंग रंगीलो सरकार ।

पर्‌यो री या है होरी कौ चसकौ,
बारी ननदी दरबज्जे पै आन अर्‌यौ ।।
हा-हा सी ननदी होरी खेलन दै, फागुन दिन दस कौ ।
गैल घाट मग रोकत डोलै, नांय मानें नन्द कौ ।
आनन्द घन रसिया रस लोभी, बदलौ लऊँ परकौ ।।

कोउ भलो बुरो जिन मानो रंगन रंग होरी है ।
मोहन के मन मोहन कौ श्री वृषभानु किशोरी है ।
होरी में कहा-कहा कहियत है यामे कहा कछु चोरी है ।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु सों जो कछु कहौं सो थोरी है ।

बावरी बन आई तोय होरी कौन खिलाई ॥
नैनन में चकडोर फिरै तेरे घूँघट में चतुराई ।
सास कहै मेरी वारी सी बहुरिया अंगिया कहाँ दरकाई ।
चंचल चपल मयंद गयन्दनि घूमत-घूमत आई ।
हार डोर की सुधि नाय सजनी किन लालन बिरमाई ।
सास कौ पूत ननदिया कौ वीरा जिन मेरी छोर उड़ाई ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि हरषि-हरषि गुण गाई ।

मनमोहन की रिझवार प्यारी तेरे नैन सलोने ॥
तू अलबेली आन गांव की अब ही आई गोने ।
सौंह दिवाय कहौं (नेहर) पीहर की पग जिन धरौ अगौने ।
आज होरी गोरी तेरेइ बगर में केते कौतिक होने ।
साँची सखि सुनि नंदनंदन की रूप रंग गुण औने ।
जब लगि परस कुटिल भृकुटी तट मटकत टावक टोने ।
अब तू साधि सखि घर ते में नेम धर्म व्रत मौने ।
चन्द्रसखी या गोकुल बसिके नेम निभायो कौने ।

आय गयौ-३ रे होरी में कन्हैया ॥
वा दिन भाज लियो होरी में, लठामार ते नन्दगैया ॥
एक दिना मेरो घूँघट खोल्यो, और करी याने लंगरैया ॥
पनघट पे ये नित हि अटके, गगरी फौरे लुढकैया ॥

सानूदा होरी खेलदा नहीं जानदा ॥

लंगर लंगर लंगराई करि कै, साड़ा मुख पर चादा भरि ।
पिचकारी देता गारी टेड़ी करि तानेदा ।
चोबा चन्दन और अरगजा लै मुख ते सानेदा ।
हाय दई कैसी भई नहीं आनंद घन मानैदा ।

साँवरो अजहूँ नाय आयौ ॥

छाड़ दई मधुवनी श्याम ने मधुपुरी जाय के बसायौ ।
दासी जाय करी पटरानी गोपीनाथ नाम लजायौ ।
कंत कुब्जा कौ कहायौ ॥१॥
लै पतिया छतिया कौ जरावै ऊधौ संदेशा लायौ ।
कहा कहुं यह मित्र विश्वासी कैसो संदेशौ लायौ ।
हलाहल घोरि पिलायौ ॥२॥
एक दिना बात सखी री जसुदा हाथ बँधायौ ।
जो न होती हम ब्रज ग्वालिन हम नेई आनि छुड़ायौ ।
लाल द्वै बापन जायौ ॥३॥
भूषण वसन उतारि सखी री अंग विभूति रमायौ ।
हार उतार पहिर लिये मुद्रा सींगी नाद बजायौ ।
फाग में अलख जगायौ ॥४॥
धन मथुरा धनि-धनि वृन्दावन धनि जहाँ रास रचायौ ।
ब्रज प्रताप यह अटल बनी रहौ करत आप मन भायौ ।
श्याम चेरी ने बिरमायौ ॥५॥

प्यारे हम नहिं खेलत होरी ॥

हो हो करत अरत ही आवत दिखरावत बरजोरी ॥
नए खिलार लाड़िले मुख पर लै लपटावत रोरी ॥
रूप रसिकई जानि परी अब देखत है सब गोरी ॥

सब दिन की अब कसक निकारों,पकर लियौ सब लिपटैयाँ॥ होरी में ॥
घेर लियो सबने मनमोहन, श्याम गये अब पकरिया ॥ होरी में...
गुलचा गाल दिए मन भाये, बरज रही कीरति मैया ॥ होरी में ...
छल बल ते नहिं छूट सको तुम, परो किशोरी के पैयां ॥ होरी में...
छूटे पांय पकर गिरधारी, ठुमका दे रहे नचकैयाँ ॥ होरी में...

सब की चोट निशाने पै ॥
नैन बान चहुँ धाते छूटैं चन्द्रिका मिली इक बाने पै ।
लाखन हू की भीर जुरी है अति लोचन सरसाने पै ।
या नागर ते सब ब्रज अटक्यो सो अटक्यो बरसाने पै ।

प्यारी बिहारी लाल सों रस होरी खेलैं ।
लटकीली गज चाल सों, बुका बंदन मेलैं ॥
जोबन जोर उमंग सों रति रंगहि रेलैं ।
लै पिचकी कर कमलन सों पिय तन पर पेलैं ।
अति निसंक लच लंक सों भरि अंक सके लैं ।
गहि गाढ़ी आह्लादिनी आनंद अलबेलैं ।
अतर ले तन तार करी नव तिया नवेलैं ।
सग बग कीनी ढारी कै सीसी जु फुलेलैं ।
चहल पहल भई महल के या बगर बगेलैं ।
श्री हरि प्रिया जे धन्य हैं ते यह रस झेलैं ।

रसिया केसर की बूंदन में अंगिया किन रंग दीनी रे ॥
देखेंगी मेरी सास ननदिया यह कहा कीनी रे ।
चोवा चन्दन और अरगजा सोंधे भीनी रे ।
रसिक प्रीतम अभिराम श्याम सो भुज भरि भेंटी रे ।

गोरी होरी तो खेल घूँघटवारी । घूँघट वारी बिछुवा वारी ॥
मत छेड़ श्याम गिरवर धारी । गिरवर धारी ओ बनवारी ॥
रंग भरी ये होरी आयी,भागन ते इकली पाई ।
अरी हम जोरेंगे तोते यारी, गोरी .... ॥
तेरी होरी बारह मासी, हमरी तो है जावे फांसी ।
सब देखेंगे ब्रज नर-नारी, मत छेड़ श्याम गिरवर धारी .... ॥
बात बनाय रही है प्यारी, होरी को त्यौहार मना री ।
रसियन को ये सुखकारी, गोरी होरी तो खेल घूँघट वारी .... ॥
देख गैल ते हट बजमारे, रोके मत ओ रूप बावरे ।
भंवरा सी प्रीति तेरी कारी, मत छेड़ श्याम गिरवर धारी .... ॥
चम्पकली सी नार नवेली, होरी खेलेंगे अलबेली ।
प्यारे कों रस प्यारी प्यारी, गोरी होरी खेल घूँघट वारी .... ॥
काहे पाँय परै रसदानी, मानमंदिर की टेव पुरानी ।
मत ब्यार करै तोपै वारी, मत छेड़ श्याम गिरवर धारी .... ॥

बह जायगी काजर धार न मोपै रंग डारो ॥
सास सुनैगी मूसर मारै, नई बहुरिया बादर फारै ।
वो तो गारी दैगी हजार, न मोपै रंग डारो ॥
ननद लड़ै औ लड़ै जिठानी कहाँ भई यह ऐंचातानी ।
मेरी चूनर डारी फार न मोपै रंग डारो ॥
कह्यो गूजरी श्याम सुंदर सों फिर जीतूँगी काउ जतन सों ।
मोपै होरी रही उधार न मोपै रंग डारो ॥

मुद्दई मेरौ जेठ गिरारे कौ ।
अगल बगल मेरौ घूँघट निरखै, नथ निरखै भलकारे कौ ।
गैल चलत मेरी पिड़रीय निरखै, निरखै झुब्बा नारे कौ ।
'ब्रज दूलह' यह छैल अनौखौ, जसुमति नन्द दुलारे कौ ।

गोरी-गोरी गुजरिया भोरी सी प्यारी तैं मोहे नन्दलाल ॥
खेलन में हो-हो जु मन्त्र पढ़ डारयौ तै जु गुलाल ।
(तेरी)सोंधे सनी अंगिया उरजन पै औ कटि लँहगा लाल ।
उघर जात कबहुँक चलगत में जेहर ढिंग ऐड़ी लाल ।
(तू) सकल त्रियन में यों राजत है ज्यों मुक्तन में लाल ।
न्याय चतुर्भुज कौ मन मोह्यौ अधर सुधा रस लाल ।

होरी खेलन की चौंप हो निस नींद न आवै ॥
श्याम सलोना रूप रिझौना मुरली टेर सुनावै – हो निस नींद... ।
मेरे बगर मंडरावै वाते खेलूंगी उघर बनावै – हो निस नींद... ।
कहा करैगी सास ननदिया सब त्यौहार मनावै – हो निस नींद... ।
आनंद घन गुलाल घुमड़न में करि हार हिये में रखावै – हो... ।

गोहन पर्‌यो मेरे साँवरो सलोनों ढोटा गोहन पर्‌यो ॥
याकी घाली मेरी आली कहौ कित जाउँ ।
बांसुरी में (गावे वह)—(गारी गावे) लै लै मेरे नाउँ ।
सांवरे कमल नैन आगे नेकु आई ।
लाजन के मारे (मोपै) कहूँ गयो न जाई ।
जौ हौं चितऊँ आड़ो दै दै चीर ।
सैननी में कहै चल कुञ्ज कुटीर ।
अंगना में ठाड़ी हू अटा चढ़ि आवै ।
मुकुट की छहियाँ मेरे पाइनि छुवावै ।
हित घनश्याम मिलोगी धाई ।
सांवरे सलोने बिन रह्यो न जाई ।

होरी को बन्यो खिलार हरि कौ सब सखियो घेरो री ॥
बहुत बार याने मटकी फोरी, दीखै जहाँ साँकरी खोरी ।
यानै बहुतै कियो बिगार याकी बंसी मिल चोरौ री ॥
याद करो जब चीर चुरायो, ऊपर चढ़ि गूँठा दिखरायो ।
ये कैसो ऊधम गार याको पीताम्बर छोरौ री ॥
आज हमारो दांव बन्यो है, देखो कैसो आज सज्यो है ।
ठकुराई लेओ निकार याको रंगन में बोरो री ॥
सब मिल पकरी नन्द को लाला, मगन भई सब ब्रज की बाला ।
हँस दैवे गुलचा मार राख्यो हरि करि कै चेरो री ॥

रूप दुरै किहि भांति री, तू कहै क्यों ताहि उपाय (सजनी) ॥
घूँघट में न छिपात सखी मेरे गोरे बदन की कान्ति ॥
बरज रही बरज्यो ना मानै कौन दई संजोग री ॥
मैं तरुणी या ब्रज के सबरे भये बावरे लोग री ॥
मोहन गोहन लाग्योइ डोलै प्रगट करत अनुराग री ॥
अब नागर डफ बाजन लागै सिर पर आयो फाग री ॥

गोरी तेरे नैना बड़े रसीले ॥
विहंसि उठत निरखि मेरो मुख घूँघट पट सकुचीले (रसीले) ।
फागुन में ऐसी ना चहिये ये दिन रंग रंगीले ।
ललित किशोरी गोरी खंजन बिन अंजन कजरीले ।

खेल रहे रंग होरी उनके दौऊ नैना खेली रहे रंग होरी ।
श्याम पुतरी श्याम भई, ज्योत भई राधे भोरी ।
बाल समान अबीर उड़ावत, भर पलकन की झोरी ।

बैंयां झकझोरी मोरी रे, खेलिये न ऐसी होरी श्याम ॥
मानो जू छबीले छैला खेलिये ना ऐसी होरी ।
परसत कुच मोहे जान लंगर भोरी ॥ खेलिये न ऐसी होरी .....
रंग पिचकारी मारी चूनरी बिगारी सारी ।
चल रे अनारी काहे मलत कपोल रोरी ॥ खेलिये न ऐसी होरी .....
भरिये न अंकवारी दूँगी मैं प्यारे गारी ।
सरस विहारी तोसों हारी कहूँ कर जोरी ॥ खेलिये न ऐसी होरी ॥

कान्हा निलजी गारी जिन दै री ॥
अबहूँ हारी हाहा तोसों, नेक लाज मुख लै रे ।
अब या गली बहुरि नहिं अैहौं, सौं बाबा की है रे ।
नागरिया ब्रजवधू भिगोई, होरी मांझ सबेरे ।

राधा मोहन खेलत फाग (री) ॥
रंग गुलाल वसन तन सनि रहे, हिये सनि रहे अनुरागऊ ।
सखिनु समाज चहुँ दिसि राजत, फूल्यो सोभा कौ बाग ।
वृन्दावन हित रूप छके रस, मदन केलि उर लाग री ।

ये गोरी अनमोल गोरी याते न बोल ॥
जावक पाँय चुटलि गौने की तुम चाहत कछु और होने का ।
जाउं बलिहार परे को डोल-डोल देख, याते न बोल ॥
होरी खेलन कीजो तेरे मन में जोबन जोर भरो तेरे तन में ।
तो आओ सखियन के टोल-टोल देख, याते न बोल ॥

होरी को खिलार कर लिये डफहि बजावै होरी की ॥
पान भरे मुख चमकत चौका अरु देये बैंदा रोरी की ।
रातो लंहगा तनसुख सारी कहा कहौ छवि या गोरी की ।
कठिन कुचन पर उकसती अंगिया आहि मनो रति की जोरी की ।
चोवा की बेंदी तुईयन पर अरु अचरा की ढिंग थोरी की ।
नीवी खुभी जू रही है नाभि पर अरु कसि गांठि दई डोरी की ।
भरती न डरति आंख आंजती है करत दुहाई किसोरी की ।
नन्दलाल कौ गारि देती है हंसि ग्वालिन सों गठ जोरी की ।
जोवन रूप बनी सु बनी मनो है वृषभानु गोप ओरी की ।
हो हो हो कहि सुघर राय प्रभु नैन सैन दै चित चोरी की ।

रंगभरी होरी खिलाय ले ओ होरी के रसिया ॥
होरी के रसिया प्यारे नन्द जू के छैया, फागुन खूब मनाय ले ।
फगुना में मैं नथनी लूँगी, नथनी में फूलना डलाय दे ।
शीशा जरी आरसी लूँगी, मुख अपनों दिखराय दे ।
१६ लर की लऊँ कौंधनी, रौना हू लटकाय दे ।
पायल लूँगी बिछुवा लूँगी, बिछुवा में घुँघरू जड़ाय दे ।

होरी आज खिलाय ले ओ रंगभरे रसिया ॥
रंग भरे रसिया जसुदा जी के छैया अपनी हौस बुझाय ले ।
रंग भरी पिचकारी लै के रंग की धार चलाय ले ।
चोवा चन्दन अगर कुमकुमा कस्तूरी लिपटाय ले ।
रंग बिरंग गुलाल की पोटै बादर सी घुमड़ाय ले ।
जो कछु होवै तेरे मन में आपनो जोर जमाय ले ।
नैनन ते मुसकाय सलोने हँस-हँस भरे लगाय ले ।

निलजी गारी जिन दै रे अरे कान्हा ॥
अबहूँ हारी हा हा तोसों नेक लाज मुख लै रे ।
अब या गली बहुरि नहि अइहौं सौं बाबा की है ।
नागरिया ब्रजवधू भिगोई होरी माँझ सबेरे ।

चाहे रुठै सब संसार खेलूँगी होरी श्याम ते ॥
चाहे सास रुठै चाहे ससुरो रूठे, चाहे रूठ जाय भरतार ।
चाहे ननद चाहे नंदेऊ रूठै, चाहे गारी मिलै हजार ।
चाहे जेठ रूठे चाहे जिठनी रूठे, चाहे बकै सबै ब्रजनार ।
चाहे सबरो गांव चबाव करै, ये तो है गई फरिया फार ।
चाहे नगर निकासो है जाय मेरो, चाहे दीजो मोपै भार ।
भर होरी में मिलै श्याम सों, छोडूं रंग की धार ।

मनमोहन नन्द डुठोना ॥
होरी में आयो बरसानो, सुंदर श्याम सलोना ।
कीरति जू हँसि लियौ अंक भरि, जसुमति जू कौ छोना ।
भोजन सुहथ कराई नेह युत, सीतल जल जु अचौना ।
ललितादिक लै चली खिलावनि, जहाँ दाइजे गौना ।
रंग गुलाल बगेलत खेलत, राधा संग नचौना ।
गारी गावति सखी लड़ावत, होरी छंद रचौना ।
ललकत वलकत रस छकि घूमत, उर सुख मुख गह्यौ मौना ।
कीरति दुरि निरखति मन हरषित, हिय सुख सिंधु बढ़ौना ।
वृन्दावन हित रूप आसीसत, ये दोऊ लाड़ खिलौना ।

तो पै होरी में किशोरी रंग डारैगी ॥
क्यों इतनो इतरावै मोहन सबरी कसर निकारैगी ।
लूट लूट दधि माखन खायो गालन गुलचा मारैगी ।
तक तक के मारै पिचकारी अबीर गुलाल उड़ावैगी ।
नंदनंदन तारी बजाय के सखियन बीच नचावैगी ।
श्याम सुंदर आज तोहि पकरैगी घिस घिस अंग निखारैगी।
पुरुषोत्तम प्रभु होरी खेलौ तन मन सब तोपै वारैगी ।

होरी रे होरी रे होरी रे होरी रे ॥
इत ते आये कुंवर कन्हैया इतते राधा गोरी रे-३ होरी रे ।
बाजत ताल मृदंग झांज डफ और नगारे की जोरी रे-३ होरी रे ।
उड़त गुलाल लाल भये बादर मारत भर भर झोरी रे-३ होरी रे ।

आज श्याम तुम खेलों मोते होरी ॥
माथे चमक रही है बिंदिया घूँघट बचाय तुम खेलों मोते होरी ।
नैंनन नहनो कजरे की रेखा कजरा बचाय तुम खेलों मोते होरी ।
आजहूँ ओढ़ी नई चुनरिया चुनर बचाय तुम खेलों मोते होरी ।
स्यालु सरस रेशमी लंहगा लंहगा बचाय तुम खेलों मोते होरी ।
नई नई होरी में आई लाज बचाय तुम खेलों मोते होरी ।

वृषभानु भवन की पौरीन में होरी खेलै सांवरो ।
ब्रज की वधू सब जुर मिलि आई लिये रंग कमोरिन में ।
चोवा चन्दन और अरगजा अबीर लिये भर झोरिन में ।
ब्रज दूलह यह छैल अनोखौ दाव लग्यौ भर कौरिन में ।

मैं तो होरी खेलन जाऊँ मेरी बीर नांय माने मेरो मनुवा ।
होरी को अलबेलो छैला, मैं तो वाते नेह लगाऊँ मेरी वीर ।
भर पिचकारी रंग की मारूँ, मैं तो अबीर गुलाल उड़ाऊँ मेरी वीर ।
ऐसो रंग डारुँ कारे पै, मैं तो गोरो आज बनाऊँ मेरी वीर ।
दै गुलचा सीधो कर डारुँ, मैं तो सबरी टेढ़ निकारुँ मेरी वीर ।
चीर हरन को बदलो लूँगी, मैं तो पीताम्बर छुड़ाऊँ मेरी वीर ।
हरि को नंगो कर होरी में, मैं तो नैनन नैन लडाऊँ मेरी वीर ।

उँगरी पै नाच नचाय दूँगी मोय जानै न साँवरिया ॥
जो मोपै तू रंग डारैगो, भर गागर रंग डारूँगी ।
जो मेरे गाल गुलाल मलैगो, तो गोरो तोय बनाय दूँगी ।
जो अंगिया ते हाथ लगायो, तो नंगो तोय कराय दूँगी ।
जो चूनर तू मेरी पकरै, गुलचा गाल लगाय दूँगी ।
तोय करूँ होरी को भड़ुवा, गलियन माँहि फिराय दूँगी ।

होरी तो खेल मतवारी गुजरिया भागन ते फागुन आयो गुजरिया ।
रूप की तू देवी ओ हम हैं पुजारी, तू है बड़ी दाता ओ हम हैं भिखारी ।
भीख दै दे ठाड़े हैं तेरी डगरीया ॥
राजी ते खेल लै ओरी, दीवानी ना तो करेंगे ऐंचातानी ।
फारेंगी तेरी ये लाल चुनरिया ॥
बचके न जावेगी ओरी छबीली, ऐसी मिली जैसे मुहरन की थैली ।
खोल भण्डार तेरी लचकै कमरिया ॥
गोरे गाल गुलाल लगाय ले, मेरे दुपट्टा ते पीक पौंछ ले ।
ढ़ार ले तू मोपै रंग की गगरिया ॥
घूँघट में ते मोहड़ो चमकै, बिंदिया तेरी दम-दम दमकै ।
छूरी कटारी है तेरी नजरिया ॥

साँवरे ने गारी दई मैं तो लाजन मारी रही ॥
गारी की गारी ताने के ताने एक की लाख कही ।
होरी की भीर में आय अचानक बैंया मेरी गही ।
भर पिचकारी छतियन मारी अंगिया गरक रही ।
घूंघट खोल गुलाल मल्यो मेरे गालन बरज रही ।
बरजोरी कीनी नटखट ने मैंने पीर सही ।
आग लगै या होरी में याने बहुतै बुरी कही ।

भायेली मोय बताय दै ब्रज में गुजारो कैसे होय ॥
जग में होरी ब्रज होरंगो, हाँसी सी ठट्ठा ओ हुरदंगो ।
भायेली सीख सिखाय दै ब्रज में गुजारो कैसे होय ॥
भीतर रहूं तो हेला देवै, बाहर जाऊँ तो होरी गावै ।
भायेली अकल बताय दै ब्रज में गुजारो कैसे होय ॥
गैल गिरारे खेलै होरी, छतियन पै मारै पिचकारी ।
भायेली गैल दिखाय दै ब्रज में गुजारो कैसे होय ॥
बड़ो छैल नन्द को उतपाती, गरे लगावै लिपटै छाती ।
भायेली याय बताय ब्रज में गुजारो कैसे होय ॥

होरी में काहे भागे अरे लगवाय लै कजरा नन्द जू के ॥
काजर तोय लगाऊँ ऐसो, तिलक लगावै तू सज के जैसो ।
छैला अपनो साज आज सजवाय लै ढोटा नन्द जू के ॥
बहुत दिना तक मटकी फोरी, बहुतै करी तैने माखन चोरी ।
अपनी सबरी करनी को फल पाय लै लाला नन्द जू के ॥
भर-भर डारूँ रंग कौ गड़ुवा, तोय करूँ होरी को भड़ुवा ।
बन्यौ ठन्यौ डोलै रसिया रस पाय लै छोरा नन्द जू के ॥

नंदगाँव अनौखौ नन्द को जहाँ चपल चबाई लोग ।।
निपट अभेंड़ो सावऐ हँस कै लगावै दोऊ नैन,
रोके टोके गैल में मोतै बोलै रसीले बैन ।।
पनघट पै ठाड़ो रहे भर-भर देय उचाय,
व्यार चलै ऊचए उड़ै मेरो हियरा लेत लुभाय ।।
जैये तो रहिये कहाँ यह सुख और न ठौर,
होरी को धूमस रहै नित नन्दभवन की पौर ।।
कान काहू की नाय करै याको रसिया सबरौ गाम,
सागर के हिय में बसै यह मूरत घनश्याम ।।

तेरे जोवन कौ मनमोहन है रिझवार ।।
रूप सलोनी तू गजगौनी रूप जोवन दिन चार ।
भांमर सी फिर बोई करत हौ यही तेरो व्यवहार ।
दया सखी घनश्याम लाल सो मिलिये गल भुज डार ।

चल बरसाने खेलैं होरी ।।
ऊंचो गाम धाम बरसानो जहाँ बसै राधा गोरी ।
उत ते आये कुंवर कन्हैया इत आई राधा गोरी ।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक देखन आये रंग होरी ।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु सों फगुवा लियो भर भर झोरी ।

अलबेली के यार सोहे कजरा ।।
सोहे सरस सलोनो कजरा परे भुजन पीरे अंचरा ।
राधा नैन बने दोउ तोता मोहन नैन बने पिंजरा ।
प्रेम रसिक प्यारी मुख मोडयौ हँसि मुसक्याय दियौ कजरा ।

अंगिया दरक रही मेरी रे जोवना तेरी ओट ॥
सुन रे दरजिया के छोरा घुंडी लागी महराज ।
एक तो पान ते पतरी हूँ सोलह लगे कहार ।
एक तो मैं जोवन माती दूजै सैंया नादान ।
एक तो मैं राजा की बेटी दूजै भई बदनाम ।

वारे की नारि झूला नीम किन दयौ ॥
झूला पै ते गिर परि याको यार गयो बलखाय ।
हाथ टटोरे पाम टटोरे याको यार गयो मुरझाय ।
हाथ न हाले पाम न हाले छतिया ते लइ चिपकाय ।

होरी खेलत बिछुवा खोयो लीजो लीजो रे छैल ढ़ुँढ़वाय ॥
कै भूली तेरी सेज पै काऊ सौत ने लियौ चुराय ।
खोय गयो तो खोय जान दै नयो दऊं गड़वाय ।
बिछुवा रतन जड़ाव कौ तेरो सबरो गांव बिक जाय ।

लगन तोते लग गई रे अरे लगवार ॥
धमकि अटरिया चढ़ी गई वही ते रिपटयो पाँव किवरिया खुल गहेरे ।
चढ़त अटरिया हाकिम देखी उतरत देखी कोतवाल उजागर है गई रे ।
५०० रुपैया हाकिम मांगे १० मांगे कोतवाल बदरिया फट गई रे ।

रसिया मेरी लहर उतार रस तो लै दोनू नैनन को ॥
गोरी जो तेरी लहर उतारहौं रंचक मोय पानीरा प्याय ॥१॥
लाला हमरो पानीरा विष भरयो पीवै रे गरद है जाय ।
गोरी जो तेरो पानीरा विष भरयो तेरे घर को कौन हवाल ॥२॥
लाला हमरे घर को वायगी (गारुड़ी) पीवे रे नेक लहर उतार ।
हम हूँ बनेंगे तेरे वायगी गोरी पीवै लहर उतार ॥३॥

रसिया मेरी गागर उतार जोर जरन लागी जेहर की ।
लाला इखने चढ़ दुखने चढ़ी तिखने रे मोपै चढ़यो न जाय।
गली-२ डोलै वैद्य कौ या वैदे रे नेक उरे बुलाय ।
वैद कूं डार खुटोलना मुड़ला पै बैठी आय ।
नारी टटोरै बैद कौ तेरे विरह बिथा रही आय ।
मैं अच्छी होनी नही अपयस आवै तोय ।
रसिक छैल होरी में भेटूं तव कल आवै मोय ।

नथ कौ तोता बोलै तेरी ।।
उड़ तोता होंठन पै बैठ्यो दोनूं गाल मरोरै ।
उड़ तोता हियरा पै बैठयो चोली के बन्दा खोलै ।
उड़ तोता पेडूं पै बैठयो पचमनिया सो पोवै ।

सुन साँवरा यार तेरा बिरज जाने कैसा ।।
तेरे बिरज में कुआ बावरी, तेरे बिरज में सागर ताल ।
तेरे बिरज में तबला सारंगी, तेरे बिरज में बजै सितार ।
तेरे बिरज में नीबू नारंगी, तेरे बिरज में पके अनार ।
तेरे बिरज में गैया बछरा, तेरे बिरज में दूध की धार ।
तेरे बिरज में होती बरजोरी, तेरे बिरज में अँचरा फार ।

सारे बरसाने वारे, रावल वारे सारे सब ।।
जगन्नाथ के नाती सारे वे बरसाने वारे ।
डोम ढ़ड़ेरे सब ही सारे और पतरा वारे ।
बाग बगीचा सब ही सारे सारे सींचन वारे ।
बिरकत और गुदरिया सारे लम्बे सुतना वारे ।
बाबा जी भानोखरि सारे चौके चूल्हे सारे ।
अहलायत महलायत सारे गैल गिरारे सारे ।

बलि छलन चलो त्रिलोकी ॥
चरनन पहरे चरन खड़ाऊँ, सिर पै पचरंग टोपी ।
हाथ में लै लई ब्रह्म लकुटिया, बगल में भगवंत पोथी ।
बलि राजा के द्वारे जाय के, बात कही इक मोटी ।
तीन पेड़ पृथ्वी दे राजा, कुटिया बनाऊँ छोटी ।

तेरी मेरी है जोरी आजा खेलैं हिलमिल होरी ।
तेरी मेरी का जोरी कान्हा तू कारो मैं गोरी ॥
द्वै-द्वै तेरे बाप कहत हैं, नन्द वासुदेव कई जोरी ।
मैया ते जा पूछ पिता को, गोकुल की या मथुरा को री ।
नन्द जसोदा गोरे (सुनियत) लाला, तू क्यों कारो भयो री ।
कहा खोट मैया में कैसे, कारो तोहि जन्यो री ।
घर-घर डोलै उझकत, तू तो कर तो डोलै चोरी ।
नार पराई तकतो डोलै, चाहे ब्याही क्वारी छोरी ।
नंदगाँव के चोर ग्वारिया, (सब मिल) लूटैं भरी कमोरी ।
लठामार में लट्ठ परै जो, (सवरी) भूल जाय बरजोरी ।
ऐसोइ भँग-घोटा तेरो भैया (दाऊ), भंगड़ धत्त परो री ।
कोड़न की जब मार परै, तब हा-हा खावै होरी ।

बलि मत दे दान जिमी को ॥
याय छोटो मत जाने राजा, यू छलिया है देय दिनी को ।
याई ने मोरध्वज छल लियो, धारो रूप तपसी को ।
याई ने हरिश्चन्द्र छल्यो, जाने भरो नीर भंगी को ।
याई ने हरनाकुस मारो, वन के सिंह बनी को ।
याही ने रावन को मारो, जोधा लंकपुरी को ।
तुलसीदास आस रघुवर की, चरनकमल चित नीको ।

पांडो कर गये राज धरम को ॥

कौरो पांडो चौपर खेलै, पासो पर्‌यो करम को ।
कूआ हाट बावरी हारे, ऊपर पौधा वर को ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, ध्याव धरे गिरिधर को ।

हरि तेरो पार न पायो ॥

मथुरा में हरि जनम लियो है, गोकुल में भयो बधायो ।
नन्द बाबा घर कन्या जनमी, वसुदेव कुँवर कहायो ।
गज और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त-लड़त गज हारो ।
जौ जौ भर सूंड़ रही नल ऊपर, जब हरि नाम सँवार्‌यो ।
गज की टेर द्वारका में लागी, नंगेई पामन धायो ।
ग्राह मार धरती पै लाये, जब गजराज उबार्‌यो ।

जिन जैयो रे गोरी तू पनघट ॥

दुस्मन नैन मरखने तेरे वो रसिया नन्द को नटखट ।
जो घूँघट पट ओट करेगी रसिया चोट करे परघट ।
रसिक बिहारी जू की नजर बुरी है कर डारै छिन में चटपट ।

मो मन यह व्यापी पकर मोहन पें वैर लेहूँ ॥

सब सखियन में छिप जो चलों पाछें ते दौरी जाय अंजन देहूँ ॥१॥
करगहि पीठ गड़ाय कुचन सों कान पकर के गुलचा देहूँ ।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु पें मनभायो हों फगुवा लेहूँ ॥२॥

मदमातौ महिना होरी कौ ।

प्रेम उमंग बजाय चंग कौ, गावत रसिक किशोरी कौ ॥
हाट बाट रोकत बृजबाला, खोलत घूँघट गोरी कौ ।
गाल गुलाल लगावत मोहन, काम करत बरजोरी कौ ॥

हा हा ब्रजनारी री आखें जिन आँजो ॥
जो आँजो तो आप आँजिये, और हाथ जिन देहो ।
हाँसी हानि दुहूँ विध जोखो, समझ बूझे किन लेहो ॥१॥
सुनहें मेरे सखा संग के, हँस-हँस दैंहैं तारी ।
बड़े खिलार कहावत हैं हरि, आँख कराई कारी ॥२॥
परम प्रवीण जान पिय जिय की, मृदु मुसिकाय निहारी ।
कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु कों, रीझ भरत अँकवारी ॥३॥

नारी गारी दे गई वे माई हो हो होरी आई ॥
मदनमोहन पिय बांसुरी बजाई श्रवण सुनत गृह तज जुर धाई ॥१॥
चंद्रावली अंजन के आई पकर मोहन जू की आंख अंजाई ।
फगुवा बिन दोयें कैसे जे हो धोंधी के प्रभु कुंवर कन्हाई ॥२॥

तुम बिन खेल न रुचे लगार सुंदर या रहो तुमहो सुघर खिलवार ॥
नारि सब मिल गावत आवत, पिचकारीन की ह्वै रही मार ॥१॥
द्वार द्वार फगुवा के कारण करो करो कर रहत ब्रजनार,
अन्तर्यामी आनन्ददाता सूरप्रभु तुम नंदकुमार ॥२॥

कंकरी दै जेहर फोरी सबरी भिजई ॥
कंकरी दई दया नाय कीनी, पिचकारी की चोट जो दीनी ।
भीजी सारी सुरंग नई .... ॥
चकरी-सी मोय नाच नचाई, केसर कीच कुचन लपटाई ।
जो लौं ननदुल आय गई ....॥
मोहन प्रगट भये ब्रज जब ते, शालिग्राम बौरी भई तब ते ।
हँस कै गरे लगाय लई .... ॥

होरी हो ब्रजराज दुलारे ॥

अब क्यों जाय छिपे जननी ढिंग, द्वै बापन के वारे।
कै तो निकस के होरि खेलो, कै कहो मुख ते हारे -
जोर कर आगे हमारे।
बहुत दिनन सों तुम मनमोहन फाग ही फाग पुकारे।
आज देखियो खेल फाग कौ, रंग की उड़त फुहारें -
चले जहाँ कुम–कुम न्यारे।
निपट अनीति उठाई तुमने, रोकत गैल गिरारे।
नारायण अब खबर परेगी, नेक निकस आय द्वारे -
सूरत अपनी दिखलारे।

सुन मोहन रसिया होरी के ॥

ये किवार नहीं खोल सकत कोऊ, बिन कहे भानु किशोरी के॥
समझति हैं तुम्हरी चतुराई, यह दिन है बरजोरी के।
हीरा सखी हित कहत न बिसरत, जो तिहारे गुन चोरी के॥

पल्ले पर गई रंग में रंग दई होरी खेलत रसिया ॥

लहंगा सबरो रंग में में कर दियो रंग दइ अंगिया।
रंग बिरंगी कर के छोड़ी रंग दइ फरिया।
डफ लै होरी गावन लाग्यो दै दै के हँसिया।
हांसी सुन रिस लागै बदलो लूंगी मन बसिया।
रसिया की धोती पकड़ी मैंने मूठन ते कसिया।
धोती फाड़ बनायो कोड़ा पीटयो मन भरिया।
पिट-पिट के हू फाग सुनावै दाऊ को भैया।
ऐसो भयो होरंगो ब्रज में गावै दुनिया।

जो होरी तू ब्रज में बसैगी ॥
तौ तू कहाँ लों निशदिन सुन्दरि, घर में बैठि रहेगी ।
भाग सभागे काहू दिना तू, मोहन हाथ परैगी ।
जान जब तोकूँ परैगी ॥
धूम हुरारेन की सुनि सजनी, झमकि अटा पै चढ़ैगी ।
सुनि-सुनि नाम गारिन में अपनों, तू मुख मोर हँसैगी ।
छैला मन बस में करैगी ॥
लै लै लाल गुलाल मलेंगे, गोल कपोल सहैगी ।
तक-तक तेरे ऊँचे कुचन पर, कुमकुमा मार मचैगी ।
मौज सब तन की लुटैगी ॥
तो चुनरि औ पीताम्बर की, पिय संग गाँठ जुरैगी ।
नागरीदास बीच सखियन के, मोहन संग नचैगी ।
स्वाद रस को समझेगी ॥

मत मारो श्याम पिचकारी, अब दउँगी गारी ॥
भीजैगी लाल नई मेरी अंगिया, चूनर बिगरेगी न्यारी ।
देखैगी मेरी सास रिसै है, संग की ऐसी है दारी ।
हँसेगी दै-दै तारी ॥१॥
घाट-बाट नित रोकत-टोकत, लै-लै रार उधारी ।
कहाँ लों तेरी कुचाल कहूँ मैं, एक-एक ब्रजनारी ।
जानत करतूत तिहारी ॥२॥
मूठ अबीर जनि डारौ लालन, दूखैगी आँख हमारी ।
नारायण न बहुत इतराओ, छाँड़ो डगर गिरधारी ।
नये भये तुमहिं खिलारी ॥३॥

नेह लाग्यो मेरो श्यामसुंदर सों ।।
आई बसंत सबै वन फूल्यो, खेतन फूली सरसों ।
मैं पीरी भई पियके बिरह सों, निकसत प्राण अधर सों ।
कहो जाय वंशीधर सों ।।१।।
फागुन में सब होरी खेलैं, अपने-अपने बर सों ।
पिया के वियोग जोगिन ह्वै निकसी, धूर उड़ावत कर सों ।
चली मथुरा की डगर सों ।।२।।
ऊधो जाय द्वारका कहियो, इतनी अरज मेरी हरि सों ।
बिरह व्यथा ते जियरा डरत है, जब सों गये हरि घर सों ।
दरश देखन को मैं तरसों ।।३।।
सूरदास मेरी इतनी अरज है, कृपासिंधु गिरधर सों ।
गहरी नदिया नाव पुरानी, अबके उबारो सागर सों ।
अरज मेरी राधावर सों ।।४।।

प्यारे पिया खेलत होरी ।
नंदनंदन अलबेलो नागर, श्री वृषभानु किशोरी ।
परमानन्द प्रेम रस लीने, लिए अबीर भर झोरी ।
करत मन में चित चोरी ।।१।।
भुज भर अंक सकुच तज गुरुजन, विचरत हैं मिलि जोरी ।
छूटी अलक उरझि कुंडल सों, बेसर प्रीति फस्यो री ।
चलो सुरझाओ गोरी ।।२।।
कर कंकण कंचन पिचकारी, केशर भर-भर ढोरी ।
छिरकत फिरत हुलस लिए हरषत, निरखत हँस मुख मोरी ।
चलो क्यों होइयो बौरी ।।३।।
धन गोकुल धनि श्री बृंदावन, जहाँ पर फाग रच्यौ री ।
श्री रस रंग भीजि रहे ब्रज पर, वारों बैकुंठ करोरी ।
पा लागूं कर जोरी ।।४।।

श्याम मोसों खेलो न होरी ॥

जल भरबे कूँ घर ते निकसी, सास ननद की चोरी।
सिगरी चूनर रंग में न भिजबो, इतनी अरज सुन मोरी।
करो न बहियाँ झकझोरी ॥१॥
छीन झपट मेरे हाथ सों गागर, नरम कलाई मरोरी।
छाती धरकत सांस चढ़त है, देह कँपति सब मोरी।
दुःख नहिं जात कह्यो री ॥२॥
अबीर गुलाल मुखहिं लपटायो, सारी रंग में बोरी।
सास हजारन गारी दै है, बालम जियत न छोरी।
जिय आंतक दयो री ॥३॥
फाग खेलके तेने रे मोहन, कहा गति कीनी मोरी।
सूरदास मोहन छवि लखिके, अति आनंद भयो री।
सदा उर बास करो री ॥४॥

श्याम करी बरजोरी, सुरंग चूनर रंग बोरी ॥

आज प्रभात गई दधि बेचन, सिर पर धरी कमोरी।
आय अचानक कुसुम छरी कौं, मारि मटुकिया फोरी।
करी दधि में सरबोरी ॥
घेरि खड़ो मग संग सखन के, घन बादल दल ज्यों री।
धारि सहस धारा पिचकारी, वर्षा करी झकोरी।
निठुर केशर रंग घोरी ॥
मृदु मुसक्यान दशन दामिनि की, दमक दिखाय बहोरी।
मेघ समान मधुर भाषण करि, रहसि मली मुख रोरी।
लंगर घूँघट पट छोरी ॥
अंत बसें तजि गाँव तुम्हारो, श्री बृषभानु किशोरी।
वासुदेव पे नहिं सही जात है, नित्य अनिति ठठोरी।
रहे जाके नित होरी ॥

श्याम मली मुख रोरी, तनक मुख सों कहो गोरी ॥
चन्द्र समान विमल आनन की, पंकज प्रभा सकोरी ।
विथुर रही मुख पर ब्यालन सी, अलकावलि चहुँ ओरी ।
मनहुँ बल गरल निचोरी ॥
मणि चंद्रिका भई बक्रा गति, कुंकुम भाल दुत्यौरी ।
गोल कपोलन पै दशनन कौ, उपबन अति दर सौरी ।
श्रमित जल बिंदु ढलोरी ॥
नवयुग उरज कमल कलिका को, किन कर कठिन मरोरी ।
गरू सब करी कंचुकी, किन चूनर रंग बोरी ।
मृदुल बैयाँ झकझोरी ॥
लटपट चलत लचक कटि कोमल, गति गयंद तजि भोरी ।
वासुदेव तेहि को ब्रज बल्लभ, निश्चय आज मिल्यो री ।
नयो यह फाग रच्यौ री ॥

साँवरे मोते खेलो न होरी ।
मैं अबही आई या ब्रज में, करो मती बरजोरी ।
जल भरबे पठई ननदी ने, यमुना जी की ओरी ।
मलो न मेरे मुख रोरी ॥
गैल छैल तजि दीजै अबहो, सासु लरै पिय मोरी ।
जानि परत छलिया तुम बाँके, हम जिय की अति भोरी ।
छाँड़ि देउ करत निहोरी ॥
समझति हों तुम ढीट नंद के, करत फिरत दधि चोरी ।
बहुत अनीति बगर में रोकत, जो निकसति नव गोरी ।
भली मर्यादा तोरी ॥
हीरा सखी हित बरजत मोहन, नख सिख लों रंग बोरी ।
मन आशा पूरण कीनी सब, गागरि सिर ते फोरी ।
कही जावो गृह खोरी ॥

रंगन भीजि गई मेरी साड़ी सुरंग नई ।
पहरन काढ़ी ननदुल बरजीं, अब ही मोल लई ।
बरज यशोदा अपने लाल कौ, यह सिख कौन दई ।
इच्छाराम प्रभु या ब्रज बस के, ऐसी कबहुँ न भई ॥

होरी खेलत श्याम मोते झूम-झूम ॥
रंगवारी पिचकारी, धर मारी गिरधारी ।
गई भीग सब सारी, मेरो रोम-रोम याते घूम-घूम ।
श्याम सुन्दर छैलो रसिया बड़ो रंगीलो ।
करत फिरत सैलोरी, ब्रज में मच रह्यो री धूम-धूम ।
अटी है अटा अटारी, अटी सब ब्रज नारी ।
अटी जमुना किनारी, अट गई सब ब्रज की भूमि-भूमि ।
गलियन गलियन, सखियन सखियन ।
खेलैं रंगरंलियन री, सब को मुख ले वै चूम-चूम ॥

अरी चल नवल किशोरी ॥
राधा जू गारी सुनि-सुनि हँसि-हँसि, हरि तन हेरि लज्याइ ।
ललन अबीर मरत ग्वालिनि कौ, प्रान प्रियाहि बचाई ।
और जु प्रेम विवस रस कौ सुख, कहत कह्यो नहिं जाइ ।
जेहि सुख कहिवे कौं कोटिक, सरसुती की सुमति हिराइ ।
सेस महेस सुरेस न जानै, अज अजहू पछिताइ ।
सो रस रमा तनक नहि पायौ, जदपि पलोटत पाइ ।
श्रीवृषभानुसुता पद अंबुज, जिनके सदा सहाइ ।
इहि रस मगन रहत जे तिन पर, नंददास बलि जाइ ।

अलगोजा श्याम बजायो ॥

काहे को तेर्‌यो बनो अलगोजा, काहे ते जड़वायो ?
हरे बाँस को बनो अलगोजा, रतनन ते जड़वायो ।
एक दिना गिरिवर पै बाज्यो, नख पै गिरिवर धार्‌यो ।
एक दिना कालीदह पै बाज्यो, नाग नाथ कै डार्‌यो ।
एक दिना बरसाने में बाज्यो, फाग को खेल रचायो ।
एक दिना गहवर में बाज्यो, हिल मिल रास रचायो ।
इक दिन बाज्यो खोर साँकरी, लूट लूट दधि खायो ।

कान्हा पिचकारी मत मारै चूनर रंग बिरंगी होय ॥

चूनर नयी हमारी प्यारे,
हे मनमोहन वंशी वारे,
इतनी सुनलै नन्ददुलारे,
पूछैंगी वो सास हमारी कहाँ ते लई भिजोय ।
सबकौ ढंग भयौ मतवारौ,
दुखदाई है फागुन वारौ,
कुलवंतिन कौ औगुन गारौ,
मारग मेरो अब मत रोकै मैं समझाऊँ तोय ।
बहु विधि विनय करैं सुकुमारी,
आड़े ठाढ़े हैं गिरिधारी,
बोलैं मीठे वचन बिहारी,
होरी खेल अरी मन भाई फागुन के दिन दोय ।
छाँड़ दई रंग की पिचकारी,
हँस-हँस के रसिया बनवारी,
भीज गयी सबरी ब्रजनारी,
ग्वालिन ने हरि कौ पीताम्बर छोर्‌यो मद में खोय ॥

चूनरिया रंग में बोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ॥

चूनर नई बड़ी चटकीली,
चटकीलौ रंग घोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ।
जान न पाई कित ते आयो,
औचक ही झकझोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ।
गालन मल्यो गुलाल निरदई,
घूँघट कौ पट छोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ।
बरजन लगी हाथ पकरे जब,
बैंया तनक मरोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ।
लिपटन लग्यौ नन्द कौ मो ते,
हियरे प्रेम हिलोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ।
खैंचा खैंची करकें छूटी,
मोतिन की लर तोर गयौ कान्हा बंशी वारौ ।
ऐसौ रसिया कब मैं देखूँ,
छोटो सो मन चोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ।
होरी खेलन के दिन मोते,
डोर प्रीति की जोर गयौ कान्हा वंशी वारौ ॥

मैं पानीरा न जाऊँ वहाँ मच रह्यौ ख्याल री ।

ऐसे री उपाधी वाके संग के ग्वाल री ।
हाथन में पिचकारी फेंटन गुलाल री ।
मोहि देखि आवै छैला गजगति चाल री ।
रूप जो भयौ मेरे हिय कौ जंजाल री ।
नागरिया पग कंपै होत बेहाल री ।
अब कैसें जाऊँ आगे ठाड़े गुपाल री ॥

छेड़ै रोज डगरिया में तेरो ढीट कन्हैया मैया ।।
बरस दिना याकी होरी होवै,
पूछो सबै नगरिया में तेरो ढीट कन्हैया ....।
फागुन की तौ कहा बताऊँ,
छाँड़ै रंग घघरिया में तेरो ढीट कन्हैया ....।
भर-भर फेंट गुलाल उड़ावै,
करदे छेद बदरिया में तेरो ढीट कन्हैया ....।
ऊबट बाट अकेली घेरै,
रोकै गली संकरिया में तेरो ढीट कन्हैया ....।
बैठ कदम पै वंशी बजावै,
लै लै नाम बँसुरिया में तेरो ढीट कन्हैया ....।
भयो दिवानों फाग खेल जाय,
देखो गली बजरिया में तेरो ढीट कन्हैया ....।
कैसे कोई बचैगी याते,
डारै जाल मछरिया में तेरो ढीट कन्हैया ....।।

नई कुञ्ज निकुँजन में आजु रंगीली होरी ।
इत स्यामा उत स्याम मनोहर, खेलत उमँगि न थोरी ।।
छल बल घात लगावत मोहन, अंग बचावत गोरी ।
सावधान दोउ सुघर सिरोमनि, अपनी अपनी ओरी ।।
कोक कला कल केलि परस्पर, जोवन जोर किसोरी ।
चतुर खिलार लाड़िली लालन, तुम जिनि जानौ भोरी ।।
हा हा करौ परौ पायन, अब ना चलि हैं बरजोरी ।
भगवतरसिक उदार स्वामिनी, दै है सरबसु छोरी ।।

या में कहा लाज कौ काज खेल लै होरी रंग भरी ॥
बरस दिना में होरी आई,
रसिकन कौ ऐसी सुखदाई,
मानो बूढ़े मिली लुगाई,
मन की बतियाँ पूरी कर लै नहिं तो रहैं धरी ।
ऐसो समय फेर नाय आवै,
भागन ते फागुन रस पावै,
नीरस देख-देख खिसियावै,
सुनकैं निकर चली वह ग्वालिन मोहन नें पकरी ।
लै गुलाल वाको मुख माड़्यो
प्रेम बीज हियरे में गाड़्यो
रंग बिरंगी करके छाड़्यो
ऐसी दीख रही वह ग्वालिन जैसे फूल-छरी ।
पीताम्बर हरि कौ वह पकर्‍यो,
रंग भर्‍यो अपनो मुख पोंछ्यो,
देखै श्याम प्रेम में जकर्‍यो,
तब ते नेह जुर्‍यो ग्वालिन कौ गौहन आय परी ॥

मत डारौ अबीर गुलाल रसिया, आँखिन में मेरे करकेगो ।
अछन अछन पाछैं अलबेली, निरख नवेली बाल ॥
नयौ फाग जोबन रस भीनौ, करत अटपटे ख्याल ॥
दयासखी घनस्याम लाड़िले, भुजभर करी निहाल ॥

हरि होरी कौ खिलार आयौ सब मिल घेरो री ॥
बहुत बार याने मटकी फोरी,
दीखै जहाँ साँकरी खोरी,
सबरी घेरीं ब्रज की गोरी,
या नें बहुतै कियो बिगार याकी वंशी चोरो री ।
याद करो जब चीर चुरायौ,
ऊपर चढ़ गूंठा दिखरायौ,
सबन हाथ ऊपर जुरवायौ,
ये कैसा ऊधमगार मिल पीताम्बर छीनो री ।
आज हमारौ दांव बन्यो है,
देखौ कैसौ आज सज्यो है,
तिलक मुकुट ते खूब फब्यो है,
ठकुराई लेओ निकार याकौ रंगन बौरौ री ।
सब मिल पकरीं नन्द कौ लाला,
मगन भईं ब्रज की सब बाला,
मन की करी सबै तिहि काला,
हँस देवैं गुलचा मार राख्यौ कर चेरौ री ।

साँवरिया तेरी बृज नगरी, कैसे आऊँ रे ॥
इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच बहै जमुना गहरी ॥१॥
पाँव चलूँ तो मेरी पायल बाजे, कूद पड़ूँ तो डूबूँ सगरी ॥२॥
भर पिचकारी मेरे मुख पर डारी, भीज गई रंग से चुनरी ॥३॥
केसर कीच मच्यो आँगन में, रपट परी राधे गँवरी ॥४॥
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, चिरंजी रहो सुन्दर जारी ॥५॥

अरी होरी में है गयौ झगरौ सखियन ने मोहन पकरौ ॥
धावा बोल दियौ गिरिधारी,
नन्द गाँव के ग्वाला भारी,
छाँड़ रहे रंग की पिचकारी,
निकसत में रिपटैं सबरौ, सखियन ने ....।
सखियन के संग भानदुलारी,
लै गुलाल की पोटैं भारी,
मार रहीं हैं भई अँधियारी,
ह्वां दीखै नाही दगरौ, सखियन ने ....।
सखा भेष सखियन ने धार्‌यौ,
सबही मिलकैं बादर फार्‌यौ,
अचक जाय के फंदा डार्‌यौ,
छैला कूँ कसकैं जकरौ, सखियन ने ....।
धोखौ भयो समझ गये मोहन,
लाईं बरसाने की टोलन,
हँस हँस आईं हरि के गोहन,
गुलचन ते कर दियौ पतरौ, सखियन ने ....।
मन भाई कर लीनी हरि ते,
बतरावैं तीखी आँखन ते,
सखि रूप कर दियो पुरुष ते,
परमेश्वर कौ झरौ नखरौ, सखियन ने ....॥

श्रीबिहारी विहारिनि की (रे) मोपै यह छबि बरनी ना जाय ॥
तन मन मिले झिले मृदु रस में आनन्द उर न समाय। श्री…
रंगमहल में होरी खेलैं, अंग अंग रंग चुचाय । श्री...
श्रीहरिदास ललित छबि निरखत, सेवत नव-नव भाय॥ श्री…

मेरी अँखियन में निरदई, श्याम ने मारी मूठ गुलाल ॥
भई किरकिरी आँख हमारी,
अचक आयकें घूँघट टारी,
पूछन लग्यो कहा भयो प्यारी,
मेरी अँखियन पे पीताम्बर मलन लगे गोपाल ।
आखन ते गुलाल काढ़ै वह,
फूँक मार रस की बातें कह,
चूमै नैंन हटाये हू रह,
आग लगै होरी में ऐसो ऊधम ब्रज यहि काल ।
या विधि नित ही होरी खेलै,
रोकत टोकत ब्रज में डोलै,
बिना बुलाए मीठे बोलै,
ऐसी बात करै रस की सुन जियरा होय बिहाल ।
नन्द महर कौ बड़ौ रसीलौ,
नयौ फाग जोबन गरबीलौ,
झूमक दै नाँचै मटकीलौ,
पाय अकेली संग न छाँड़ै होरी के लै ख्याल ॥

आँख जिन आँजो हा हा ब्रजनागरि ॥
जो आँजो तो आप आँजीयै और हाथ जिन देहो ।
हाँसी हानि दुहूँ बिधि जोखौ समुझि बुझि किन लैहो ॥
सुनिहैं मेरे सखा संग के हँसि हँसि देहें तारी ।
बड़े खिलारी कहावत है हरि आँखि करायी कारी ॥
परम प्रवीन जानि पिय जियकी मृदु मुसिकाय निहारी ।
कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु कौ रीझी भरत अँकवारी ॥

रंगीली होरी आई धूम मची बरसाने ॥
छैला दूलह आज बन्यौ है,
सखा संग लै आय अर्‌यो है,
रात-दिना को खेल मच्यौ है,
नगारिन जोरी आई धूम मची बरसाने ।
ढप बाजत सुन के ब्रजनारी,
चाव भई खेलन की भारी,
निकर परीं लै भानुदुलारी,
रूप की घटा सुहाई धूम मची बरसाने ।
धाय चलीं बिन घूँघट मारै,
मतवारी अँचरा न सँवारै,
अनवट और बिछुवन छनकारें,
लगीं गावन सुखदाई धूम मची बरसाने ।
चढ़े ग्वाल जोवन मदवारे,
नाँचैं अखियन डोरा डारे,
नेंक न मानैं बकैं उघारे,
चली रंगन पिचकाई धूम मची बरसाने ।
लै हाथन फूलन की छरियाँ,
लटक लटक के मारैं सखियाँ,
सखा बचावैं लै फिरकैंयाँ,
हार ग्वालन नें पाई धूम मची बरसाने ।
कह्यो श्याम ने सुनो रे भैया,
बरसाने की चतुर लुगैया,
फगुवा देवो घर बगदैया,
जीत राधे पै छाई धूम मची बरसाने ॥

मेरे मुख पै अबीर, मेरे मुख पै अबीर, कान्हा ने कैसी मारी।
ये मारी वो मारी हाँ मारी रे ॥
काहे की लै लई पिचकारी,
काहे को नीर, काहे को नीर, कान्हा ने ....।
कंचन की लै लई पिचकारी,
रंगन को नीर, रंगन को नीर, कान्हा ने ....।
लाज छोड़ मोय दीनी गारी,
कैसे धरूँ धीर, कैसे धरूँ धीर, कान्हा ने ....।
नरम कलैया पकर मरोरी,
ऐसौ है बेपीर, ऐसौ है बेपीर, कान्हा ने ....।
हार मेरो तोर्‌यो पकर लिपटाई,
मेरो फार्‌यो चीर, मेरो फार्‌यो चीर, कान्हा ने ....।
बीरी लै मुख आप खवावै,
मारै नैनन तीर, मारै नैनन तीर, कान्हा ने ....।
ऊधम पै हू प्यारो लागै,
अचरज मेरी बीर, अचरज मेरी बीर, कान्हा ने ....।
अँखियाँ प्यासी रहैं रैन दिन,
देखन यदुवीर, देखन यदुवीर, कान्हा ने ....।
लाख लोग नगरी बसैं,
सब लागै भीर, सब लागै भीर, कान्हा ने ....।
रसिया बिना लगै सब सूनो,
छेदै शमशीर, छेदै शमशीर, कान्हा ने ....॥

होरी खेलै तो आय जैयौ बरसाने छैला श्याम ॥
मस्त महीना फागुन कौ सुन रसिया नन्दकुमार ।
मेरौ तेरौ नेह जुर्‌यो है जोवन धूँवाधार ।
तू साज बाज ते आय जैयो बरसाने छैला ....॥
इकलौ इकलौ जो खेलै तो गहवर मिलियौ लाल ।
रंग बिरंगे फूल तोर कै मारूँ तेरे गाल ।
तू मन की हौंस बुझाय जैयो बरसाने छैला ....॥
बरस दिना है माखन खायो चोरी कर घनश्याम ।
देखूँगी वा दिन तोकूँ सूधी नाय ब्रज की बाम ।
तू अपनो जोर जमाय जैयो बरसाने छैला ....॥
डारूँगी मैं रंग वैजंती हरौ गुलाबी लाल ।
भर पिचकारी मारूँ तक-तक और उड़ाऊँ गुलाल ।
तू फगुवा लैकै आय जैयो बरसाने छैला ....॥
लठामार जो खेलै प्यारे संग में लैयो ढाल ।
तक-तक लठिया मारूँ उछर बचैयो तू नन्दलाल ।
सिर पगिया बाँधे आय जैयो बरसाने छैला ....॥

होरी के खिलार भाँमते योंही जान न दैहों ॥
रंग भीनै बागे बनि आए जागे भाग हमारे
नैनन में भरि राखो फगुआन लैहौं ॥१॥
न्यारे ह्वै मुख मॉंढ़िहों अँखियाँ न अँजौहों ॥
बीरी पलटि न और की तुम लेहु काहु की
प्यारे औरें भरनन दैहों न्यारे ही खिलैहों ॥२॥
मोहनि मूरति साँमरी हँसि हृदै लगैहों ॥
सूरदास मदनमोहन सँग हिलमिल दोऊ
जलकी तरंग जैसे जलहि समैहो ॥३॥

मैं कैसे होरी खेलूँ री मन मोहन मुरली वारे ते ॥
ऊँची अटा पै रहन हमारी,
नई-नई मैं घूँघट वारी,
सबै करैं मेरी रखवारी,
फाग मच्यो ढप बाजन लागे सुन लीनी पिछवारे ते।
होरी खेल रहे गिरिधारी,
गीतन की धुनि लागै प्यारी,
सबरी रात नाचैं मतवारी,
सुन-सुन मेरी पिंडुरी काँपै फुंदना लट्क्यौ नारे ते।
जोबन की मदमाती सखियाँ,
रंग रंग की पहरैं फरियाँ,
सैन चलावैं रस की घतियाँ,
होरी कौ रस लेवैं देवैं जुलमी औगुनहारे ते ।
गली-गली में फाग मच्यौ है,
रात दिना कौ खेल जम्यौ है,
नीको छैला श्याम नच्यौ है,
झमक जाय के नाचन लागीं नन्दलाल हुरियारे ते॥

नव कुंज सदन में आज रँगीली होरी।
इत स्यामा उत स्याम मनोहर खेलत उमंग न थोरी॥१॥
छल बल घात लगावत मोहन अंग बचावत गोरी ।
सावधान दोउ सुघर सिरोमनि अपनी अपनी ओरी॥२॥
कोक कला कल केलि परस्पर जोबन जोर किसोरी ।
चतुर खिलार लाड़िली लालन तुम जनि जानहु भोरी॥३॥
हा हा करौ परौ पाँयन अब ना चलिहै बरजोरी ।
भगवत रसिक उदार स्वामिनी देहै सरबस छोरी ॥४॥

अँगिया मैं का पै रंगवाऊँ री, रंगरेजा रंग नाय जानै ।।
ऐसी अँगिया मैं रंगवाऊँ,
वाय पहर होरी खिलवाऊँ,
देखत ही रसिकन बिकवाऊँ,
फागुन खूब मनाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै ।
वा अँगिया में बाग लगाऊँ,
बेला फूल चमेली लाऊँ,
गूँथ-गूँथ के हार बनाऊँ,
छैला को पहराऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै ।
वाई में रंगवाऊँ पपैया,
पीउ पीउ की रटन लगैया,
वा में पवन चलै पुरवैया,
मोरन कूँ नचवाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै ।
वा अँगिया में महल रंगाऊँ,
वा में पचरंग पलँग बिछाऊँ,
गिलम गलीचा तकिया लाऊँ,
वा में प्रियतम पाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै ।

सखी सब है गई लाल ही लाल ।
ऐसौ रंग चल्यौ पिचकारिन, ऐसी उड़यौ गुलाल ।।
लाली लाल लाल भये लालहु, लाल भईं बृजबाल ।।
तरुवर लाल लाल भये सरवर, शुक पिक लाल मराल ।।
धेनु लाल बृजरेनु लाल भई, लाल भये सब ग्वाल ।।
श्रीराधा ललितादि लाल भईं, लाल भये गोपाल ।।

होरी आई री, बिरज में होरी आई री ।
गैल गिरारे होरी है रही, घर घर छाई री ॥
अपनी अपनी जोट लाग ते सब कोई खेलैं फाग,
बड़ौ अनोखौ नन्द महर को जोट न देखै लाग ।
कोई खेलै छिरका छिरकी पिचकारी लै मार,
मोहन ऐसी होरी खेलै गागर सिर पै ढार ।
रंग-रंग के लियो गुलालन मूठ मूठ रहे मार,
नन्द को ऐसो भायौ खिलारी भर-भर पोटैं मार ।
कोई उझकै सैन चलावै घूँघट देय उघार,
नन्द को ऐसो है मदमातौ चोली देवै फार ।
कोई छांडै हरो गुलाबी रंग बैजंती लाल,
श्याम रंग में भीतर बाहर रंग दीनी गोपाल ।
सबै रंग मिट जावैं होरी के धोये एक बार,
श्याम रंग दिन दूनो निखरै धोऔ बार हजार ॥

हरि कौ सुख विलसि, असीस सुनावति सजनी ।
दम्पति भरि अनुराग, विपिन संतत दिन रजनी ॥
कौतिक नाना रचत, सींव कानन नहिं तजनी ।
वृन्दावन हित रूप, धन्य जे इहिं सुख भजनी ॥

होरी खेल अति रँगमगे ।
किए सब अभिलाष पूरन, कुँज मारग लगे ॥
वारि पहुपांजुलि सखी, अलसात रजनी जगे ।
वृन्दावन हित रूप पौढ़े, केलि रस जगमगे ॥

चढ़ के नन्द गाँव पै आईं गोपी बरसाने वारी ॥
नंद भवन घेर्‌यो है जाई,
ऊपर चढ़ के छिपे कन्हाई,
पकरी जाय यशोदा माई,
कहाँ छिपाये कुँवर आपने बोलो महतारी ।
हमें दिखाओ अपने लाला,
किये लाल यशुदा के गाला,
रंगन करीं महर बेहाला,
दियौ बताय यशोदा ऊपर ढूँधौ गिरिधारी ।
ऊपर चढ़ पकरी मन मोहन,
सब मिलके लागी हैं गोहन,
गुलचा दिये कटीली भौंहन,
कैसे आय छिप्यौ होरी में भड़ुआ बटमारी ।
छीन लई मुरली पीताम्बर,
दियो ओढ़ाय रंगीली चूनर,
लहँगा फरिया मोतिन झालर,
काजर बेंदी कमर कौंधनी करी एक नारी ।
सब मिलि घूँघट मार नचावैं,
यशुदा की छोरी बतरावैं,
देख-देख सब हँसैं हँसावैं,
यशुदा की गोदी बैठारी लाली है प्यारी ।
मैया भेद समझ न पाई,
बहू श्याम की यह मन भाई,
या आसा दुलरावै माई,
चूमत समझ हँसी सब गोपीं हँसैं देय तारी ॥

राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ।
नंदलाल ब्रजबाल होरी खेलैं ।।
बरसाने में पकरि कृष्ण को छीन पीताम्बर छीनी मुरली,
भर पिचकारी गालन मारी नैनन मारी छतियन मारी ।
सरररररररर , राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ।।
अँखियन में कजरा जू लगायो, रंगबिरंगो भडुवा कर दियो,
फगुवा लै के गुलचा मारै बोली ऐयो फिर खेलन कूँ ।
अरररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ।।
छूट के आये ह्यां मनमोहन खीजीं सब ग्वालन की टोलन,
भर-भर पोट लदे अपने सिर रहे उड़ाय अबीर की झोरन ।
झरररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ।।
लाल भई सब गोपी जमुना लाल भई सब बादर लाल,
लाल चूनरी लालइ सारी लाल भई मोतियन की माल ।
लरररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं ।।

आज देखो रँग है रँग है रँग है, रसिकन्ह केरो सँग है ।।
रँग है मथुरा रँग वृन्दावन, कुञ्ज गलिन में रँग है ।।१।।
रंगहि महलन रंगहि मजलस, रंग बदन सब अँग है ।।२।।
रँग गढ़ गोकुल रँग बरसानो, रंग श्री गोवरधन है ।।३।।
'सूरदास' रँग गावत जाके, राधा कृष्ण को सँग है ।।४।।

तेरे जौवन कौ मन मोहन है रिझवार ।।
रूप सलौनी व गज गौनी, रूप जौवन दिन चार ।
भावँर सी फिरवौ करौ, यह तुम्हरौ क्यौ हार ।
"दया सखी" घनश्याम लाल सों, मिलले गल भुजडार ।

मदन मोहन की यार गोरी गूजरी ।
सब ब्रज के टोकत रहै, ताते निकसी घूँघट मारि ।।
जो कोऊ झूठे कहे, आये मदन मुरारि ।
रहि न सकै इत उत तकै, दुरि देखे बदन उघार ।।
तनसुख की सारी लसै हो, कंचन सौ तन पाइ ।
मनो दामिनि की देह सौ, हो रही जोन्ह लिपटाइ ।।
धरति पगति लाली फवै, मरै ढरै रित जाइ ।
काच करौती जल रंग्यौ, कहु यहै जुगत ठहराइ ।।
कटि नितंब ढिंग पातरौ, हो उरज भार अधिकाइ ।
लग्यौ लंक मनु लाल कौ, वाकी लचकनि लचक्यो जाइ ।।
वरन-वरन पट पलटई हो, नूतन-नूतन रंग ।
तब इत उत निकसत फिरत, हरिहि दिखावै रंग ।।
छूटी अलक नैंना बड़े हो, ओप्यो सो मुख इंदु ।
अरुन अधर मुसकात से दिये, भाल सिंदूर को बिंदु ।।
लगन लगी नंदलाल सों ही, करे निर्वाहन काज ।
चढ़्यौ चाक चित चतुर कौ, वाके प्रेमहि आयो राज ।।
लाल लखें लालच बढ़े, उत त्रास पियै पियराइ ।
यह संजोगिनि विरहिनी ताते, अरुझी बीच सुभोइ ।।
नर नारी एकतं भए हो, मिलि-मिलि करैं चबाव ।
सिरोमनि प्रभु दोउ सुनै, ताते बढ़े चौगुने चाब ।।

होरी खेलि खेलि रस छाके।
रचति हैं चोंज रसिकनी नागरि, लाल रसिक रिझवार सदा के ।।
कबहूँ हो-हो कहि उर उरझत, परबस आइ परत अबला के ।
वृन्दावन हित रूप कहा कहौं, फागुन कौतिक चरित लला के ।।

मेरे मन की समझै कौन जूझ रहे रेलापेली में ॥
लोग यहाँ लाखन जुरे होरी के खिलवार,
रस को मरम न जानही जानैं कहा गमार ।
चिपट जाय गुड़ की भेली में ॥ मेरे मन की ...
रूप देख सब कोऊ खिचैं जो घूँघट बिच होय,
सांची प्रीति पतंग की तन मन डारै खोय ।
लिपट जाय अगिन नवेली में ॥ मेरे मन की ...
यह जोबन दिन चार कौ थोरे याके खेल,
रसिया को रस जो पिये अमर होय यह बेल ।
रसिक क्यो बिक गयो धेली में ॥ मेरे मन की ...
गुड़ की भरी परात ते मिश्री की एक डरी,
मोधू की सब रात बुरी छैला की एक घरी ।
धर्‍यो का ठेला ठेली में ॥ मेरे मन की ...
बाँको रसिया नान कौ बाँकौ वा कौ प्रेम,
जाकौ जग फीको लगै सोई साधै नेम ।
चढ़े गिरिधर की हवेली में ॥ मेरे मन की ...

खेलें स्यामा-स्याम री आज कुंजन में होरी ।
नंदगाम सों आये सखा सब बरसाने की बाम री ॥१॥
गहवरवन और खोरसाँकरी कुँज कुटी निज धाम री ॥
राधे कूँ मनमोहन कीये मोहन बनाय दिये नारि री ॥२॥
हाथन मेंहँदी पाँय महावर बेंदी लगाय दई भाल री ॥
कहत दास नवनीत पियारौ जपूँ तिहारौ नाम री ॥३॥

राधे श्री वृषभान किशोरी।
खेलत फाग स्यामसुन्दर सौं, त्रियनि तिलक मणि गोरी ॥१॥
वृन्दावन में खेल रच्यौ है, सखिनु मंडली जोरी ।
ललित-विशाखा चंपक-चित्रा, रंगनि भरैं कमोरी ॥२॥
तुंगविद्या - इँदुलेखा - जूथनि, केसरि अरगज घोरी ।
रंगदेवी अरु सुदेवी भरि लई, अबीर गुलालनि झोरी ॥३॥
हित चित विर्ति खिलावति चौंपनि, मन मिलि भई दुहुँ ओरी ।
बाजे विविध बजावैं गावैं, तान जुगल - रस - बोरी ॥४॥
मोर मुकट सिर धरैं साँवरौ, ओढ़ैं पीत पिछौरी ।
प्यारी - सीस चन्द्रिका सोहै, निर्त्तति बाहाँ जोरी ॥५॥
इत उत चलत गुलाल - पोटरी, रंग - पिचकारी छोरी ।
थेई-थेई हो-हो कहि मुख माँडति, मुसिकति भौंह मरोरी ॥६॥
हितरूपी सखि आइ अचानक, गाँठ दुहुँनि की जोरी ।
झूमक नाच नचावति हँसि-हँसि, लै बलाइ तृन तोरी ॥७॥
कहा वरनौं शोभा सुख सरसनि, जो रस बरस्यौ होरी ।
वृन्दावन हित राधावल्लभ, मुख-शशि नैन-चकोरी ॥८॥

मैं होरी कैसे खेलूँरी या सांवरिया के संग,
सांवरिया के संग अरी या बावरिया के संग ।
तबला बाजै डोंरु बाजै और बाजै मौचंग,
श्यामसुन्दर की मुरली बाजै, है गये आनंद कन्द ।
कोरे-कोरे कलश भराये, उनमें घोरयौ रंग,
भर पिचकारी सनमुख मारी, चोली है गई तंग
अरे मेरी अंगिया है गयी तंग ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में, सखियन ठाड़े झुण्ड,
'चन्द्रसखी' भज बाल कृष्णछवि, मोहन नाचै संग ।

आज है रई रे, आज है रई रे रंगीली होरी,
रंगीली होरी, रंगीली होरी, आज है रई रे,
आज है रई रे आज है रई रे रंगीली होरी ।
अपने री अपने मंदिर सौं निकरी,
कोई साँवल कोई गोरी, अरे हेरे लाल कोई सांवल कोई गोरी
आज है रही रे आज है रई रे रंगीली होरी ॥१॥
बाजत ताल मृदंग झांझ ढ़प,
हेरे लाल और नगारे की जोरी, आज है रई रे
आज है रई रे आज है रई रे रंगीली होरी ॥२॥
उड़त गुलाल लाल भये बादर,
मारत भर भर झोरी अरे हेरे लाला मारत भर भर झोरी
आज है रई रे आज है रही रे रंगीली होरी ॥३॥
पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत
चिरंजीबौ यह जोरी अरे हेरे लाला चिरंजी रहौ यह जोरी
आज़ है रही रे आज है रई रे रंगीली होरी ॥४॥

काल तुम हाहा कर छूटे हौ मोहन आज वही ढंग लीने,
इतने में कहा भूल गये हौ परम चतुर रंग भीने ॥
भर होरी में हौं नहीं बोलौ, गारी गलौज़न सगरे महीने ॥
ढीट लंगर तुम कबके भये हौ, रहत सदा रंग लीने ॥
बाबा बृषभान के द्वार मची होरी।
उत में ठाड़े कुँवर कन्हैया, इत ठाड़ी राधा गोरी-बाबा भान के ॥१॥
पाँच बरस के कुँबर कन्हैया, सात बरस राधा गोरी-बाबा भान के ॥२॥
हाथन लाल गुलाल फेंट कटि, डारत है भर भर झोरी-बाबा भान के ॥३॥
सूरदास ब्रज वासिन कारन, अविचल रहियो यह जोरी-बाबा भान के ॥४॥

आयौ है फागुन मास सखी उमग्यौ मन मेरौ, आयौ है फागुन मास... ।

सबरी सखी मिल चलौ नंदगृह कृष्ण कृष्ण कहै टेरौ ।
घर न मिले तो सघन बन ढ़ूड़ौ, गैल घाट सब घेरौ ।
जाय कर राखौ चेरौ, आयौ है फागुन मास,
सखी उमग्यो मन मेरौ, आयौ है फागुन मास ॥१॥
जाय छोटो मत जानौ सखी यामें गुन है घनेरौ ।
गोकुल कौ यह कान्ह कहावत, ठाकुर सब बृज केरौ ।
कहा तुम खाओगी थपेरौ, आयौ है फागुन मास
सखी उमग्यो मन मेरौ, आयौ है फागुन मास ॥२॥
पहलै याकौ मंत्र सीखो री, फिर कारें कूँ छेंड़ौ ।
ना जानू कहूँ लहर चढ़ि आवै, छूटेगो गाँम वसेरौ ।
कहा बिगरें गौ तेरौ, आयौ है फागुन मास ॥३॥
प्रेम मंत्र ते बसकर मोहन कर राख्यौ दृगन बसेरौ ।
दया सखी बिन मोहन देखै, धीर धरै न उर मेरौ ।
यही जिय कौ उरझेरौ, आयौ है फागुन मास ॥४॥

गोरी सजले रसिया आयो ।

बरस दिना में रसिया आयो, तेरो नीठ-नीठ घर पायो ।
आयो है तो आ पातरिया, मैंने पचरंग पलंग बिछायो ।
तातो पानी धरो तपेलो, अपने हाथ न्हायो ।
पतरी ते पतरी पोई फुलकिया, जाके ऊपर ते घी चुवायो ।
सांचो रसिया झूंठ न बोलै, अपने हाथ जिमायो ।
चन्द्रसखी भज बाल कृष्ण छवि, हरि चरनन चित लायो ।

गावें दै दै तारियाँ हो, ब्रज की नारियाँ सुकमार ।
नंद के लाल में हो, ब्रज के चंद में रसगार ।
मिल बरसाने की गोरी, गारी गावें नवल किशोरी ।
तुम सुनो नंद के नंदा, तुम सौ पूछे ब्रज चंदा ॥१॥
गोरे नंद जशोदा मैया, तुम कारे कौन के छैया ।
सौधे न्हाय जशोदा रानी, काहू कारे सौ रति मानी ॥२॥
अब जसुमत कौ ग्रह आनों, यह मिले आय वृषभाने ।
ये नंद वृषभान सनेही, ये एक प्राण द्वै देही ॥३॥
तेरी बहिन छैल छिलकारी, याकी श्रीदामा ते यारी ।
बर बरीयशी तेरी दादी, वह सदाँ उन्मादी ॥४॥
लाला है पटुला तेरी नानी, वाकी बात न हमसौ छानी ।
नंद नंदन तेरी भूआ, वह करें झूठ के पूआ ॥५॥
लाला अति चंचल तेरी काकी, वह काम कला में बाँकी ।
तेरी बड़ी धुरन्दर मामी, वह तो सब अबरन में नामी ॥६॥
बड़ बड़दानी तेरी मौसी, वह रहत सदाँ मन हौसी ।
तेरी बड़ी विनोदिन ताई, बाकी सब कोई करें बड़ाई ॥७॥
मद मतवारी तेरी भाभी, वह अनत अनत सौ लागी ।
तेरी बंद जनन की बहू, है रसकन ऐसी गऊ ॥८॥
अब सब नन्द गाम की बाला, ये बरसाने के लाला ।
गठ जोड़ो आन करावौ, हथलेवो हमें दिवावौ ॥९॥
हम देख देख सुख पाँवे, यह ब्याह की गारी सुनामें ।
यह लगन सुलछन आयों, पाड़ें कौ न्यौत बुलायौ ॥१०॥
दिन आठ फाग के नीके, ये मोद बढ़ामें जी के ।
पट ओटी है राधा प्यारी, ये हँसे कुँमर सुन गारी ॥११॥
रस सिन्ध बढयौ अति भारी, याय जाने कुंज बिहारी ।
सुन गारी नंद के लाला, तिन दई सबनि मनिमाला ॥१२॥
चिरजीवौ यह रस जोरी, नंद नंदन भान किशोरी ।
यह रहस किशोरी दास गावै, बृजवास माधुरी पावै ॥१३॥

होरी के खिलैया यार फगुना जाय मत रे ।
जो तू रे फगना जायगौ रे, तोय राखुगी नैन सम्हार,
फगुना जाय मत रे होरी के खिलैया यार ॥१॥
लप लप जल गोरी भरै रे, याकौ मल-मल रसिया न्हाय,
बला रे याकौ मल-मल रसिया न्हाय फगुना जाय मत रे ।
होरी के खिलैया यार फगुना जाय मत रे ॥२॥
होरी चली अपने बाप कै रे, रसिया सोय गयौ पाँव पसार,
बलारे रसिया सोय गयौ पाँव पसार, फगना जाय मत रे ।
होरी के खिलैया यार, फगुना जाय मत रे ॥३॥
पुरुषोत्तम प्रभू की छबि निरखत, चिरजीयौ जुगल सरकार,
फगुना जाय मत रे, होरी के खिलैया यार ॥४॥

रंग बरसे आज अपार रंगीली होरी में ।
होरी रंग में, रंग में होरी, मची है धूम धमाल रंगीली होरी में ।
बरसाने की कुँवरि किशोरी, नन्द बाबा को ढीठ गोपाल ॥ रंगीली होरी..
मैं तो भोरी-भारी गुजरिया, पीछे पड़ गयो नन्द को लाल ॥
लाज शरम याने सगरी छोड़ी, मोरी चूनर कर दई लाल ॥
गोप ग्वाल ढप ढोल बजावैं, सब सखियाँ दै रही ताल ॥
केसर कीच मलौ गालन पै, कारै को कर दो लाल ॥
दै दै सोट याकी बंसी तोड़ो, याहे कर दो री बेहाल ॥
फगवा दिए बिन जाने न दैहों, सब लूट लियो गोपाल ॥

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाईं परत, स्याम हरित दुति होय ॥

होली आई रे ।

होली बरसाने में आई, सारे ब्रज में धूम मचाई,
खेले राधा और कन्हाई ॥
गोविन्द होली को है रसिया, राधेरानी के मन बसिया,
गोप्यां रंग सुरंग उड़ावै रे ॥
सखियाँ डोली भर-भर मारी, भींगे साँवरिया गिरधारी,
राधे हँसकर नजर उतारी रे ॥
राधे भर ल्याई पिचकारी, वो तो रूप देखि सुधि हारी,
हो रही कान्हा पे मतवारी रे ॥
गिरधर पिचकारी लै मारी, भीगी राधा तन मन सारी,
मीठी देवे सब सखि गारी रे ॥
खेले राधा संग बनवारी, नाचैं-गावैं सब नर-नारी,
जोरी सुन्दर लागे अति प्यारी रे ॥
होली म्हाने भी खेलावो, राधे ग्वाल गोपियाँ लावो,
किरपा भरियो रंग उड़ावो रे ॥

पनघट को श्याम बड़ो रसियो ॥

गांछा की ओट छिपै मनमोहन,
गोप्यांने रोज रिझाबै रसियो ॥ पनघट... ॥१॥
सब सखियाँ जल भरने आई,
मोहन में बाँको मन फँसियो ॥ पनघट... ॥२॥
हँस-हँस मीठी बात बणावत,
श्यामसुन्दर से मन फँसियो ॥ पनघट... ॥३॥
माँगत दान कान्ह गोपियन से,
गागर फोड़ श्याम हँसियो ॥ पनघट... ॥४॥
रामसखी सरणागत आई,
चरणकमल में चित बसियो ॥ पनघट... ॥५॥

आयौ फागुन मास सखी उमग्यौ है मन मेरौ ।
सगरी सखी मिल चलौ नन्द घर कृष्ण-कृष्ण कह टेरौ ।
घर न मिलै तौ सघन बन ढूड़ौ गैल घाट सब घेरौ
पाहै राखौ कर चेरौ ।
पहलें याकौ मंत्र विचारौ फिर कारे कूं छेरौ ।
ना जाने कहूँ जहर चढि आवै छूटेगौ गांम बसेरौ
सखी कहा बिगरैगौ तेरौ ।
या है छोटौ मत जानौ सखी री यामें गुण जो घनेरौ ।
गोकुल कौ यह कान्हा कहावै, ठाकुर सब ब्रज केरौ ।
कहा मुँह खाऔगी थपेरौ ।

शंकर खेलत होरी, सदा शिव खेलत होरी ।
शंकर खेलैं महादेव खेलैं, खेलैं गनपति गौरी,
आसपास बंदीजन खेलैं, तौ मुख सों बोलत होरी ।
सदा शिव खेलत होरी ॥
आक धतूरे के बैल भरे हैं, भांग सो भर लई झोरी,
केसर सों तूमा भर लियौ, तौ या विधि खेलत होरी ।
सदा शिव खेलत होरी ॥

चल देखियै बरसाने जहाँ मची रंगीली होरी ।
निकसी भवन-भवन ते लीयें गुलाल रोरी ।
मुनियान की सी पाँते सब प्रेम रंग बोरी ॥
अबीर की घुमडन में पकरे हैं नन्दलाला ।
फगुआ हमारौ दीजै यों हँस कहै ब्रजबाला ॥
फगुआ दियौ निबेरी वृषभान की किशोरी ।
‘कल्याण’ के प्रभु प्यारे चिरंजीवी रहै यह जोरी ॥

सब मिल खेलौ फाग होरी माई विदा होत है ।
ब्रज की वधू सब जुरि मिल आई करि सोलह श्रृंगार ।
चोबा चन्दन और अरगजा रंग की उड़त फुहार ।
'बृज दूल्है' यह छैल अनोंखौ चिरजीवौ सकल समाज ।

अइयौ-अइयौ रे कन्हैया नन्दलाल रंगीली होरी में ।
ऊंचौ गांम धांम बरसानौ खेलें गोपी ग्वाल ।
दुलहिन प्यारी राधिका रे दुल्है नन्द कुमार ॥
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी रंग की उड़त फुहार ।
पिचकारी याकी छीन के रे गालन मल्यौ है गुलाल ॥
यह सुख कहिवै कौ न सरस्वती कोटित सुमति हिराय ।
यह सुख रमा तनक नहि पायौ जदपि पलोटत पांय ॥
जो सुख शेष महेश न पायौ अज अजहू पछताय ।
ये बडभाग सकल ब्रज बनिता हम मुख कही न जाय ॥
श्री वृषभानु सुता पद अम्बुज इनके सदा सहाय ।
यह रस मगन रहत जे निसदिन तिनपर 'नन्ददास' बलिजाय ॥

ऐसी होरी मचाई दीना नाथ विरज आनंद भये ।
उड़त गुलाल लाल भये बादर सब रंग होत नये ।
सबरी सखियां रंग में बोरी भूषन भीज गये ।

चल देखिये बरसाने जहाँ मची रंगीली होरी ।
निकसी भवन-भवन ते लीये गुलाल रोरी
मुनियान की सी पाँते सब प्रेम रंग बोरी ।
अबीर की घुमड़न में पकरे हैं नन्दलाला
फगुआ हमारौ दीज्यो यौ हँस कहै ब्रजबाला ।
फगुआ दियौ निबेरी वृषभानु की किशोरी
'कल्याण' के प्रभु प्यारे चिरंजीव रहै यह जोरी ।

राग रंग गह गई मच्यौ री नन्दराय दरबार ।
गाय खेलि हस लीजिये फाग बडौ त्यौहार ।
तिन में मोहन अति बने नाचत हैं सब ग्वाल,
बाजे बहु विधि बाजही रुंज मुरज ढफ ताल ।
मुरली मुकुट विराजही कटि पर बाँधे पीत,
नृत्यत आवत 'ताज' के प्रभु गावत होरी गीत ।

अँगना ते छैल बगद गयौ री, अँगना ते ।
अरी हे नींद तोय वारूँ तैने नैंक ना दई हूँ जगाय
मेरौ आयौ है प्रीतम यार मैं तौ भर लोटा जल कौं दैंती।
अरे हे बारे रसिया, राधा प्यारी के महलन आ
हमारी सेजरिया रंगीली, सेजन पै कामिन हवै रहती ।
अरे हे अरे बारे रसिया, राधा प्यारी के बागन आ
हमारी कली-कली रंग ला, बागन में मालिन हवै रहती ।
अरे हे नन्द के लाला, तो पै मोर मुकुट और माला
तेरे या छवि की दर्शन करती ।
अरे हे छैल गिरधारी, तो पै दया सखी बलिहारी
तेरे चरनन की ह्वै रहती ।

चल्यो अइयो मेरे होरी के खिलार नहीं तो मेरे मन की मन में रह जाएगी, मेरी चूनर कोरी रह जाएगी चलो................. ॥
तेरी बाट तकत नैना हारे, मैं तो बैठी हूँ मन कूँ मार ॥
मोपै सुन२ रह्यो न जावै री, वाके सुन ढफ की धुधकार ॥
बैरी फगुना तू मत जइयो, जब तक नहिं आवै मेरो यार ॥
मैं यार के संग होरी खेलूँ, मैं तो मिलिहों भुजा पसार ॥

पकरौ री ब्रजराज साँवरौ होली खेलन आयौ है ।
संग में अति उत्पाती ग्वाल,
हाथ पिचकारी फैंट गुलाल,
नाच रहे ढफ बजाय दैताल कमोरी रंगन की भर लायो है ।
लैऔ पिचकारी सबही छिनाय,
श्याम कूं गोपी दिओ बनाय,
कंचुकी कटि लहँगा पहराय करौ सबही अपनों मन भायौ है ।
एक हू ग्वाल जाय नहीं भाज,
मलो मुख ऊपर गोबर आज,
लाज को होरी में कहा काज बड़े भागिन ते फागुन आयौ है ।
दई आज्ञा वृषभान कुमारि,
है गई सावधान ब्रजनारि,
आय गए तबहीं कृष्णमुरार हो हो होरी शब्द सुनायो है ।
फैट ते लियौ गुलाल निकार,
दियौ राधे के ऊपर डार,
सखीन के मुँहड़े दिए बिगार सखन ने हल्ला खूब मचायौ है ।
उड़ायौ भरभर मुट्ठी गुलाल,
है गये धरती बादल लाल,
कूद रहे हो हो कर के ग्वाल दाव ब्रजगोपिन ने जब पायौ है ।
भाज के मोहन पकरे धाय,
गाल पै गुलचा दियौ जमाय,
लई पिचकारी तुरत छिडाय साँवरौ गोपी आज बनायौ है ।
चतुरता सबही दई भुलाय,
साँवरो नैनन हा-हा खाय,
किशोरी रही मंद मुसक्याय नन्द को घूँघट मार नचायौ है ।

फाग खेलन बरसाने में आये हैं नटवर नन्द किशोर ।
घेर लई सब गली रंगीली,
छाय रही है छटा छबीली,
ढप ढोल मृदंग बजाये हैं वंशी की घनघोर ।
जुरमिल के सब सखियाँ आईं,
उमड़ी घटा अम्बर में छाईं,
जिन अबीर गुलाल उड़ाये हैं मारत भरि-भरि कोर ।
लै रहे चोट ग्वाल ढालन पे,
केसर कीच मेले गुलाल पे,
हरियल बाँस मँगाए हैं चलन लगे चहुँ ओर ।
भई अबीर की घोर अँधियारी,
दीखत नहीं कोऊ नर और नारी,
राधे ने सैन चलाये हैं पकरे हैं माखन चोर ।
राधे ने पकरे हैं गिरधारी,
नर ते श्याम बनाय दिए नारी,
कटि लहँगा पहराये हैं दै काजर की कोर ।
लाला घर जानौ चाहो,
तो होरी कौ फगुआ लाओ,
श्याम ने सखा बुलाये हैं बाँटत भर-भर कोर ।
घर के हा-हा खाओ,
सब सखियन को घर पहुँचावो,
घासीराम कवि गाये हैं भयो कविता को छोर ।

राधा श्रीराधा रटूँ, निसिदिन आठौं याम ।
जा उर श्रीराधा बसैं, सोइ हमारौ धाम ॥

सावन की बरसै बदरिया।
होरी में चलें पिचकारी देखौ स र र र र र र र ॥
रंग भरी मारें पिचकारी, सखियाँ सारी तरकर डारी,
याने मेरी बिगारी, हुई तर र र र र ॥
सखियन कूँ गुस्सा गयौ आई, हाथन में सब कोड़ा लाई,
कोड़न की मार फिर मारी, गए डर र र र र ॥
आज खिलाके याकूँ होरी, सखियाँ कर रही जोरा जोरी,
बाँसन की मार दी भारी, काँपे थर र र र र ॥
आज परो सखियन ते पाला, पकर लियो है नंद को लाला,

नन्द को छौना श्याम सलौना टोना कर गयो होरी में ॥
नख सिख सों श्रृंगार सभी मेरौ बिगर्‌यो होरी में ।
चटकदार चूनर में धब्बा लग गयो होरी में ॥
घूँघट खोल गुलाल दृगन में भरि गयौ होरी में ।
गोरी को सब चढ़्‌यो नशाहू उतर गयौ होरी में ॥
थर-थर कांपै बदन कि जियरा डर गयौ होरी में ।
नन्द को पूत कपूत भूत सो धरि गयौ होरी में ॥

आय गई आय गइ रे बहार-रंगाय दै केसर चुनरी मेरे यार।
लाला कौन पै पीरी-पीरी धोवती, कौन पै नारौ झुब्बादार ।
लाला कान्हा पै पीरी-पीरी धोवती, सखियन पै नारौ झुब्बादार ॥
कौन गाँव को साँवरौ, कहाँ की राधा है बरनार ।
नंदगाँव को साँवरौ, बरसाने की राधा बरनार ॥
सूरदास की बीनती, चिरजीबौ नन्द कौ लाल ॥

होरी में नैन मार गयो री कान्हा बंसी वारौ ।
मोते कहे गैल चल मेरी,
वहीं करूँगो मन की तेरी,
मोपे ऐसो रंग डार गयो री कान्हा बंसी वारौ ।
मोते कहे नाम कहा तेरौ,
कौन धाम गाम कहा तेरौ,
कुंजन में मोय बुलाय गयो री कान्हा बंसी वारौ ।
मोते कहे नाँच संग मेरे,
और हा हा खावै मेरे,
मोय अपने संग नचाय गयो री कान्हा बंसी वारौ ।
जब कुँजन में मैं आई,
वाने बाँह पकर बैठाई,
होलै-होलै बतराय गयो री कान्हा बंसी वारौ ।

सखी री दैया मारौ मोय बुलाइ लियो जाय ॥
मृग कैसे नैन याकी दाड़िम सी बत्तीसी,
पट घूँघट की ओट रही छाय ।
साँकरी गली में ठाड़ो हाँ करूँ तो हाँसी आवै,
ना करूँ तो मेरौ जिया जाय । सखी...॥
मीठो मीठो बोले मेरे आगे पीछे डोलै,
चित चितवन सों रह्यो है लुभाय ।
बैंया मरोर चोर नबल किशोर,
झकझोर दीनी कैसे करूं हाय । सखी...॥
नैना कजरारे दृग बिंदु कारे कारे,
जिया दिया मेरा छलनी बनाय ।
आग लगै या होरी के माथे,
याने चौरे में दई लुटवाय । सखी ...॥

होरी में नैन मार गई रे गोरी घूँघट वारी ॥
मोते कहे गैल चल मेरी,
वहीं करूँगी मन की तेरी,
मोपै ऐसो डोरा डार गई रे गोरी घूँघट वारी ।
कहे मोते नाम कहा तेरौ,
कौन धाम गाम कहा तेरौ,
महलन में मोय बुलाय गई रे गोरी घूँघट वारी ।
मोते कहै नाच संग मेरे,
नहिं गुलचा मारूँ तेरे,
मोय अपने संग नचाय गई रे गोरी घूँघट वारी ।
जब फगुवा लैके पहुँचौ,
वाकौ महल बड़ौ ही ऊँचौ,
वो तौ भीतर मोय बुलाय गई रे गोरी घूँघट वारी ।
जब महलन भीतर आयौ,
वानै अपने ढिंग बैठायौ,
मेरे मन की तपन बुझाय दई रे गोरी घूँघट वारी ।

मैं तो घिर गई रसिकन टोरी में, आग लगै या होरी में ॥
सारी हार सिंगार बिगार्यो, मेरौ मौहड़ो कर दियो रोरी में ।
ग्वाल बाल कोउ एक ना मानै, श्याम लगै चितचोरी में ।
रंग गुलाल उड़त चहु ओरी, केसर रंग कमोरी में ।
चूनर चौली नवरंग चूबै, नार-नार बरजोरी में ।
बाजूबंद कौ पेंच घुमायौ, मुदरी गई झकझोरी में ।

अखियाँ गुलाबी करडारी रे सैंया।
सास सुनेगी मेरी बहुत रिसायगी ननद सुनेगी देगी गारी रे सैंया।
अबीर गुलाल के थार भरे हैं भर-भर मुट्ठी मारो रे सैंया।
वृज दुल्है यह छैल अनौखौ तन मन धन बलिहारी रे सैंया।

कैसी होरी मचाई दीनानाथ विरज आनंद भये ॥
उड़त गुलाल लाल भये बादर सब रंग होत नये।
सबरी सखियाँ रंग में बोरी भूषण भीज गए ॥
झटका पटकी मत करै मोहन हो उतपात नए।
दधि की मटकी सिर ते पटकी कब-कब दान लये ॥
हीरा सखी फागुन कौ महिना उत्सव होत नये।
सब ब्रजवासी आनन्द मंगल होरी खेल नये ॥

गारी कौ बिलग जिन मान साँवरे होरी है।
एक कहोगे लाला चार सुनोगे, ग्वालिन भरी है गुमान
कहा कोई होरी है।
गैल चलत रंग डार दियौ है देख नन्द कौ लाल
कहा बार जोरी है।
चोबा चन्दन और अरगजा, पिचकारिन दई मार
मार मुख रोरी है।
श्याम हमें कहा जानत नाहीं, पूछत जान अजान
राधिका भोरी है।
अब लौ कबहु ना ब्रज में देखी नई जुरी पहचान
प्रीत नई जोरी है।

झमकि चली हैं श्यामा, भरनि गुलाल री ।
पाई हरि होरी बोलें, मोहनलाल री ॥१॥
साधी है पिचक रंग, चतुर खिलार री ।
छाँड़ी है छबीली गति, सनमुख धार री ॥२॥
लतनि के ओलैं- गई, कुँवरि बचाइ री ।
तारी दै सहेली लाल-ओर, चलीं धाइ री ॥३॥
मृगमद-लेपनि की, तकत हैं घात री ।
प्रीतम कहत छल-भेदनि, की बात री ॥४॥
ह्वै गई हैं सखी तरु-पाँतिनु, की ओट री ।
औचक करी हैं तकि, गेंदनि की चोट री ॥५॥
रवकि चले हैं श्याम, तिनहीं की ओर री ।
पाछैं तें लड़ैती धाई, सखियनि जोर री ॥६॥
गहि रंग भाजन, ढुरावति हैं सीस री ।
लाईं भरि वाथिनु, सहेली दस बीस री ॥७॥
सखिनु सिखाइ किये, अपनैं सैं भेष री ।
वृन्दावन हित रूप, प्यारी हँसी देख री ॥८॥

होरी खेलन चली रे वृषभानु की लली ॥
माथे बिंदिया चम-चम चमकै,
नयना कजरा रेख भली वृषभानु की लली ॥
मखमल अँगियाँ धानी रे चुनरिया,
नक बेसर गल माल डली वृषभानु की लली ॥
संग सहेली चली मदमाती,
ढफ ढोलन से गूजी गली वृषभानु की लली ॥
काहू छोड़े रंग स र र र,
काहू के अबीर गुलाल मली वृषभानु की लली ॥
कुंजन वन में घिरे नन्दलाला,
छलिया मदन की एक न चली वृषभानु की लली ॥

खेलत सुंदरस्याम सखिन सँग ब्रजरस होरी।
भरि पिचकारी चोबा चंदन रँग भरि केसर रोरी,
डारत सखियन अंग स्याम नटवर तन सब मिलि गोरी।
मच्यौ घमसान घनो री॥१॥
भूमि लाल नभ लाल ललित रँग सब दिसि लाल छयौ री,
लाल लता तरु लाल सुमन फल निधिबन लाल भयौ री।
आन कोउ रँग ना रह्यौ री॥२॥
मोर चकोर लाल भए अलिकुल रंग गुलाल लह्यौ री,
लाल निकुंज लाल सुक कोकिल लाल रसाल बन्यो री।
लाल ही बीज बयौ री॥३॥
लाल दिवस निसि लाल सूरज ससि लाल छितिज सु छयौ री,
लाल सलिल कालिंदी सोभित लाल बयार बह्यौ री।
लाल दधि दूध मह्यौ री॥४॥
लाल स्वर्णजुत लाल सु मरकत बसन जु बेस बन्यो री,
लाल अलक दृग पलक लाल भई लाल सुबचन कह्यौ री।
लाल ही लाल सुन्यो री॥५॥
ललना लाल लाल भए दोऊ सखी लाल रँग बोरी,
नील पीत पट चुनरी पगरी सबै लाल रंग घोरी।
सकल जग लाल भयौ री॥६॥

श्याम ने खेली मोते होरी रे, राम कसम सरमाय गई मैं॥
अपनी बिरियां सब रंग डारो, जब मैंने गुलाल सम्हारो,
मेरी बहियां पकर मरोरी रे, राम कसम... ॥
देख मेरी सूरत मतवारी, हँसी उड़ावै ब्रज की नारी,
मोते कहे तू छिछोरी रे, राम कसम...॥
सास हजारन गारी देगी, मेरी ननद बिजुरिया यो बरजैगी,
चूल्हे में जाय ऐसी होरी रे, राम कसम...॥

वृषभानु की लली, साँवरिया से नेहरा लगाय के चली ॥
आजा रे अहीर के तू हमरी गली,
चन्दन छिरकूँगी लाला तेरी पगरी ॥१॥
कोरी कोरी मटुकी दूध सौं भरी,
रंगमहल में श्यामा प्यारीजू खड़ी ॥२॥
हाथन में गजरे गुलाब की छड़ी,
ठाढ़े रहो लालजी मैं कब की खड़ी ॥३॥
नैनन में कजरा ओ मुख भर्यो पान,
वारी सी कमर स्यामा बड़ो ही गुमान ॥४॥
वृन्दावन कुञ्जन में रच्यो महारास,
यह धुनि गावै स्वामी कान्हरदास ॥५॥

समझावें मन्दोदरी, जोड़ै दोऊ हात ।
बैर कियौ है राम तें, अच्छी नाय यह बात ॥
पिया तैनै मेरी एक न मानी ।
उनकी जानकिए तुम हरलाये । वे हरि अन्तरयामी ॥
सुपनौ एक मनोहर देख्यौ । लंका होय बिरानी ॥
नौ चौ हल, दल चढ़ राम के । हनूमान अगवानी ॥
आय दिये सागर पै डेरा । लाल ध्वजा फहरानी ॥
या सागर कौ बल राख्यौ है । याहू पै सिला तरानी ॥
सागर पार कियौ है छिन में । महिमा कोऊ न जानी ॥
आयौ दूत राम कौ भेज्यौ । दियौ ज्ञान नाय मानी ॥
रोप्यौ पाँव तुम्हारे आगै । है कोई वीर महानी ॥
बड़े बड़े योधा उठ धाये । लाज है गई पानी ॥
तुलसीदास आस रघुवर की । अबहूँ चेत अज्ञानी ॥

साँवरो अजहू नहिं आयौ ।।
लिखी ये पतियाँ छतियाँ लगाऊँ उद्धव सखा पठायौ,
कहा करूँ बिसवास रहूँगी फिरि संदेश न आयौ ।
मोहि बिष घोर पिवायौ ।।१।।
क्रूर अक्रूर कहाँ सों आयौ घर-घर होरी जरायौ,
इक होरी मेरे अंग जरत है सुपनेहु सुख ना पायौ ।
मास फिर फागुन आयौ ।।२।।
ब्रज-बनितन कौ सँग छाँड़ि कें मधुपुर जाय बसायौ,
दासी कुँ पटरानी कीनी गोपीनाथ कौ नाम लजायौ ।
कंत कुबिजा कौ कहायौ ।।३।।
आपतौ जाय मधुपुरी छाये हमकूँ जोग पठायौ,
हमकूँ जोग भोग कुबिजा कूँ ऐसौ निठुर कहायौ ।
आखिर अहीर कौ जायौ ।।४।।
तड़प तड़प ब्रज छोड़ राधिका कृष्ण मधुपुरी छायौ ।।
सूरदास अबला की अरज है कियौ आप मन भायौ,
जरे पर लौन लगायौ ।।५।।

मिलि खेलत फाग बढ़्यो अनुराग, सुराग सनी सुख की रमकै ।
कर कुम कुम लेकर कंज मुखी, प्रिय ऊपर फेंकनि कूँ तकि कै ।।
रसखानि गुलाल की धूमर में, ब्रज बालनि की दतियां दमकै ।
मनौ सावन सांझ ललाई के झाँझ, चहुँ दिसतें चपला चमकै ।।

ननदी कू आपै आसन जोगी को जल भरूँ कै रीती जाऊँ ।।
वा जोगीनें मेरी बैयाँ मरोरी मैं लाजन मर मर जाऊँ ।।१।।
घाट घाट पै धूनी रमाई औ घट भरन न जाऊँ ।।
ढाक के दौना मगद के लडुआ, जोगीरा खबावन जाऊँ ।।२।।

राधा सखियन सों कहे सुनो सब गोरी ।
मोहन को घेरो आज निकारो या की होरी ॥
हिलमिल कर सबही चलो श्याम को पकड़ो ।
याके मुख पर मलो गुलाल कमर कूँ जकड़ो ।
फिर हमसों जाय कहाँ भाग श्याम नहिं तगड़ो ।
नहिं छोड़ेंगी हम सहज होय चाहे झगड़ो ।
अब आयो फागुन मास रहें क्यों कोरी ॥१॥
यशुदा को अनोखो छैल रंग यापे डारो ।
याहि करदेवो रंग विरंग न हिम्मत हारो ।
मनसुख जो आवे और कहूँ ब्रजमारो ।
कौरन की मारो मार के होस बिगारो ।
अब नहिं बैठेंगी चुप्प बनी हम भोरी ॥२॥
इतने में देखे श्याम सखी सब धाई ।
पकरे मोहन के हात संग ले आई ।
सब घेर लई नटवर को सुधि बिसराई ।
अब कहाँ तुम्हारी मात जो लेत छुड़ाई ।
सब भर-भर डारे रंग गुलाल की झोरी ॥३॥
सखियन ने मोहन दीन्हें नारि बनाई ।
लखि करके लीला कृष्णदास हरषाई ।
नित बसो दृगन में जुगल रंग भरि जोरी ।
नित बनी रहो यह जुगल रंग भरि जोरी ॥४॥

पनघटवा पै होरी ठानी रे ।
सास ननद नितही नित बरजत मैं दुखिया नहिं मानी रे ॥
ग्वाल बाल सँग में लिय मोहन बोलत मीठी बानी रे ॥
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी भरन देत नहिं पानी रे ॥
कृष्ण जीवन पिया या होरी में करत है ऐंचातानी रे ॥

परि गयो आज सखिन के फन्द छैल यह छलिया नन्दकिशोर ॥
बनि ठनि के आयो बनवारी,
संग भीर ग्वालन की भारी,
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी,
बाँधे पाग फाग मदमातो गलिन मचावत शोर ॥
चढ़ीं सखी सब महल अटारी,
तकि तकि के मारैं पिचकारी,
गावैं उभय पक्ष ते गारी,
गली रंगीली नाकाबन्दी कर दई चारों ओर ॥
बरस्यो रंग भये सब गीले,
मोंहड़े लाल वस्त्र भये पीले,
सबरे भये पिलपिले ढीले,
लठियाँ लै लै ठाड़ी भईं सखि अपनी-अपनी पौर ॥
छीन लिये सखियन ने झण्डा,
दैंन लगीं ऊपर तें डण्डा,
फूट्यो नन्द गाम को मण्डा,
ढाल लिये उछलें मेंढक ज्यों चलै न नेकहू जोर ॥
अब लौं कीन्हें बहुत अचगरी,
आये आज शक्ति की नगरी,
धरी लली के पग में पगरी,
गगरी नहीं आज सखियन सिर जो भागोगे फोर ॥
पकड़ि लिये तब कृष्ण मुरारी,
झपटि बनाये नर ते नारी,
नटवर नचैं सखी दै तारी,
हा हा खात लली के चरणनि, कान पकड़ि कर जोर ॥

जो आनन्द मच्यो बरसाने,
'नारायण' किमि ताहि बखाने,
राधा-कृपा रसिक जन जानें,
लाल-लाड़िली जेहि दिशि हेरैं कृपा-कंज दृग कोर ॥

पकरौ री ब्रज नार कन्हैया होरी खेलन आयो है ॥
संग में अति उतपाती ग्वाल, हाथ पिचकारी फेंट गुलाल,
नाच रहे डफ बजाय दे ताल, कमोरी रंगन की भरि लायो है ॥१॥
लेऔ पिचकारी सबहि छिनाय, श्याम कूँ गोपी देऔ बनाय,
कंचुकी कटि लहँगा पहराय, करौ सबही अपने मन भायो है ॥२॥
एकहू ग्वाल जाय नहिं भाज, मलौ मुख ऊपर गोबर आज,
लाज को होरी में नहिं काज, बड़े भागिन ते फागुन आयो है ॥३॥
दई आग्या बृषभानु कुमार, है गई सावधान बृजनार,
आय गये तब ही कृष्ण मुरार, गरज होरी कौ शब्द सुनायौ है ॥४॥
फेंट ते लियो गुलाल निकार, दियो श्यामा के ऊपर डार,
सखिन के मोंहड़े दिये बिगाड़, मनसुखा हल्ला खूब मचायो है ॥५॥
उड़ावै भर-भर मुठी गुलाल, है गये धरती बादर लाल,
उछर कर कूद रहे सब ग्वाल, दाँव जब बृजगोपिन ने पायौ है ॥६॥
भाज मोहन को पकरी जाय, सखी ने गुलचा दिये जमाय,
लई पिचकारी तुरत छिनाय, श्याम को गोपी रूप बनायौ है ॥७॥
चतुरता सबरी दई भूलाय, साँवरौ झुकि झुकि हा हा खाय,
किशोरी मन्द मन्द मुसकाय, नन्द कौ घूँघट मार नचायौ है ॥८॥

छिपि जिनि जैयौ हो बनवारी खेलन आई हैं ब्रजनारी ॥
बहुत सुगंध लाई अंग लगावन निकसी चतुर खिलारी ।
वा दिन तुमसों बोली नाहिं लै सुगंध आँखिन में डारी ।
मुख माँडे बिनु जाने न दैहों सूर प्रभु है सौंह तिहारी ॥

होरी में गये हार, सकल खल दल संहारी ॥
सखि सहचरि सब को ले सँग में, रस-रंग भरी पिचकारी ।
श्याम बदन कोमल सब तन पर, हेरि हेरि के मारी ।
रंगीली कीरति कुमारी ॥१॥
लाल कपोल गुलाल लपेटे, दृग सुरभित जल डारी ।
भाजि चले मनमोहन सोहन, पौंछत नयननि बारी ।
हँसी सखी दे दे तारी ॥२॥
मुरली कर सौं परी धरनी पर, मोर शिखा महि डारी ।
श्रमित भये मृदु चरन डगमगत, बैठि गये मन मारी ।
घेर लई सखिन्ह मुरारी ॥३॥
बोली व्यंग बचन हँसि सखियन, बीर बड़े गिरधारी ।
सहि ना सके नारिन्ह की कोमल, कर कमलन्ह पिचकारी ।
लाज कहाँ सकल बिसारी ॥४॥
सुनि सखि बचन सकुचि हरि बोले, सुनु वृषभानु दुलारी ।
मैं तोसें प्रिय सब बिधि हार्‍यो, हार नई क्या हमारी ।
चरन रज हौं बलिहारी ॥५॥
सुनि मृदु बचन श्रमित लखि पिय को, दुःखित भई हिय भारी ।
लीन्ह किशोरी उठाइ प्रानधन, सिंहासन बैठारी ।
करन लगि बसन्ह बयारी ॥६॥
पौंछत अंग सुभग निज पट सौं, श्री वृषभानु दुलारी ।
मुख धोवत सुरझावत अलकें, निज कर सौं पिय प्यारी ।
मुदित भई लखि बृजनारी ॥७॥

राधा राधा जे कहैं, ते न परैं भव-फन्द ।
जासु कन्ध पै कमल कर, धरे रहत व्रजचन्द ॥

मेरे गालन मली गुलाल मात तेरे लाला ने होरी में।
याने करके बहानों होरी को, जाय ढूँढ़ो अट्टा गोरी कौ,
याने दीनों रंग बरसाय, मात तेरे ..... ।
नखरा तौ दिखावै होरी में, पिचकारी मारी गोरी में,
मेरी चूनर दई है भिजोय, मात तेरे ..... ।
ये ब्रज की नामी होरी है, बरसाने की खेलें गोरी है,
ये वंशी मधुर बजाय, मात तेरे ..... ।
मेरे गोर हाथ लगी मेंहदी, माथे की भिजो दई बेंदी,
काजर की बिगारी आब, मात तेरे ..... ।
हर दो के संग में सुन गोरी, मोहन के संग खेले होरी,
याने दियौ रंग बरसाय, मात तेरे ..... ।

खेलें संत सकल मिल होरी। रहे हरि रँग महँ बोरी॥
शंकर ताल मृदंग बजावत, ग्वाल डफन की जोरी।
नारद व्यास अंगिरा नाचत, गौलोकन की पौरी।
अगुआ श्याम बन्यो री॥१॥
ध्रुव प्रहलाद विदुर अरु भीषम, उद्धव अर्जुन जोरी।
गोपीजन द्रौपदि अरु मीराँ, इन्ह सब मिल रँग घोरी।
रही भक्तन्ह पर ढोरी॥२॥
गूह निषाद विभीषन अंगद, हनुमत रंग रँग्यो री।
बलि राजा अम्बरीष सुदामा, मुचकुन्द आन मिल्यो री।
वृत्रासुर भयो बड़ जोरी॥३॥

सब द्वारन कों छाँड़ि कें, आयौ तेरे द्वार ।
अहो भानु की लाड़िली, मेरी ओर निहार ॥

नित्य मधुर ब्रजधाम, खेल रहे हरि-सँग होरी ॥

विषय बिराग राग रँग लीन्हों, प्रेम सुधा रस घोरी ।
एक लक्ष्य करि मोहन आनन, भरि पिचकारी छोरी ।
बदन सब अरुन भयो री ॥
दंभ दर्प मद मोह कोह सब, राख भए जरि होरी ।
काम विसुद्ध भयो, हरि मुख पै राजि रह्यो बनि रोरी ।
मिटी जग की सब खोरी ॥
नाते नेह खेह भये सारे, नातो एक रह्यौ री ।
नेह-बिन्दु सब नेह-जलधि मिलि, सागर रूप लह्यौ री ।
प्रेम-रस-रंग छयौ री ॥

स्याम सों कहियौ कोइ जाके ॥

मन मेरो मीन सरोबर तन ये सजन सिकारी ने आके,
बंसी डारि दई चितवनि की प्रेम के फंद फँसा के ।
तजी पट पर में लाके ॥१॥
पहिले तो मेरो मन बस कीनों छिन छिन प्रीत बढाके,
अब कहा चूक परी मनमोहन सो क्यों दई घटाके ।
लिखौ साँची समझा के ॥२॥
लाल गुलाल सबहि हम त्यागे भस्मी लई है रमा के,
सेली सींगी डारि गरे में जोगिन भेष बनाके ।
ध्यान तेरौ ही लगाके ॥३॥
झुरि झुरि सूखि सूखि भई पिंजरा बिरहा में दुःख पाके,
नागरीदास लाल नंदजू के नटबर भेष बनाके ।
दरस देहौ हमें आके ॥४॥

होरी में नहिं मान भलो री ॥

बन बन बाग बीथिन में घर-घर नवल बसंत खिलौ री,
तुम बिन बिकल ललन सों हिल-मिलकर केलि मिलौ री।
सौतिन उर दाल दलौ री ॥१॥
ऐसी निठुर भई क्यौं अबकें याते नेंक हिलौ री,
समुझावत मानत नहिं कहबौ कीनी बोहोत चिरौरी ।
भेद नहिं मन को खुलौ री ॥२॥
उमगि अनंग जु अंग परस्पर तुम रस रंग झिलौ री,
नागरीदास लाल नंद जू के गाल गुलाल मलौ री ।
लाल छतियन सो मिलौ री ॥३॥

या मोहन मोहि आन ठग्यो री ॥

सखी कौ रूप धर्‌यौ नँदनंदन आयौ हमारी पौरी,
मैं जानी कोई परमसुंदरी आई हमारी ओरी ।
धाइ के मैं चरण गह्यौ री ॥१॥
चरण पखारि मंदिर लै आई हँसि हँसि कंठ लग्यौ री,
सुन्दरबरण मधुर स्वर सजनी मेरौ मन बस भयौ री।
प्रेम ते ह्वै रही बौरी ॥२॥
मोहि लिवाय गई कुंजन में कर छल-बल बहुतेरी,
निपट अकेली मोहि जानिकें मेरौ तनजो गह्यौ री ।
ढीठ छलिया नंद को री ॥३॥
ऐसौ री वह कुंजबिहारी याते कोउ न बच्यौ री,
सूरदास ब्रज की सखियन में पारब्रह्म प्रगट्यौ री ।
जानत है मन सब कौ री ॥४॥

मानत नाहिं कन्हाई मेरे मुख रोरी लगाई ॥
मैं तो गई जल भरन साँवरे क्यों पिचकारी चलाई ॥
भीज गई तन सारी सबरी अबही नई मँगाई,
सास घर लरैगी लराई ॥१॥
अँगुरी पकरि बैयाँ झकझोरी कर चुरियाँ चुरकाई ॥
घूँघट खोल मेरौ मुख देख्यौ नैनसों नैन मिलाई,
लाज याहि नेक न आई ॥२॥
अब घर जान देहो मनमोहन बहुतक लाज लजाई ॥
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि चरनकमल बलिजाई,
हँसी सब ब्रज की लुगाई ॥३॥

फाग खेलन बरसाने आये हैं नटवर नंदकिसोर ।
घेर लई सब गली रँगीली, छाय रही छबिछटा छबीली,
ढप ढोल मृदंग बजाये हैं बंसी की घनघोर ॥१॥
जुरि मिल कैं सब सखियाँ आईं, घुमड़ घटा अंबर में छाई,
जिन अबीर गुलाल उड़ाये हैं मारत भरि भरि झोर ॥२॥
लै रहे चोट ग्वाल ढालन पै, केसर कीच मलै गालन पै,
हरियल बाँस मँगाये हैं चलन लगे चहुँ ओर ॥३॥
भई अबीर की घोर अँधियारी, दीखत नाहीं नर अरु नारी,
राधे ने सैन चलाये हैं पकरै माखनचोर ॥४॥
जो लाला घर जानो चाहौ, तौ होरी कौ फगुवा लाऔ,
अब स्याम ने सखा बुलाये हैं बाँटत भरि भरि झोर ॥५॥
राधेजु की हा हा खावौ, सब सखियन को घर पहुँचावौ,
घासीराम जस गाये हैं भयौ कविता कौ शोर ॥६॥

छैला ने रँग में बोरी कीनी मोते बरजोरी ।
आय अचानक घेर लई मोहन ने आय गिरारे में,
यह कौतिक सब देख रही मेरी ठाड़ी सास तिबारे में,
हा हा खाय परी वाके पैयाँ बैयाँ मेरी मरोरी ॥१॥
आय गये सब ग्वाल बाल नाचैं गावैं दै दै तारी,
गाल गुलाल मल्यौ मेरे मुख पिचकारी सनमुख मारी,
उड़त अबीर गुलाल कुमकुम मारत भर भर झोरी ॥२॥
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ बीना मुरली प्यारी है,
रुंज मुरज कटताल ढोलकी ढोल किन्नरी न्यारी है,
सुन कोलाहल आई ब्रजयुवती संग श्रीराधा भोरी ॥३॥
आँख बचाय तुरत स्यामा ने पकरे श्रीगिरिधारीजी,
अंजन आँज माँढ मुख मरवट सीस उढ़ाई सारी जी,
नारि नवेली बनाय हरि कूँ गावे मुख सों होरी ॥४॥
लैहें काढि कसक सब दिन की अब नहिं छूटन पावौगे,
यमुना तट पर गोपिन के तुम अव नहिं चीर चुरावोगे,
तुमतो चतुर प्रबीन साँवरे हम ग्वालिन सब भोरी ॥५॥
फगुआ में मुरली पीतांबर दीनो स्याम गहाई है,
ब्रजनारी मनमुदित भई हैं फूली अँगन समाई है,
राधा मोहन की सुनि सजनी अविचल रहो यह जोरी ॥६॥

आज ब्रजराज नचावो री ।
नख-सिखु लौं श्रृंगार साज तन, युवती भेष बनाओ री । आज...
रस बतियाँ कहि कहि रसिया सों, लाल गुलाल लगावो री । आज...
ललित लड़ैती मारि कुमकुमा, सन्मुख ते मुस्कियाओ री । आज..

सबरी दई रंग में बोर कन्हैया प्यारे ने-प्यारे ने ॥
लै ग्वाल बाल संग में आयो,
मेरे अट्टा ऊपर चढ़ आयो,
मैं तो पकर दई झकझोर कन्हैया प्यारे ने-प्यारे ने ।
याके हाथ लगी है पिचकारी,
तक-तक के चोली पै मारी,
रंग में कर दई सरबोर कन्हैया प्यारे ने-प्यारे ने ।
बहुतेरी बचबे की सोची,
मेरी चालाकी पर गई ओछी,
मेरौ तनक चल्यो ना जोर कन्हैया प्यारे ने-प्यारे ने ।
मेरी सास लड़ै और घुर्रावे,
ननदी ते पेस नाय खावे,
नाय मानै माखन चोर, कन्हैया प्यारे ने-प्यारे ने ।

फागुन के दिन चार रे होरी खेल मना रे ॥
बिन करताल पखावज बाजै, अणहद की झणकार रे।
बिन सुर राग छती सूं गावै, रोम-रोम झणकार रे ।
सील संतोष की केसर घोरी, प्रेम प्रीत पिचकार रे ।
उड़त गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे।
घट के सब पट खोल दिए हैं, लोक लाज सब डार रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरणकमल बलिहार रे।

भाज न जाय आज यह मोहन सब मिल घेरौ री ॥
अंजन आँजि माँढि मुख मरवट फिर मुखहि रोरी ॥१॥
गारी गाय गवाय लाल करि राखै चेरौ री ॥
आनँदघन बदलौ नहिं छोड़ो भरुवा केहि टेरौ री ॥२॥

घर आँगण न सुहावे, होली पिया बिन मोहि न भावे ।।
दीपक जोय कहा करूं सजनी, पिय पर देश रहावे,
सुनी सेज जहर ज्यूं लागे, सिसक- सिसक जिय जावे,
नैण निंदरा नहिं आवे...।।
कदकी ऊभी मैं मग जोऊं , निस दिन बिरह सतावे,
कहा कहूं कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे,
हरि कब दरस दिखावे...।।
ऐसो है कोई परम सनेही तुरत संदेशो लावे ।
वा विरियाँ कद होसी मुझको, हरि हँस कंठ लगावे ।
मीरा मिल होरी गावे...।।

होरी पिया बिन लागै खारी, सुनो री सखी मोरी प्यारी ।।
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी,
सूनी बिरहन पिव बिन डोलै, तज दई पीव प्यारी,
भई हूँ या दुःख कारी...।।
देस विदेस संदेस न पहुंचे, होय अँदेसा भारी,
गिणता-गिणता घिस गई रेखा, आंगलियां री सारी,
अजहुँ नहिं आए मुरारी...।।
बाजत झांझ मृदंग मुरलिया बाज रही इकतारी,
आयो बसंत कंत घर नाहीं, तन में ज्वर भया भारी,
स्याम मन कहा बिचारी...।।
अब तो महर करो मो ऊपर चित दे सुनो हमारी,
मीरा के प्रभु मिल ज्यो माधो, जनम-जनम की मैं थारी
लगी दरसन की तारी ... ।।

मैया तेरे लाला को पाँव निकरगौ गोपिन के पीछै परगौ ।।
घर में डोलै वो तो माखन चुरातो,
लूट-लूट दधि मटकी को खातो,
अरी सूनो घर देख भंमरगो, गोपिन के पीछै परगौ ...
एक दिना मेरौ माखन खायो,
आप खाय ग्वालन कूँ खवायो,
मैया मेरी खाली करके धरिगो, गोपिन के पीछै परगौ ...
मैया तेरो लाला औगुन गारो,
तन को भी कारो वो तो मन को भी कारो,
अरी मोते अचक लड़ाई लरिगौ, गोपिन के पीछै परगौ...
पानी भरन गई पनघट पै,
मार्यो ढेल मेरे घूँघट पै,
ऐसे औगुन ते हियो मेरो भरिगौ, गोपिन के पीछै परगौ...
तक-तक के पिचकारी मारै,
रंग गुलाल ऊपर ते डारै,
अरी वो तो मग के बीच खिबरगौ, गोपिन के पीछै परगौ...
रपट करें हम कंसा पै जाय के,
मार परैगी वामे दबायके,
अरी फिर करेगो मरिगौ-मरिगौ, गोपिन के पीछै परगौ...

यों ही जायगौ जोबन अलबेली कौ ।।
गोरी बनी मथुरा कौ सौ पेड़ा, रसिया साँख जलेबी कौ ।।
गोरी बनी केसर की क्यारी, रसिया फूल चमेली कौ ।।
गोरी बनी रूपे कौ रूपैया, रसिया चाकर घेली कौ ।।
गोरी बनी चौखट कौ वाजू, रसिया खंभ हवेली कौ ।।

मचल गई गोरी हाय रसिया पै, **शरम ते मर गई या होरी में**,
नाक तक भर गई या होरी में ॥
जुलम करयो है या कारे ने, हाथ पकर लियो बजमारे ने,
अकेली पड़ गई या होरी में...॥
नैनन में पिचकारी मारी, चुनरिया की आब बिगारी,
मेरी सास बिखर गई या होरी में ...॥
कैसे करूं मेरी रोके डगरिया, रंग डारे दिन रात सांवरिया,
रात सब ढर गई या होरी में ...॥
ऐसी ब्रज की है सब गोरी, ब्रज किशोरी कहे उतनी थोरी,
जादू सो कर गई या होरी में ...॥

तू छोड़ बलम कूँ आ जइयो खेलन कूं मोते होरी ॥
जो तेरो पती सती तोहे रोके,
आस पड़ोसी गैल में टोके,
तू वाको सींग दिखाय आ जइयो खेलन कूं मोते होरी ॥
देखत रहूगों बाट तुम्हारी,
जल्दी अइयो लहँगा वारी,
प्यारी गह्वर वन में आ जइयो खेलन कूं मोते होरी ॥
ताजा लौनी माखन लइयो,
अपने ही हाथ खवाय जइयो,
जो तोकू रोके घर वारो,
घर को ठोक लगाय दियो तारो,
वाके दूध में भाँग मिलाय आ जइयो खेलन कूं मोते होरी ॥

सब द्वारन कों छाँड़ि कें, आयौ तेरे द्वार ।
अहो भानु की लाड़िली, मेरी ओर निहार ॥

ननदी सजनी कैसे खेली जाय अनोखी होरी श्याम की ।।
हुरमत लाज जाय ऐसी कहा होरी काम की ।
रीत बुरी है बहुत बुरी या गोकुल गाम की ।
रंग डारे और छाप लगावै अपने ही नाम की ।
या होरी में खोय गई मेरे पायल पाँव की ।
अब ही नई गढाई मैंने बहुत ही दाम की ।
यह होरी रहे अजर अमर बरसाने गाँव की ।
मित्र मण्डली ख़ुशी रहे ब्रज घासीराम की ।

उठ देख सखी वृषभानु लली होरी खेलत अति छवि पावत है ।।
प्रीतम के दृग भारी कुम कुमा, गाल गुलाल लगावत है ।
कबहूँ कहत गिरयो नथ मोती, अब कैसे से करि पावत है ।
बातन में उरझाय लाल को, गाल गुलाल लगावत है ।
जब प्यारो पकरन कूँ दौड़त, अधिक गुलाल उड़ावत है ।
धुंधर मांह कछु नहिं दीखत, आपको चतुर बतावत है ।

सखी री मेरी जुलम कन्हैया कर गयो,
होरी में दार-सी ये दरगौ ।।
रंग को भर्‌यो पिचकरा दियो,
सबरो बदन लाल कर दियो,
सखी री मेरी अचक माट सो भर गयो ।।
बात बताय दऊँ साँची साँची,
कान्हा के संग में जाय नाँची,
सखी री ऊ तो दो दो हाथ उछरगो ।।
रसिया बांके गाय रह्यो पटका,
कह रह्यो कैसे झेलेगी झटका,
सखी री ऊ तो मेरे पीछे परगो ।।

होरी खेलूँ स्यामसुंदर ते बहिन मेरी लाज रहै चाहै जाय।

बड़े भाग सों होरी आई, सब उतसाहे लोग लुगाई,
खेलौ चलौ तुम हुँ सब सँग मिल कहूँ तुम्हें समुझाय ॥१॥
पीतांबर और मुकुट उतारौ, नैनन में अंजन लै सारौ,
छोडौ नहीं पकरि लेउ याकों कैसेहुँ हाहाखाय ॥२॥
दधि माखन कौ यह चुरबैया, गोपिन सो ऊधम मचवैया,
कहूँ हाथ परि जाय पकरि याकी बंसी लेहू छिनाय ॥३॥
छोड़ौ फगुआ लिये न बहिना, नेह जु सहित करौ मेरौ कहना,
चाहै बलदाऊ और बाबा नंदहि लेय बुलाय ॥४॥

मोहन आ गयौ होरी में मेरी चूनर रंग में बोर॥

ग्वालबाल सब सँग में लायौ, फिर होरी कौ दुंद मचायौ,
नेक तरस मेरौ नहिं खायौ,
अँगुरी पकर मेरौ पोंहोचो पकर्यौं बैयाँ दई मरोर ॥१॥
एक दिना की बात सुन हेली, मैं जमुना जल जात अकेली,
पाछे ते आय नंदके ने घेरी।
भर पिचकारी सन्मुख मारी कर दीनी सरबोर ॥२॥
अचक अचानक आयौ घर में, कनक पिचकारी लीये कर में,
मार रह्यौ तकि मेरे तन में।
उड़त अबीर गुलाल कुमकुमा मारत तक-तक झोरी ॥३॥
एक दिना जुरि मिलकें गोरी, पकरि लेहु हैंके इकठौरी,
अंजन आँजि माँडि मुख रोरी।
नर ते नारि बनाय लाल की बंसी लीजै चोर ॥४॥
बरस दिना में फागुन आवै, देखि देखि मो मन हरषावै,
फगुआ दिये बिन जान न पावै।
लेहौ काढ़ि कसक सब दिनकी कहै मदन करजोर ॥५॥

होरी कौ त्यौहार मनाय लै नारि हवेली पै।
अटा चढी गोरी घटा पयौं नगर में सोर,
ग्रीवा मोर नाचन लगे रसियनके मनमोर,
टकटकी बाँधि मुड़ेली पै ॥१॥
मन गहने लाखन धरे बिखरे डोले हाय,
जगह न मनमें बावरी लै बटुआ सिमवाय,
काहु भोरी भायेली पै ॥२॥
नैन नरम तीखौ लगै काजर मिल्यौ कुमेल,
आँसू पाँसूलौ पुरे दै दियौ करुवौ तेल,
बीजुरी परियौ तेली पै ॥३॥
जूआ खेलें बावरे सूघी परै कै पट्ट,
मन के बदले मन मिलै सौदा सूधौ सट्ट,
मूँड़ को मारै घेली पै ॥४॥
गुरु-दीच्छा लै फाग की रसियन की कर गोठ,
चिन्नामृत सौ बाँटि जा रह जाँय चाटत होठ,
जूझमरै भगत तबेली पे ॥५॥
ऐसी होरी खेल जा रहै सराहत गाम,
सूखै बाग न बिरमि है भोंरा भोगी स्याम,
रुचै मन चतुर चमेली पै ॥६॥

आय गयौ फागुन मास आस तेरे मन की पुर जायगी।
सामन सरिता फाग की को बाँधे मरजाद ।
मरमी रसिया जानहिं कहा फाग में स्वाद,
गाँठ रेसम की घुर जाएगी ॥१॥

चतुर छैल उर मारियौ इन नैनन के बान ।
चोट स्वाद जानें कहा मूरख जिय पाषाण,
नोक नैनन की मुरि जायगी ॥२॥
निन्दा ननदी कहा करै तूलै फाग मचाय ।
फागुन जोबन तीस दिना होरी सँग जरजाय,
धूर दुजे दिन उड़ि जायगी ॥३॥
फागुन जोबन पकि रह्यौ गेहूँ की सी बाल ।
भरी फसल पै राम कहुँ ओरे देय न घाल,
रासि खेतन में कुर जायगी ॥४॥
जग के रँग कच्चे सबै मन पट होय कुरंग ।
स्याम चुँदरिया रँगायलै चढ़ै न दूजौ रँग,
नजर रसिया ते जुरि जायगी ॥५॥

मनुवाँ बडो गरीब गुजरिया लै गई बातन में ।
सोने की सी कामिनी गोरी देह अनूप,
नयन बटोही थकि रहे लखि बदरौटी धूप,
छिपे पलकन के पातन में ॥१॥
भोंह कमान नीचे बसें नैना चपल कुरंग,
गजगति पै कटि केहरी भयौ बिधाता दंग,
अंगुरिया दाबी दाँतन मैं ॥२॥
दस गोरी दस साँभरी भरी प्रेम उनमाद,
मन लूट्यौ उन समझि कें देवी कौ परसाद,
बटि गयौ हाथहि हाथन में ॥३॥
उन नैनन की फाँस उर गड़ी अड़ी है बंक,
काजर कौ काँटो लग्यौ बीछू को सौ डंक,
जहर पुरि गयौ सब गातन में ॥४॥

मन में घर करि गई गुजरिया गुन गरबीली सी।
ऐसी पैनी धार सी काजर रेख लगाय,
अँगुरी आँजत ना कटी कट्यौ करेजा जाय,
करक गई नोंक नुकीली सी ॥१॥
मरमी जिय जाने जरब उन नैनन की कोर,
बरछी तिरछी नजर की गढ़ि गई छाती फोर,
शेष के फन पै कीली सी ॥२॥
देखत की भोरी लगै मनुवाँ गयौ लुभाय,
ब्रज कौ पानी कटखनो सबके बस की नाँय,
झेलनो मार रँगीली की ॥३॥
नीकौ रहि जी कौ तनक फीकौ होय न चाव,
स्याम भँमर धरि धीर नेंक फूलैं फेर गुलाब,
बिरमि रहि डार कटीली सी ॥४॥

अजब देख्यौ या ब्रज में मैंने होरी कौ खिलवार ।
आय अचानक पौरि हमारी गावै राग धमार ।
घूँघट के पट खोल के कर भाजै रंगहि डार ॥१॥
होरी में बरजोरी कैसी कैसौ है यह प्यार ।
छीन पीतांबर मुरली कामर और छीनो गल हार ॥२॥
मानों कही हमारी मोहन छाँडो अटपटी चाल ।
अबीर गुलाल मलौ मुख याके मारौ गुलचा गाल ॥३॥
फगुआ में मुरली पीतांबर दीनो स्याम गहाय ।
फिर होरी खेलन कूँ अैयौ कहै कवि नेह उचार ॥४॥

अनोखौ होरी खेल मचायौ है, सब सखियन के संग ।
सँग के ग्वाल बाल सब आये, हाथन में पिचकारी लाये,
हो हो होरी खेल मचायौ है सब मिल के इक संग ॥१॥
इतते आय गई ब्रजबाला, उत सों सम्हरि खड़े नंदलाला,
जिन खेल कौ साज सजायौ है भरि नाँदन में रंग ॥२॥
राधा के सन्मुख गिरिधारी, तकि तकि मारि रहे पिचकारी,
गगन अँधेरौ छायौ है रहे रंग-बिरंग ॥३॥
करि चतुरइ चन्द्रावलि, प्यारी पकरि लिये झटसों गिरिधारी,
इन नारी को भेष बनायौ है बदल दिये नँदनंद ॥४॥
चूँनरि सीस उढ़ाय दई है, बेंदी भाल लगाय दई है,
कटि लहँगा पहिरायौ है मल दई केसर अंग ॥५॥
लगी स्याम को नाच नचावन, नाना बिध सों गारी गावन,
उपंग जु हाथ बजायौ है ढफ बीना मुरचंग ॥६॥
फगुआ सखियन दियौ मँगाई, छाँड़ि दिये तब कृष्ण कन्हाई,
जिन जीवन सफल बनायौ है खेल स्याम के संग ॥७॥

मेरी मानतौ कन्हैया ना खेलौ ऐसी होरी ।
ऐसौ निपट अनारी रोकी काहू की न मानै,
कर जोर मैं तो हारी मुख पर मलत है रोरी ॥१॥
थर-थर कँपो मैं दैया ऐसी भिजोई रँग में,
घर कैसें जाऊँ कान्हा आवत है लाज भारी ॥२॥
है अरज मेरी तुमकों इतनी ललित किसोरी,
है लाज मेरी तुमकों अब हौनी हो सो होली ॥३॥

सखी सब जुरि मिल चालौ संग द्वार बरसाने बारी के ।।
पिचकारिन सब रंग भरौ झोरिन भरौ गुलाल ।
बरसाने गये पहुँचि के हरषित मन नँदलाल ।।
होरी खेलौ सब सखी ग्वाल कहै यो बैन,
सन्मुख आइ राधिका चुभे स्याम के नैन,
कटीले राधा प्यारी के ।।१।।
होरी खेली प्रेम सों मुख पर मल्यौ गुलाल,
होरी में ही फँसि गये प्रीति फंद नंदलाल,
प्रीति सरसाने बारी के ।।२।।
चित चोर्‌यो चितचोर कौ मानी हरि तब हार,
नैन बान चित में चुभे भये हिये में पार,
घाव बुरे नैन कटारी के ।।३।।
नैंन नैंन सों मिलि गये जैसें चंद चकोर,
प्रेमामृत रस सों भरे राधा नंदकिसोर,
नेह रहै चरणबिहारी के ।।४।।

जबते धोखौ देकें गयौ स्याम संग नाँय खेली होरी ।
ऊधौजी तुम जाहु द्वारिका लै पाती मोरी,
कहियौ यों समझाय दरस बिन तरसें ब्रज गोरी ।।१।।
परसों की कहि गए मानि लई मैं कैसी भोरी,
बीत्यौ बरस जु सगरौ रहि गई चूँदरिया कोरी ।।२।।
देगी प्राण गमाय गात की है जायगी होरी,
लैयों बेगि लिवाय उमरिया रहि गई है थोरी ।।३।।
ब्रजवाला दई त्यागि प्रीत याने कुबजा सँग जोरी,
कहै कवि घासीराम सदा यह बनी रहै जोरी ।।४।।

ठाढ़ी अपनी अटरिया पै गारी दै गयो दैया ॥
लै-लै मेरो नाम करी मोकूँ बदनाम,
कैसे छोड़ूँ नन्दगाँव मेरी मैया ।
आवै है अचम्भो मेरो नाम कहाँ ते जान्यो,
नई-नई आई मैं लुगैया ।
गारी जो सुनाई और मंद मुसकाई,
मेरे है गई पार नजरिया ।
मीठी-मीठी गारी दैकें सब कुछ हर लियौ,
होरी गावै जसुदा को छैया ।
ऐसी बुरी होरी आई जामें गारी मन भाई,
कुल की लाज नसैया ।
देखत सरम आवै देखे बिन न रहावै,
है कोई गैल बतैया ।
अटा चढ़ूँ बार बार कर बहानों हजार,
तऊ अब होय हँसैया ॥

प्यारे हम नहिं खेलत होरी ॥
हो हो करत अरत ही आवत दिखरावत बरजोरी ॥
नए खिलार लाड़िले मुख पर लै लपटावत रोरी ॥
रूप रसिकई जानि परी अब देखत है सब गोरी ॥

राधिका पायकै सैन सबै, झपटी मनमोहन पै ब्रजनारी ।
छीन पीताम्बर कामरिया, पहिराई कसूमर सुन्दर सारी ॥
आँखन काजर पाँय महावर, साँवरो नैनन खात हहारी ।
भानुलली की गली में अली न, भलीविधि नाच नचाये बिहारी ॥

चढ़ती ज्वानी झुकि रह्यौ जोवन गोरी तेरौ लहर लहर लहराय।
बालापन नें दखल उठायौ, भर ज्वानी नें अदल जमायौ,
कामदेव सब अंग में छायौ सोभा बरनी न जाय ॥१॥
सब सिंगार पहरि लियौ धानी रे, लै दरपन मनमें मुसकानी रे,
तान कमान भौंह सुलतानी मानों जुद्ध करन कों जाय ॥२॥
कर में कंचन थार सजायौ रे, तामें चौमुख दियरा जरायौ रे
घरते बाहर निकसी मानों दामिनि कोंघत जाय ॥३॥
चलत चलत गोकुल में आई रे, नंदबबा घर जाय बतराई रे,
कहत कन्हैयालाल गुसाईं वाने जोबन दियौ चढाय ॥४॥

तेरी पतरी कमर पै यार लिपट जाऊँ पट बनिकें ।
भौंह कमान नैन रतनारे अलक बनी घुँघरारी जी,
केसर तिलक भाल बिच सोहै बेसर की छबि न्यारीजी,
तेरे गोल कपोलन यार लिपट जाऊँ लट बनके ॥१॥
सीस मुकुट सोने कौ सोहै कुंडल की छबि न्यारीजी,
चंदन खौर आढ मृगमद की कंठसरी दुतिकरीजी,
तेरे याही हिये कौ हार लटकि जाऊँ झट बनके ॥२॥
जिन चरनन को अज शिव ध्यावें शेष पार नहिं पावेंजी,
वृन्दावन की सोभा संपति उर रस सिंधु बहावें जी,
तेरे उन चरनन में यार चिपट जाऊँ रज बनकें ॥३॥
पुरुषोत्तम प्रभु स्याम पियारे ब्रजजनके रखवारेजी,
जुगल रूप नित दृग भर देखौं मो नैनन के तारेजी,
तेरे कर कमलन सों यार फूटि जाऊँ घट बनकें ॥४॥

पनघट पै बटमार गुजरिया जादू कर गई रे ।

वह चितई चित्तन चुभी बाँकी भोंह मरोर,
भैया कौ सारौ कही मुसिकाई मुख मोर,
और द्वै गुलचा धरि गई रे ॥१॥
मैं सकुच्यौ गागर बुढ़ै वह इत उतमें झाँक ।
मैंरौ मन भरलै गई दै गई नाय छटाँक,
लूट पनिहारी करि गई रे ॥२॥
नील बरन यमुना इतै उत वह गोरी नार ।
कंचन कलसा सीस पै बनी त्रिवैनी घार,
रूप की पर भी परिगई रे ॥३॥
गुन गरबीली गोदी कछु गागर में भार ।
झीनी कटि लच लच करै राम लगावै पार,
पैज पायल ते परिगई रे ॥४॥
स्याम चूनरी सीस पै चंदाबदनी नार ।
नहीं को झटका लग्यौ टूट्यो नौलखा हार,
तिली-सी रज में झरगई रे ॥५॥

जेहर फोर भिजई सगरी कँकरी की दई ।

कँकरी दई नेंक दया न कीनी, पिचकारी की चोट जो दीनी,
भीजी सारी सुरंग नई ॥१॥
चकई सी गहि नाच नचाई, केसर कीच कुचन लपटाई,
जौ लो ननदुल आय गई ॥२॥
मोहन प्रगट भये ब्रज जबते, सालगराम बौरी भई तब ते,
हँसि कें गरें लगाय लई ॥३॥

अहो राधिके स्वामिनी, गोरी परम दयाल ।
सदा बसौ मेरे हिये, करिकें कृपा कृपाल ॥

कान्हा धरें मुकुट खेलैं होरी ॥
कौन गाम के कुँवर कन्हैया, कौन गाम राधा गोरी ॥
नंदगाम के कुँवर कन्हैया, बरसाने राधा गोरी ॥
कौन सखी नें पटिया पारी, कौनें गुहि दियौ बैना ॥
चंद्रसखि नें पटिया पारी, राधा ने गुंहि दियौ बैना ॥

मेरे नैननि में पिचकारी मारी नंददुलारे ने ।
मैं जमुना जल भरनजात वा सकर गिरारे में,
दौरी दैकें पकरि लई मनसुख बजमारे नें ॥१॥
इतने में ढिंग आय सखी वा कान्हा कारे नें,
रंग सो करी सराबोर अरी वा प्राणन प्यारे नें ॥२॥
भगवत रसिक भक्ति मैं चाहूँ चरण तुम्हारे में,
है जाय बेड़ा पार नाथ भवसिंधु अपारे में ॥३॥

स्याम ने पनघट पै मोते होरी ठानी आय ।
आय अचानक मनमोहन ने गगरी दई ढुराय ।
भीज गई चूनरी मेरी सगरी आप रहे हरषाय ॥१॥
नाचें ग्वाल बजावें तारी राग घमारें गाय ।
चंग और मुरचंग बाँसुरी बाजे रहे बजाय ॥२॥
देव विमान चढ़े, छबि निरखत नेह पुष्प बरसाय ।
उड़त गुलाल लाल भए बादर सोभा कही न जाय ॥३॥
केसर की पिचकारी छूटत खेलें परस्पर आय ॥
कहत दास नवनीत निरखि छबिमन उमग्यौ न समाय ॥४॥

ब्रह्म मैं ढूँढ़्यौ पुरानन कानन, वेद रिचा सुनी चौगुनी चायन ।
देख्यौ सुन्यौ कबहूँ न कितै, वह कैसे सरूप औ कैसे सुभायन ॥
टेरत हेरत हारि फिर्‌यौ ‘रसखान’ बतायौ न लोग लुगाइन ।
देख्यौ दुर्‌यौ वह कुञ्जकुटीर में, बैठ्यौ पलोटत राधिका पायन ॥

होरी में गए हार सकल सुख कुंजबिहारी ॥
सखी सहचरी सबको लै सँग भरी रस रँग पिचकारी ।
मधुर बदन कोमल सब तन पर हेरि हेरि कें मारी,
रँगीली कीर्ति कुमारी ॥१॥
लाल कपोल गुलाल लपेटे दृग सुरभित जल डारी ।
भाजि चले मनमोहन सोहन पोंछत नैननि बारी,
हँसि सखी दै करतारी ॥२॥
मुरली कर सों परी धरनि पर मोर सिखा महि डारी ।
भए श्रमित मृदु चरन डगमगे बैठि गए मन मारी,
घेरि लियो सखिन मुरारी ॥३॥
बोली बचन व्यंग सखि मृदु हँसि बड़े बीर गिरिधारी ।
सहि ना सके नारि कोमल कर कंचन की पिचकारी,
लाज सब कहाँ बिसारी ॥४॥
सुनि सखि बचन सकुचि हरि बोले री बृषभानदुलारी ॥
मैं तो प्रिये सदा कौ हारयौं नई हार कहा हारी,
चरनरज हौं बलिहारी ॥५॥
सुनि मृदु बचन श्रमित लखि पिय कौं दुखित भई हिय भारी ।
राधा आइ उठाय प्राण धन सिंघासन बैठारी,
करनलगी बसन बयारी ॥६॥
सुभग अंग सब पौंछि अरूण निज पटसों राधा प्यारी ।
सीतलजल मुख धोई अलक निज कर सुरझाई झारी,
मुदित भई लखि ब्रज नारी ॥७॥

श्रीवृषभानु कुमारि जु, विनय करौं सुनि कान ।
देहु निरन्तर आपने, चरन कमल कौ ध्यान ॥

मदगजचाल चलत अद्भुत गति,
मुसकनि कहा कहूँ नयन चढ़े खरसान ॥
भौंह कटाक्ष नयन माधुरी,
मोहि लियौ मेरौ मन रह्यौ अरूझान ॥
पल-छिन कल न परै सखी री,
धीर धरत नहिं प्रान ॥
श्रीबल्लभ रसिक की जीवनि प्यारी,
बेगी खबर लीजौ निज जन अपनों जिय जान ॥

मोहन गोहन लाग्यौ डोलै ।
जितही जाउँ तहाँ सँग आवै हँसि घूँघट पट खोलै ॥१॥
एक बार सखि हौ गुरूजन बिच आय दिखाई दीनी ॥
मेरे देखत चौंके सब तब यह चतुराई कीनी ॥२॥
आलस मोर जंभावन के मिस चुटकी नेक बजाई ॥
वे मो तन को चितवत ही यों उनकी करी बिदाई ॥३॥
एक समै ब्रजमंडल ललिता ठाड़ी करी बड़ाई ॥
तहाँ अचानक मुकुट नवायौ चरनन छाँह छुवाई ॥४॥
कबहुक आगे पंथ संवारै चुनि चुनि फूल बिछावै ॥
कबहुंक पनघट जाऊँ तवै पुनि मटुकी आन उचावै ॥५॥
कबहुंक सुमन माल पहिरावै बेसर आप सँवारै ॥
दोऊ हाथ बलैया लै के राई लौंन उतारे ॥६॥
सुनि चन्द्रावलि कहुँ कहाँ लौं यौं चबाव सब ठानें ॥
कहत श्याम सों प्रीत निरंतर की रति नहिं जाने ॥७॥
अब तौं आयौ फागुन महीना निधरक हैंकै गावैं ॥
यहूँ सुनि गई श्याम पै तबहि कहि बात बतावें ॥८॥

पकरे ब्रजजन गिरिधारी।
उमंग भरी गोपी सब आई खेल मचायौ भारी
खेंच लई पीतांबर मुरली हा हा करत मुरारी,
हँसी सब दै कर तारी ॥१॥
जेही जपत ज्ञानि सब मुनिवर सकल वासना टारी
सारद शेष पार नहिं पावत जाहिं जपै त्रिपुरारी,
ताहे गोपी देत हैं गारी ॥२॥
काल को काल ईस ईसन को जीत लियो सुकुमारी
कर जोरी के पीतांबर मांगत दे दे मुरलिया प्यारी,
जाओ अब जीत तुम्हारी ॥३॥
भक्त आधीन निगम नित गावत, मुनिवर कहत बिचारि,
सूरदास के प्रभु रंगीले बार बार बलिहारी,
मगन कीनी ब्रजनारी ॥४॥

दोहा - होरी लीला प्रेम सो गाई रुचि अनुसार ।
भलौ बुरौ जानूं कहा प्यारे नंदकुमार ॥
टोल ग्वालन को संग लगाए हैं नटखट माखन चोर ॥
रोक लई सब गैल डगरियाँ, घेरि लई सब गोप-गुजरियाँ;
फिर लूट-लूट दधि खाए हैं मटुकी डारीं फोर ॥ टोल ग्वालन...
होरी कौ याय चाव है भारी, लिए फिरे हाथन पिचकारी,
ढोल मंजीरा बजाए हैं तान रहे कैसी तोर ॥ टोल ग्वालन...
भरि लीनी रंग में पिचकारी, चूनर चोली सुरंग बिगारी,
अबीर-गुलाल उड़ाए हैं करि होरी कौ शोर ॥ टोल ग्वालन...
नाच-नाच के रसिया गामें, ग्वाल-गमार बहुत मस्तामें,
सखि ज्वानी में इतराये हैं इन्हैं कान्हा को जोर ॥ टोल ग्वालन...
चलौ सखी सब मिलि बरसाने, राधा जू को देंगी ताने,
जानें सिर पै बहुत चढ़ाए हैं विनवत प्रभु कर जोर ॥ टोल ग्वालन,

रंग डारत लाज न आई, नन्दजी के कुँवर कन्हाई ॥
पी पी छाछ भये मतवारे, महि-महि घूम मचाई ।
गुलचे खाई भूल गये सबरे,
करन लगे ठकुराई, सखि वाको शरम न आई ॥१ ॥
हाथ लकुटिया काँधे कमरिया, बन-बन धेनु चराई ।
जात अहीर सदा ही जानत,
करन लगे ठकुराई, छली जाने ब्रज की लुगाई ॥२॥
ऊखल के संग बाँध यशोदा, बेंतन मार लगाई ।
वे दिन अपने भूलि गये सब,
करन लगे ठकुराई, सखी कैसो ढीठ कन्हाई ॥३॥
पास परोसिन संग की सहेली, पाँव पड़त सब धाई ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि,
चरण कमल बलि जाई, बनी रही कृष्ण मिताई ॥४॥

पकड़ो री बृजनार, कन्हैया होरी खेलन आयौ है ॥
संग में सब उत्पाती ग्वाल, ऐंठ के चलें अदा की चाल,
हाथ पिचकारी फेंट गुलाल, कमौरी रंगन की भर ल्यायौ है ॥
मलौ मुख ऊपर गोबर आज, एक भी सखा जाय नहिं भाज,
लाज कौ होरी में कहा काज, बड़े भागन ते फागुन आयौ है ॥
दई आज्ञा बृषभानुदुलारी, आय गयीं इतते ब्रजनारि,
सबन मिल पकड़े कृष्ण मुरारि, सखन्ह पर हल्ला खूब मचायौ है ॥
पीताम्बर मुरली लई छिनाय, श्याम कौ गौपी भेष बनाय,
कंचुकी कटि लहँगा पहराय, किशोरी मंद मंद मुस्काय,
नन्द कौ घूँघट मार नचायौ है ॥ पकड़ो री बृजनार ...

जयति जयति श्रीराधिका, चरण जुगल करि नेम ।
जाकी छटा प्रकास तें, पावत पामर प्रेम ॥

वृन्दावन आज मची होरी ।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप, बरसत रंग उड़त रोरी ॥ वृन्दावन...
किततें आये कुँबर कन्हैया, किततें आयीं राधा गोरी ॥
वृन्दावन तें कुँबर कन्हैया, बरसाने ते राधा गोरी ॥
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ अबीर झोरी ॥
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधे के हाथ अबीर झोरी ॥
अबीर गुलाल की धूम मची है, फेंकत हैं भर-भर झोरी ॥
सूरदास प्रभु देखि मगन भये, राधे श्याम युगल जोरी ॥

तू कित आज चली बनिठन कें मनमोहन मग खेलत होरी ॥
जाने कहा वाके दृग जादू जो निरखै सोइ होत है बौरी ॥
सरद इन्दु सम बदन तिहारौ कोमल अंग अति भोरी ॥
तोहि देखि कब छोड़ेगो रसिया बैठि भवन जिन हठ करै गोरी ॥
डोलत डगर लिये पिचकारी फेंटि अबीर गुलाल की झोरी ॥
नारायण होरी को मिस करि मोहनलाल करत चित चोरी ॥

लिये फूल की हाथ में, छरी भरी अनुराग ।
रंग रंगीली सखिन संग, श्री श्यामा जू खेलत फाग ॥
श्रीश्यामा जू खेलत रंग भरी, रंग हो हो हो हो हो होरी, स्यामा जू ।
रंग रंगीली सहचरी सँग लिये, हाथनि फूल गुलाब छरी, स्यामाजू ।
एक ओर कीने मनमोहन, तिनकी सखी तिन ओर करी, स्यामाजू ।
रमकि-रमकि उपकरन लिये कर, झमकि-झमकि आई सबरी, स्यामाजू ।
उड़ि जू गुलाल अरुन भयो अम्बर, पिचकारिन की लागि झरी,स्यामाजू ।
बढ़्यौ खेल रसरेल पेलको, सुधिहूँ की जहाँ सुधि बिसरी, स्यामाजू ।
डफहि बजावति गावति चाचरि, गारि धमारिन धूम मची, स्यामाजू ।
भयो है विपिन सब राग रंगमय, कौतुक बरन्यौ जात न री, स्यामाजू ।

या मतवारे मीत सों मिलि चाचरि खेलौ री।
कोउ रहौ न अकेलि अकेलिय हेली सुनो सब हेलौ री॥ या मतवारे...
चोवा चंदन अरगजा लै रंग में रेलौ री ।
और अबीर गुलाल उड़े बूका बंदन मेलौ री ॥ या मतवारे...
होय निसंक सुटंक टरौ जिनि जानि अलबेलौ री ।
छैल के फैल की सैल सबै सोई आज उजेलौ री ॥ या मतवारे...
बहु दिन की मन की रली भलीभाँति सकेलौ री ।
श्रीहरिप्रिया प्रताप ते दुख पाँयन पेलौ री ॥ या मतवारे...

सहज सौंज जैसियो बनी, तैसियो सहचरि संग ।
स्यामा स्याम निकुंज में खेलत होरी संग ॥
स्यामा स्याम निकुंज भवन में रंग भरे खेलें होरी ।
तैसिय संग सहेली सुन्दरि, सखी सहचरी गोरी ॥ स्यामा स्याम...
रमक झमक उचकनि उरजन की, लचनि लंक चित चोरी
निरखि थकित भयो मनमोहन को, नीबी बंधन डोरी ॥ स्यामा ...
अति अनुराग भरि पिचकारी, प्यारी पिय पर छोरी ।
रोम-रोम रमि रह्यौ रंग आनन्द उमंगन कोरी ॥ स्यामा स्याम...
मुसकनि हँसनि अबीर गुलालनि मार मची दुहु ओरी ।
इहिं धुंधरि में सोहत हैं श्रीहरिप्रयाजू की जोरी ॥ स्यामास्याम...

मेरो खोय गयो बाजूबन्द रसिया होरी में ॥
मेरो बाजूबन्द मेरो बड़ो रे मोल कौ, गढ़वाय लऊँ तोते पूरे तौल कौ ।
सुन नन्द के फरजन्द रसिया होरी में ॥१॥ मेरो खोय...
सास लड़ैगी मेरी ननद लड़ैगी, खसम की सिर पर मार पड़ैगी,
हो जाय सब रस भंग रसिया होरी में ॥२॥ मेरो खोय...
तैने ब्रज में ऊधम मचायौ, लाज शर्म तैने सबहि गँवायौ
मैं तो आ गई तोते तंग, रसिया होरी में ॥३॥ मेरो खोय...

बाबा नन्द के द्वार मची होरी ।

कै मन लाल गुलाल मँगायो, कै गाड़ी केशर घोरी ।
सौ मन लाल गुलाल मँगाई, दस गाड़ी केशर घोरी ।।१।।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के रंगन की पोरी ।
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, मनसुख हाथ रंग की पोरी ।।२।।
कै री बरस के कुँवर कन्हैया, कै री बरस राधा गोरी ।
सात बरस के कुँवर कन्हैया, पाँच बरस राधा गोरी ।।३।।
घुटुअन कीच भई आँगन में, खेलौ मिल जोरी-जोरी ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि, बाबा नन्द खड़े पोरी ।।४।।

उत मत जा, ठाड़ो मुकट वारो ।।

ग्वालबाल सब सखा साथ ले, घूम रह्यो री कनुवा कारो ।। उत...
अबीर गुलाल के बादल छाये, उड़ रह्यो रंग टेसू वारो ।। उत...
जारी झरोकन झोके हवेली, तक-तक पिचकारी श्याम मारो ।।.उत...
मैं घिर गई सखि वाके गैल में, रमण पिया मोहे रंग डारौ ।। उत...

हाँ कृष्णजी खेलें होरी, इत राधे वृषभानु किशोरी ।

माधव रंग राधे पर डारे, तक तक के पिचकारी मारे ।
गहरी घोट गुलाल कुमकुमा, केशर घोरी रे ।। कृष्ण...
ताल मृदंग झाँझ डफ बाजे, स्वर समाज मिल घन ज्यूँ गाजे ।
ऐसी छटा निहार सखि, आई दौड़ी-दौड़ी रे ।। कृष्ण...
तबहि श्याम सब सखा बुलाये, विवध भाँति पकवान मँगाये।
मन चित्त से रहे बाँट कृष्णजी, भर-भर झोरी रे ।। कृष्ण...
लीला पुरूषोत्तम गिरधारी, भक्त हेतु प्रगटे अवतारी ।
सोलह कलावतार संग सोहे राधे प्यारी रे ।। कृष्ण...

कैसे आऊँ रे साँवरिया, थारी ब्रजनगरी, कैसे आऊँ रे ॥
तेरी नगरी में कीच बहुत है, पाँव चलूँ तो भीजे घगरी ॥ कैसे...
तेरी नगरी में यमुना बहत है, पनियाँ भरन आई सगरी ॥ कैसे...
तेरी नगरी में दान लगत है, श्याम करे झगरा-झगरी ॥ कैसे...
तेरी नगरी में फाग मची है, मोहन रोक लई डगरी ॥ कैसे...
लाल गुलाल के बादल छाये, केशर रंग भरे गगरी ॥ कैसे...
भर पिचकारी मारत मोहन, चुनरी भींग गई सगरी ॥ कैसे...
मो पर तो रंग हँस-हँस डारत, मोहन आप भयो भंगरी ॥ कैसे...
'रामसखी' तुम्हरो जस गावै, हृदय धरूँ तुम्हरी पगरी ॥ कैसे...

निकस नेक होरी में, क्यों बैठी नार मन मार ।
फागुन में सुन ओ मतवारी, गोरी तेरी क्यों मति मारी,
यह मौसम है दिन चार, निकस नेक होरी में ॥ क्यों...
क्यों बैठी निज जाय अटारी, खेलो फाग भरो पिचकारी,
आयो रसिया श्याम तेरे द्वार ॥ निकस नेक होरी में ॥ क्यों...
क्यों डरपे मोसे छोड़ अटरिया, मैं वारो तू तरुण गुजरिया,
जरा घूँघट नेक उघार ॥ निकस नेक होरी में ॥ क्यों...
बिन होली खेले नहीं जाऊँ, तेरो सगरो चीर भिगाऊँ,
चाहे गारी देय हजार निकस नेक होरी में ॥ क्यों...
खेलत फाग अमिय रस छावे, यह चेतन रस रसियाई पावे,
रस लूटे पथिक अपार ॥ निकस नेक होरी में ॥ क्यों...

श्रीगिरिधरलाल की बानिक ऊपर आज सखी इन टूटे री ।
चोवा चंदन अगर कुंकुमा पिचकारिन रंग छूटे री ॥१॥
लाल के नैना रंगम में देखियत अंग अनंगन लूटे री ।
कृष्णदास धन्य धन्य राधिका अधर सुधारस छूटे री ॥२॥

(श्री) स्यामाजू खेलत रंगभरी रंग हो हो हो हो हो होरी ।
रंग रंगीली सहचरि सँग लियें हाथनि फूल गुलाब छरी ॥
एक ओर कीने मनमोहन तिनकी सखी तिन ओर करी ।
रमकि रमकि उपकरन लियें कर झमकि झमकि आई सबरी ॥
उड़ि जु गुलाल अरुन भयो अम्बर पिचकारिन की लागी झरी ।
बढ़्यौ खेल रसरेल पेल कौ सुधिहू की जहाँ सुधि बिसरी ॥
डफहि बजावति गावति चाँचरि गारि धमारिन धूम परी ।
भयौ है बिपिन सब राग रंगमय कौतुक बरन्यौ जात न री ॥

या मतवारे मीत सों मिलि चाँचरि खेलौ री !
कोउ रहौ न अकेलि अकेलिय हेली सुनो सब हेलौ री !
चोवा चंदन अरगजा लै रँग में रेलौ री !
और अबीर गुलाल उड़ै बूकाबंदन मेलौ री !
होय निसंक सुटंक टरौ जिनि जानि अबेलौ री !
छैल के फैल की सैल सबै सोई आज उजेलौ री !
बहु दिनकी मनकी रली भलीभाँति सकेलौ री !
श्रीहरिप्रिया प्रताप तें दुख पाँयन पेलौ री !
उठी उमंग उर अलबेली के मुख लेपन मिस आनि अरी ।
श्रीहरिप्रिया निसंक अंकभरि लीनी प्रान सजीवन जरी ॥

मोरी अँखिया गुलाबी कर डारी रसिया ॥
हाथ में लाल, गुलाल फेंट में, दो मुट्ठी भर मारी रसिया ॥ मोरी...
अँगिया तोड़, मरोड़ी बैयां मोरी, पिचकारी भर मारी रसिया ॥
मोतियन माँग भरी बिखरी मोरी, सास सुनेगी दे गारी रसिया ॥
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि, चरण कमल बलिहारी रसिया ॥

आनंद अहलादिनि दोउ, रति रँग रेलि रचाय ।
रसहोरी खेलत भये, सगबग सहज सुभाय ॥
प्यारी बिहारीलाल सौं रस होरी खेलैं ।
लटकीली गजचाल सौं बूकाबंदन मेलैं ॥
जोवन जोर उमंग सौं रति रंगहिं रेलैं ।
लै पिचकी करकमल सौं पिय तनपर पेलैं ॥
अति निसंक लच लंक सौं भरि अंक सकेलैं ।
गहि गाढ़ी अहलादिनी आनंद अलबेलैं ॥
अतर लाय तन तर करी नव तिया नवेलैं ।
सगबग कीनी ढारि कैं सीसी जु फुलेलैं ॥
चहल पहल भइ महल कैं या बगर बगेलैं ।
श्रीहरिप्रिया जे धन्य हैं ते यह रस झेलैं ॥

अवलोकन मुख-माधुरी, परिहैं अंतर आय ।
बाल अहो बलि डारिये, इनि नैंननहिं बचाय ॥
एहो बचाय डारौ इन नैंननहिं सुनियहु स्यामा प्यारी ।
अंतर मुख अवलोकनिकौ सहि सकत न सौंह तिहारी ॥
लिये गुलाल कर जब देखौं तब डर लागत जिय भारी ।
मति यह आनि परै अँखियन में अचानकी अँधियारी ॥
पहिले ही रँगि रह्यौ प्रेम-रँग पुनि तुम केसरि डारी ।
कहा कहौं यह प्रीति रावरी अदभुत रीति निहारी ॥
मधु डोलनि हो हो बोलनि पर प्रान करौं बलिहारी ।
श्रीहरिप्रिया बसी हिय में छबि टरत नहीं छिन टारी ॥

अब आयो फागुन मास श्याम मोसों रिस न करो ।
तोपे तन मन वारूँ लाल-श्याम मोसों रिस न करो ॥
फागुन मास सुहानो आयो हिल मिल खेलो रंग ।
पिचकारिन की धार चले जब ग्वाल बजावे चंग ।
मेरे जीवन धन घनश्याम, श्याम मोसों रिस न करो ॥१॥
लाल गोपाल निहारे कारण अति आतुर मैं आई ।
चोवा चंदन अतर अरगजा केशर घोर मँगाई ।
तोपे वारूँ यौवन आज-श्याम मोसों रिस न करो ॥२॥
प्रेम-रंग में रँग गये मोहन, मधुर मधुर मुसकाए ।
ग्वालिन के कोमल कर अपने कर सो आज उठाए ।
गालन पर मली गुलाल-श्याम मोसों रिस न करो ॥३॥

कल तुम कहाँ थे कन्हाई, हमें कल नींद न आई ।
जावो जी जावो श्याम बातें न बनाओ, मोहे न सतावो कन्हाई-२,
अपनी जरी कछु काहे बैठूँगी, सास सुने रिस आई ।
हमें कल नींद न आई ॥
तुम्हरी रैन चैन सों बीती, हम सारी रैन गँवाई ।
मैं तड़फत रही कर मल-मलकर मुर गई नरम कलाई,
हमे कल नीदं न आई ॥
चोवा चंदन और दृग अंजन मोतियन मांग भराई-२,
रात को श्याम तिहारे कारण फूलन सेज बिछाई ।
हमे कल नींद न आई ॥

राधा राधा रटत ही, सब बाधा मिट जाय ।
कोटि जनम की आपदा, राधा नाम ते जाय ॥

पायलागूँ कर जोरी श्याम मोसों खेलो न होरी ।
गाय चरावन को मैं निकसी सास ननद की चोरी,
सगरी चूनरि मेरी रंग में न बोरो, इतनी अरज सुनो मोरी ।
करो न बहियाँ झकमोरी ॥१॥ पायलागूँ ...
छींन झपट मोरे हाथ से गागर जोर ते बेहिंया मरोरी ।
दिल धड़कत है साँस चढ़त है देह काँपत है मोरी ।
दुःख नहीं जात कहोरी ॥२॥ पायलागूँ ...
अबीर गुलाल लिपट गयो मुख से सारी सुरंग रँग बोरी ।
सास हजारन गारी देगी बालम जियत न छोरी ।
हृदय आतंक भयो री ॥३॥ पायलागूँ ...
फाग खेल के तेने मोहन, का कीनी गती मोरी ।
सूरदास मोहन छवि लखिके अति आनन्द भयोरी ।
सदा उर बास करोरी ॥४॥ पायलागूँ ...

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल ।
लाली देखन मैं गई, मैं भी है गई लाल ॥
सखि सब है गये लालहिं लाल, **सखि सब है गये लालहिं लाल ।**
ऐसो रंग चल्यौ पिचकारिन, ऐसो उठ्यौ गुलाल ॥ सखि सब...
लाली लाल भये लालनहुँ, लाल भई ब्रजबाल ।
तरुबर लाल, लाल भये सरबर, शुक, पिक, लाल मराल ॥ सखि.
धेनु लाल, ब्रजरेनु लाल भई, लाल भये सब ग्वाल ।
बाह रे लाल, कृपाल फाग को, भीतर लाल गोपाल ॥ सखि सब**...**

राधा राधा नाम कूँ, सपने हू जो लेय ।
ताकौं मोहन साँवरौ, रीझि अपन कों देय ॥

रंग डार गयो री, बांको साँबरिया रंग डार गयो री ॥
सारी मेरी बनी जरतारी, पिचकारी तन पे मार गयो री ॥ रंग...
चौवा चन्दन अतर अरगजा, कँचुकि मोरी फाड़ गयो री ॥ रंग...
मृदु मुस्कान लिये अधरन रस, घूँघट मेरो उतार गयो री ॥ रंग...
कृष्ण लाड़िलो देखत देखत, वो तो यहाँ ते भाज गयो री ॥ रंग...
रंग डार गयो डार गयो डार गयो री ।

गलियन में घिर गये नन्दलाला ॥
राधाजू ने पकड़ी बहियाँ नाच उठी सब ब्रजबाला । गलियन में...
मोर मुकुट पीताम्बर छीन्यो, छीन लई रे मुरली माला ॥ गलियन में...
चूनर-चोली ललिता पहराई, अरे लहँगा घेर घुमर वाला ॥ गलियन...
नक-बेसर सिर माँग भराई, हो नाच दिखावे मुरली वाला ॥ गलियन...
रमणदास लख लली-लाल को, हो झूम उठा रे जैसे मतवाला ॥

साँची कहो मनमोहन मोसों को खेलो तुम संग होरी ।
आजु की रैनि कहाँ रहे मोहन कहाँ करी बरजोरी ॥१॥
मुख पर पीक पीठि पर कंकन हिये हार बिन डोरी ।
जिय में ओर ऊपर कछु ओर चाल चलत कछु ओरी ॥२॥
मोहि बतावत मोहन नागर कहा मोहि जानत भोरी ।
भोर भये आये हो मोहन बात कहत कछु जोरी ॥३॥
सूरदास प्रभु ऐसी न कीजे आय मिलो कहाँ चोरी ।
मनमोन त्यों करत नंदसुत अब आई है होरी ॥४॥

होरी खेलत हैं गिरधारी !
मुरली चंग बजत ढफ न्यारो, सँग जुबति ब्रजनारी ॥
चंदन केसर छिड़कत मोहन, अपने हाथ बिहारी ॥
भरि-भरि मूठ गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी ॥
छैल छबीले नवल कान्ह सँग, स्यामा प्राण पियारी ॥
गावत चार धमार राग तहँ, दै दै कल करतारी ॥
फाग जु खेलत रसिक साँवरो, बाढ़्यो रस ब्रज भारी ॥
मीरा कूँ प्रभु गिरधर मिलिया, मोहनलाल बिहारी ॥

अरी मेरी चूनर कर दई लाल मचा रह्यो ब्रज में होरी ॥
तुम दौड़ी-दौड़ी अइयो, महलन केसर घुरवइयो,
भर-भर के कमोरी लइयो, मोहन कूँ फाग खिलइयो,
अरी याको कर देओ री बेहाल मचाय रयो ब्रज में होरी ॥
रही खेल विशाखा डरके, फिर राधे गई सँवरकै,
यापै रंग डार्यो भर-भर के, राधे कहै अब क्यों डरपै,
अरी याने रंग दीन्हों गोपाल मचा रह्यो ब्रज में होरी ॥
फिर श्याम सखा अर्राए, भर-भर पिचकारी लाए,
गोपिन पै रंग बरसाए, हम रंग रंगीले आए,
अरी मल दीन्हें गाल गुलाल मचाय रयो ब्रज में होरी ।
अरी सुकदास भए निहाल मचाय रयो ब्रज में होरी ॥

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय ।
जा तन की झाईं परत, स्याम हरित दुति होय ॥

तुम आवो री तुम आवो। मोहन को गारी सुनावो। होरी रस रंग बढ़ावो ॥१॥
हरि कारै री हरि कारै। यह है बायनबीच वारौ। होरी रस रंग बढ़ावो ॥२॥
हरि नटवा री हरि नटवा। राधाजू के आगे लटुवा। होरी रस रंग बढ़ावो ॥३॥
हरि मधुकर री हरि मधुकर रस चारवत डोलत घर। होरी रस रंग बढ़ावो ॥४॥
हरि खंजन री हरि खंजन राधाजू के मन कौ रंजन। होरी रस रंग बढ़ावो ॥५।
हरि रंजन री हरि रंजन ललिता लै आई अंजन। होरी रस रंग ॥६॥
हरि नागर री हरि नागर जाको बाबा नन्द उजागर। होरी रस रंग ॥७॥
हम जाने री हम जाने। राधा गहि मोहन आने। होरी रस रंग ॥८॥
मुख माँड़ो री मुख माँड़ो। हरि हा हा खाड़ तो छाड़ो। होरी रस रंग ॥९॥
हम भरि हैं री हम भरि हैं। काहुते नेक न डरि हैं। होरी रस रंग ॥१०॥
हरि होरी हो हरि होरी। श्यामाजू केशर घोरी। होरी रस रंग ॥११॥
हरि भावै री हरि भावै ॥ राधा मन मोद बढ़ावो। होरी रस रंग ॥१२॥
रंग भीनों री रंग भीनो। राधा मोहन बस कीनौ। होरी रस रंग ॥१३॥
हरि प्यारो री हरि प्यारो। राधा नैनन को तारो। होरी रस रंग ॥१४॥
हम लैहैं री हम लैहैं। फगुवा ले गारी न दैहैं। होरी रस रंग ॥१५॥
यह जस परमानंद गावै। कछु रहसि बधाई पावै। होरी रस रंग बढ़ावौ ॥१६॥

साँवरे मोते खेलो न होरी।
मैं अबही आई या ब्रज में, मोते करी मती बरजोरी।
जल भरवे पठई ननदी ने, जमुना जी को घेरी।
गैल छैल तज दीजै अब ही, सास लड़ै पिया मोरी।
जान परत छलिया तुम बाँके, हम जिय की बड़ी भोरी।
समुझत हो तुम ढीठ नन्द के, करत फिरत दधि चोरी।
बहुत अनीति डगर में रोकत, जो निकसै कोई गोरी।
'हीरा सखी हित' बरजत मोहन, नख-शिख लौं रंग बोरी।
मन आशा पूरण कीनी सब, गागर सिर पे फोरी।

फाग खेलन बरसाने आए हैं, नटवर नन्द किशोर ।।
घेर लयी सब गली रंगीली,
छाय रही छवि छटा छबीली
ढप ढोल मृदंग बजाए हैं, बंसी की घनघोर ।।
जुर मिलि कैं सब सखियां आई,
उमड़ि घटा अंबर में छाई
नैन अबीर गुलाल उड़ाए हैं, मारत भरि भरि झोर ।।
लैं रहे चोट ग्वाल ढालन पै
केसर कीच मलै गालन पै
हरियल बांस मंगाए हैं, चलन लगे चहुँ ओर ।।
भइ अबीर की घोर अंधियारी,
दीखत नाय कोई नर औ नारी
राधे ने नैन चलाए हैं, पकरै माखन चोर ।।
जो लाला घर जानों चाहौ,
तो होरी को फगुवा लाओ
अब स्याम के सखा बुलाए हैं, बांटत भरि भरि झोर ।।
राधे जू की हा हा खावो,
सब सखियन के घर पहुंचावो
'घासीराम' कथ गाए हैं, भयो कविता को शोर ।।

प्यारी नवल वन नव केलि |
नवल विटप तमाल उरझी माधवी नव बेलि ||
नव बसन्त हसंत द्रुम गन जरा जड़े पेलि |
सिखिर मिथुन विहंग कुलकत मची ठेला ठेलि ||
तरनि तनया तट मनोहर मलय पवन सहेलि |
कृष्णदासनि नाथ गिरधर तू हि कुँवरि नवेलि ||

अरी ये तो फाग खेलकर आयो री बरसाने से कन्हैया ।।
गयौ तो बनके छैल नन्द को,
देखो हाल आज ब्रजचंद को,
अरी याके अंजन नैन लगायो री बरसाने से कन्हैया ।।
बंसी मोर मुकुट नटवर को,
नजर ना आवै याको पीरो पटको,
अरी ये तो गोरी बनके आयो री बरसाने से कन्हैया ।।
मुख सें बोल निकर नहीं पावै,
नजर बचा के भाज न जावै,
अरी ये तो गुलचा खाय के आयो री बरसाने से कन्हैया ।।
गयौ अकड़ के गातो बजातो,
रंग अबीर गुलाल उड़ातो,
अरी ये तो मुँह लटकाय के आयो री बरसाने से कन्हैया ।।
होरी है होरी है, बरसाने की गोरी है ।
नंदगाँव को छोरा है, बरसाने की छोरी है ।।
होरी है भई होरी है, राधा श्याम की जोरी है ।
होरी है बरजोरी है, राधा भानु किशोरी है ।।

भामिनि चंपे की कली ।
वदन पराग मधुर रस लंपट नव रंग लाल अली ।।
चोवा चन्दन अगर कुंकुमा करि जु सिंगार चली ।
खेलत सरस वसंत परस्पर रवि की कांति मिली ।।
ताल मृदंग झांझ डफ बीना, बीच बीच मुरली ।
कृष्णदास गिरधर हिलि मिलि रंग रली ।।

फाग खेलौ बृषभान की दुलारी।
टोली ग्वालन की लाये बनवारी॥
मास फागुन कौ भागन ते आयौ,
तिथी नौमी शुदी पाख लायौ,
भक्त दरसन कूँ आए हैं भारी। फाग खेलौ वृषभान...
श्याम ग्वालन कूँ मन्दिर ले आए,
फाग होरी के सबनै मचाए,
भर कै पिचकारी कान्हा नैं मारी। फाग खेलौ वृषभान...
होरी रंग की मची धूम भारी,
रंग में भीजी सखी राधे प्यारी,
गारी कान्हा कूँ गामें बृज नारी। फाग खेलौ वृषभान...
गोरे नन्द यशोदा सी मैया,
तुम कारे कहाँ ते भए छैया,
पूछे कान्हा ते राधे सुकुमारी। फाग खेलौ वृषभान...
खेल मन्दिर ते होरी जब आए,
गोपी ग्वालन के झुण्ड सज धाए,
गली शोभा रंगीली की न्यारी। फाग खेलो वृषभान...
हाथ सखियन के छरियाँ सुहामें,
ग्वाल हाथन में ढाल लिए आमें,
मारै गोपी मची धूम भारी। फाग खेलौ वृषभान...
भीर भई है बरसाने में न्यारी,
देखें चढ़ कैं सब अट्टा अटारी,
देव ठाड़े विमानन सुखारी। फाग खेलौ वृषभान...
ब्रज बासी नै विनती सुनाई,
राधे काहे कौं देर लगाई,
मैं आयौ सरन हूँ तिहारी। फाग खेलौ वृषभान...

अब चलो सब मिल जाय खेलन होरियाँ ।
अपनी अपनी सुंदर चुनरी, अँगिया केशर वोरियाँ ॥
चोवा चंदन अगर कुमकुम, भरि-भरि देत कमोरियाँ ।
अंग सो अंग गुलाल विराजत, भली बनी यह जोरियाँ ॥
पिचकारी मोहन पर डारत, बिहँसी घूँघट खोलियाँ ।
बाजत ताल मृदंग और ढफ, पढ़ि-पढ़ि बोलत बोवियाँ ॥
नैन औज मुख माड़ श्याम को, सब मिल करत कलोलियाँ ।
सूरदास प्रभु सब सुख क्रीडत, बिहरत ब्रज की छोरियाँ ॥

लाल गोपाल गुलाल हमारी, आँखिन में जिन डारो जू ॥
बदन चन्द्रमा नैन चकोरी, इन अंतर जिन पारो जू ।
गावो राग बसंत परस्पर, अटपटे खेल निवारो जू ।
कुमकुम रंग सो भरी पिचकारी, तकि नैनन जिन मारो जू ।
बंक विलोकन दुख मोचन, लोचन भरि दृष्टि निहारो जू ।
नागरी नायक सब सुखदायक, कृष्णदास को तारो जू ।

गौहन लागी रे, अरे हेरे लाला गौहन लागी रे ।
रसिया गोकुल की गुजरी की हेली गौहन लागी रे ॥
भर पिचकारी दै गयौ द्वारे, लाज न देखी रे ।
अरे हेरे लाला लाज न देखी रे ।
रसिया गोकुल की गुजरी की हेली गौहन लागी रे ॥
काल गये तुम भाग लाल जू आँगुरी हेटी रे ।
बरजोरी शृंगार भिजोयौ, विधि निधि भेटी रे ।
अरे हेरे लाला विधि निधि भेटी रे ।
रसिया गोकुल की गुजरी की हेली गौहन लागी रे ॥

मैं तौ होरी खेलूँगी आज, मैं तो होरी खेलूँगी आज ।
अपने सुघर बलम के राज, मैं तो होरी खेलूँगी आज,
अपनेरी अपने मंदिर सौं निकसी करके अजब शृंगार ।
राधा गोरी होरी खेलै, उत बृज राज कुमार,
मैं तौ होरी खेलूँगी आज, मैं तौ होरी खेलूँगी आज ।
अपने कुँवर बलम के राज, मैं तौ होरी खेलूँगी आज ॥१॥
रंग अबीर गुलाल उड़ायौ, अम्बर है गयौ लाल ।
सखियन नै पकरे बनवारी, कर दिए नर ते नार ॥
मैं तौ होरी खेलूँगी आज, मैं तौ होरी खेलूँगी आज ।
अपने सुघर बलम के राज, मैं तौ होरी खेलूँगी आज ॥२॥
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि देखें बृज की नार ।
मस्त महीना फागुन आयो, जीवन है दिन चार ॥
मैं तो होरी खेलूंगी आज, मैं तो होरी खेलूँगी आज ।
अपने सुघर बलम के राज, मैं तो होरी खेलूँगी आज ॥३॥

कुँज विहारी कौ वर वसंत चलहु न देखन जाँहि ।
नव वन नव निकुञ्ज नव पल्लव नव जुवतिनि मिलि माँहि ॥
वंसी सरस मधुर धुनि सुनियति फूली अंगन माँहि ।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सौं प्रेमहि छिरकत छैल छुवाहि ॥

आजु वसंत बन्यो सखी वन में ।
फूल सों लाल लड़ावत लाड़िली खेलत मत्त मदन में ॥
फूली लता ललितादिक देखत फूल बढ़ी तन मन में ।
फूल सौं दासि विहारिनि गावति फूल के सुख सदन में ॥

रंगीली होरी खेलन कूँ बरसाने में आये घनश्याम ।
सब लीने सखा बुलाई चलौ होरी खेलन भाई ।
एक टोली लेओ बनाई अरू सब सामान सजाई ।
अब लेओ गुलाल भरवाय, फेंट कसवाय, हाथ पिचकारी ।
सिर बंधी लटपटी पाग, कमरिया कारी ।
अब चले मनसुखा श्रीदामा मधुमंगल अरू बलराम ।
रंगीली होरी खेलन कूँ ॥
जहाँ पहुँच गए गिरधारी, देखन आई ब्रजनारी ।
सखी कोऊ गोरी कोई कारी, संग में श्री राधा प्यारी ।
अब खेलें मिलके रंग, एक ही संग, सीस सों डारैं ।
भर भर पिचकारी तान, तान कैं मारैं ।
खेलै फाग परस्पर हिलमिल, बरसानों नंदगाँम ।
रंगीली होरी खेलन कूँ ॥
देखन कूँ ब्रह्मा आये मुनि नारद बीन बजाए ।
कैलाष छोड़ शिव धाये, संग पारवती हूं लाये ।
सुर पुष्प रहे बरसात, बहुत हरसाय, निरख छवि भारी ।
हमें ब्रज को दीजौ बास, अरे गिरिधारी ।
सांवलिया कथ रसिया गामैं, बसे तौ गोवरधन धाम ।
रंगीली होरी खेलन कूँ ॥

रहसि रस राचे हो दंपति खेलत सरस बसंत |
मृग मद केसरि तन छबि छिरकत हँसन अबीर लसंत ||
रूप सनेह वृत्ति दुहुँ दिसि अलि सूचत राग मैमंत |
प्रेम सहित नूपुर धुनि बाजत बीन परम रस वंत ||

होरी कौ महिना लग्यो, सुन गोरी चतुर सुजान ।
द्वार तिहारे आ गये, अरी होरी को मेहमान ।।
होरी के मेहमान, इन्हें भीतर बुलवायले ।
अरी पट्टा पर बैठार, प्रेम से इन्हें जिमायले ।।

दोहा –
'गोरी' होरी खेलिबौ सहज नहीं, यह प्रेमिन को खेल ।
झटका पटकी श्याम की, झेल सके तो झेल ।।

होरी मीठी न लगत, बिन झकझोरी । होरी.....
बिन गुलाल गाल हु नहिं सोहत,
सोहत ना चूनर कोरी ।। होरी.........
'गोरी' मीठी न लगत बिनु रंग बोरी । होरी.....
बरजोरी बिनु रंग नहीं सरसत,
बरसत नहीं रस बिन चोरी ।। होरी.....
चोरी मीठी न लगत बिन सीना जोरी । होरी................
पिचकारिन, गारिन, रंग सरसत;
बरबस, बस कर सिसकोरी ।।
भोरी मीठी न लगत बिन मुँहजोरी । होरी ....
'प्रियदर्शी' रसिया संग गोरी,
(साँकरी) खोरिन में रंग रस बरसोरी;
खोरी, मीठी न लगत बिन हो हो होरी ।। होरी ....

चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं | कुञ्ज निकुञ्ज मंजु में झेलैं ||
जहाँ पंछिन सहित सखी न संग कोऊ तिंहि वन चलि मिलि केलैं |
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामां प्रेम परस्पर वूका वंदन मेलैं ||

कवित्त

होरी में गोरी मत छेड़ इन रसियन कूँ,
माँगेंगे माखन तो नाहीं कर नाँटैगी ।
बुलावेंगे प्रेम सो ना आवैगी हमारे ढिंग,
हमें देख कुञ्ज गली की गैल काटैगी ।।
गोरी होरी खेलवो सहज नहिं रसियन सों,
ऐंचातानी होयगी तब सीरनी-सी बाँटैगी ।
लैके गुलाल जब मलेंगे तेरे दोऊ गाल,
तो सिसकारी भर-भरके खीर-सी ये चाटेगी ।।

मचल गई गोरी हाय रसिया पै ।
अजब नजारौ है रसिया को, कंचन देह बन्यो रसिया को,
उमर याकी थोरी हाय रसिया पै ।। मचल........
हट करकै यानै बचन सुनायो, ये रसिया मेरे मन भायो,
खेंच लई गोरी हाय रसिया पै । मचल.........
बंसी वारो जादू कर गयो, नैनन में मेरे ये भर गयो,
प्रीत कर गोरी हाय रसिया पै ।। मचल.......

"गोरी" होरी खेलिबो सहज नहीं, यह प्रेमिन को खेल ।
झटका-पटकी श्याम की, झेल सके तो झेल ।।
तू छत पै ते कहाँ झाँके, आजा यहाँ दगरे में ।
प्रेम ते होरी खेल ले गोरी, कहा धर्‌यो नखरे में ।।

नखरे ते बात बिगर जायगी, तू खेल प्रेम से होरी ।।
ऐसो अवसर फिर नाय आवै, प्रेम होय तब दर्शन पावै,
तेरी बिगड़ी सभी सुधर जायगी, तू खेल प्रेम से होरी ।।१।।
दे आदर भीतर बुलवायले, मन गुन की सगरी बतरायले,

तेरी किस्मत आज सँवर जाएगी, तू खेल प्रेम से होरी ।
देख जरा तू नजर मिलायके, घूँघट कूँ नैक ऊपर उठायके,
याकी एक झलक में मर जाएगी, तू खेल प्रेम से होरी ॥२॥
कहा धर्‌यो है शरमायवै में, बात बनैगी बतरायवै में,
तेरी सूनी गोदी भर जाएगी, तू खेल प्रेम से होरी... ॥३॥
कवित्त
फागुन मास लग्यो जब ते, अरी कोंहकन लागै चहुँ दिशि मोरा ।
अरी तोही ते होरी खेलबे आये, नेक करेंगे तेरे निहोरा ॥
बाहर निकसके होरी खेलो, तेरे मान गुमान को फोरेंगे कोरा ।
हम ग्वालन की आशीष यही है, तोपै अगली होरी में होयगो छोरा ॥
तेरी सूनी गोदी भर जाएगी, तू खेल प्रेम से होरी ॥४॥
जनम बीत गए तेरे सारे, भटकत भटकत द्वारे द्वारे,
यह शुभ घड़ी यों ही निकर जाएगी, तू खेल प्रेम से होरी ॥५॥
जनम २ कौ मैल छुड़ायलै, श्याम रंग चूनर रंगवायलै,
याकी चमक उतर नहिं पावैगी, तू खेल प्रेम से होरी ॥६॥
कहे मन सुख सुन घूँघट वारी, आज मान लै बात हमारी,
तू भव ते पार उतर जायगी, तू खेल प्रेम से होरी ॥७॥

लाड़ी जू थारौ अविचल रहौजी सुहाग ।
अलक लड़े रिझवार छैल सों नित नव बढ़ौ अनुराग ॥
यों नित विहरौ ललितादिक संग श्री वृन्दावन बाग ।
रूप अली हित युगल नेह लखि मानत निजु बड़ भाग ॥

प्रथम सीस अरपन करै, पाछै करै प्रवेस ।
ऐसे प्रेमी सुजन कौ, है प्रवेस यहि देस ॥

कवित्त -
फाग की भीर अबीरन में गही, गोविन्द लै गई भीतर गोरी ।
भायकरी मन की पदमाकर, ऊपर डार अबीरन की झोरी ।।
छीन पीताम्बर लै लकुटी, सो विदा दई मींड कपोलन रोरी ।
नैन नचाय कही मुसकाय, लला फिर अइयो खेलन होरी ।।
अरे लाला तोहे मजा चखाय दऊँगी, जब आवैगौ होरी पै ।।
तोहे नर ते नार बनाऊँ, लहँगा फरिया तोहे पहराऊँ,
तोहे सखियन बीच नचाय दउँगी, जब आवैगौ होरी पै ।
केसर कीच कुमकुमा घोरूँ, पकरके तोकूँ रंग में बोरूँ,
तोहे तर्रम तर्र कराय दउँगी, जब आवैगौ होरी पै ।
देखलउँ तेरे सगरे हिमायती, ग्वाल बाल सगरे उतपाती,
इन खंमन ते बँधवाय दउँगी, जब आवैगो होरी पै ।
मत समझै भोरी भारी मैं, कसक निकारूँगी सारी मैं,
तोहे घुटुवन श्याम चलाय दउँगी, जब आवैगो होरी पै ।
दे गुलचा गरबा धर दउँगी, मोंह्ड़े में लड़ुआ भर दउँगी,
तोहे 'नानी' याद कराय दउँगी, जब आवैगो होरी पै ।

रंग में रंग रँगमगी करी सखी री वा नँदलाल नें ।।
गईजो मैं यमुनाजल भरन, साजतन सब श्रृंगार आभरन,
आय गयौ वह रसिया मनहरन,
दोहा - *वा रसिया मनहरन ने मगमें लीनी घेर ।*
पिचकारी सन्मुख दई गागर दीनी गेर ।।
गाल गुलाल मल्यौ वा मेरे मोहनलाल ने ।।१।। रंग में रंग....
अकेली मैं उनके सँग ग्वाल, कियौ उनने मेरौ बेहाल,
नाचें गावें होरी ख्याल ।।

दोहा - *भर भर झोरी उडावते रंग बिरंग गुलाल ।*
गावें सरस धमार सब चलें अटपटी चाल ॥
मोतिन लर तोरी बरजोरी करी गुपाल नें ॥२॥ रंग में रंग....
बजावें ढफ बीना मुरचंग, झालरी मुरली चंग उपंग,
दुंदुभी भेरी संख मृदंग ॥
दोहा - *बाजे बहुबिध बाजते ढोल बेणु करताल ।*
बल-मोहन हैं मध्य में चहुँ दिश नाचें ग्वाल ॥
यह बिध होरी खेल मचायौ जगप्रतिपाल ने ॥३॥ रंग में रंग....
करी मैं बिनती बहुत प्रकार, धनि धनि तुम कूँ नंदकुमार,
प्रभु तेरी लीला पै बलिहार ॥
दोहा - *सरवस डारूँ वारके तुम पर दीनानाथ ।*
दरसन दैकें आपने मोकूँ कियो सनाथ ॥
मोकूँ कियौ सनाथ कृपाकर दीनदयालने ॥४॥ रंग में रंग....

जोगी रंग भीना आया । अच्छा सींगी नाद बजाया ॥
मोतिन लर अलक संगा । मानों जटा जूट में गंगा ॥
लिलाट में चंदन विंदा । मानौं किये भूषन इन्दा ॥
कुण्डल की चमक गहरी । कपोलनि छबि की लहरी ॥
अंग अंग भूषन वाजैं । मनौं सुर डँवरू गाजै ॥
मलिया गिरि भस्म सँवारें । पीतांवर गूदरी धारें ॥
सोहे वाम भाग में प्यारी । मानौं अरधंग सँवारी ॥
जोगी छबि बावरो डोलै । राधे राधे राधे बोलै ॥
मोहन मंत्र फूँकि के मारी । सब ब्रज मोहनी डारी ॥
जोगी सब संतौदा प्राना । शरन मलूक न माना ॥

आज मैं रंग में बोरी मोहन नंदकुमार ॥
गई जमुनाजल भरिवे आज, गई ग्वालन की टोली आय,
रहे बहु रँग बिरंग उड़ाय ॥
॥ दोहा ॥
मोर मुकुट कटि काछनी गल बैजंतीमाल ।
रतनजटित पिचकारी कर लियें मदनगुपाल ॥
दई पिचकारी सन्मुख मेरे कृष्णमुरारि ॥१॥ आज मैं...
दई मैं सबरी रंग में बोर, न माने एकहु नंदकिसोर,
री मेरी बैयाँ दई मरोरि ॥
॥ दोहा ॥
बाजे बाजत बहुत बिधि ढफ ढोलक करताल ।
बीना महुवर किन्नरी मुरली मधुर रसाल ॥
अनोखौ ब्रज में देख्यौ होरी कौ खिलवार ॥२॥ आज मैं...
मल्यौ मेरे मुख अबीर गुलाल, लई भरि अंकम श्रीनँदलाल,
हँसि रहे तारी दै सब ग्वाल ॥
॥ दोहा ॥
तारी दै दै हँसि रहे ग्वाल बाल मुख मोर ।
मन भायौ अपनों कियौ मोहन माखनचोर ॥
लाज याहै नेक न आई गायन कौ रखवार ॥३॥ आज मैं...
प्रभु की लीला अपरंपार, निरखि के सुरमुनि करत विचार,
बिधाता हम न भई ब्रजनारि ॥
॥ दोहा ॥
या ब्रज की रज के लिये ब्रह्मादिक ललचाय ।
सो ब्रजरज ब्रजगोपिका सहज कृपा ते पाय ॥
अरे मन कृष्ण-कृष्ण कहि, है जाय बेड़ापार ॥४॥ आज मैं...

कृष्ण ने सुन बहिना चूनर पै दियौ रंग डार ॥
लई धोखे में मो कूँ घेर, पिछारी सों रँग दीनों गेर,
श्याम नें नैक करी ना देर ॥
दोहा ॥
ठाडी मो कूँ करि लई मैं भोरी भारी ।
देखे मेरी सास तौ दे लाखन गारी ॥
मटकी दीनी फोर गरे कौ तोर्‍यो मेरौ हार ॥१॥ कृष्ण ने...
मेरी चोली पै परि गये दाग, तुरत नागर नटखट गयौ भाग,
मनायौ ऐसौ मोसो फाग ॥
॥ दोहा ॥
या छल छलिया स्याम ने मोकूँ छल लीनी ।
मुहोंड़े मल्यौ गुलाल और लाल मोहि कीनी ॥
जहाँ देखूँ वह सखी हमारे दीखै ठाड़ौ अगार ॥२॥ कृष्ण ने...
निकसिवे नेक न देवै गैल, भयौ जसुदा कौ ऐसौ छैल,
दिखावै नित नए मोकूँ खैल ॥
॥ दोहा ॥
चतुर बड़ौ घनश्याम है लेवै घटकी जान ।
नित नित यहाँ आय के ठाने हमसों ठान ॥
नटवर नंदकिसोर नैन की मारै बाँकी मार ॥३॥ कृष्ण ने...
अनीति कीनी मोहन आज, कहत में आवै मोंकू लाज,
है रह्यौ सबरे ब्रज में राज ॥
॥ दोहा ॥
मगन मस्त मन में रहै नैंक करै ना दहल ।
बंसीबारे की तुम्हें कहा सुनाऊँ सहल ॥
श्यामलाल रसिया में नयौ रंग लियौ है निकार ॥४॥ कृष्ण ने...

मैंने सुनी भनक होरी में खेल रहे राधे सँग घनस्याम।
बढ़्यौ मेरे मन में अनुराग, दई मैं इकली घर सों भाग,
बड़े भागन सों आयौ फाग ॥
॥दोहा॥
भागन सों आयो सखी अबकौ फागुन मास।
खेलूँगी सँग स्याम के पूजै मन की आस॥
पूजै मन की आस होयेंगे पूरन मन के काम ॥१॥ मैंने सुनी...
सखिन के मिली झुंड में जाय, देखिकें स्याम गये मुसिकाय,
दई पिचकारी सन्मुख आय ॥
॥दोहा॥
पिचकारी सन्मुख दई मेरे नंदकुमार।
चकाचौंध आगें भयौ घूँघट दियौ उघार॥
गाल गुलाल लगायौ मेरे हँसि हँसि सुंदर स्याम ॥ २ ॥ मैंने सुनी...
लिये ललिता ने पकरि ब्रजराज, जाओगे हम सों तुम कहाँ भाज,
कसक सब दिन की निकासें आज ॥
॥दोहा॥
कटि लँहगा पहराय के चूंनर दई उढ़ाय।
बेंदीलाल लगायकें छोड़े नाच नचाय॥
बाजें ताल मृदंग शहनाई होरी गामें बाम ॥३॥ मैंने सुनी...
छन्द :
जाहि आदि अनादि निर्गुण नेति नित कहि गावहीं।
शेष शिव सनकादि नारद श्रुति निगम नित धावहीं॥
ताहि ब्रजकी सकल बाम गुलाल गाल लगावहीं।
होरी खेल खेलावहीं हँसि हँसिकें फाग मनावहीं॥
दियौ फगुआ श्रीमदनगुपाल, भई मन मगन सकल ब्रजनार,
धनि धनि लीला कृष्णमुरार ॥
लियौ कृष्णअवतार आयके नंद-यशोदा धाम ॥ ४ ॥ मैंने सुनी...

कवित्त

अइयो रे छैल तू पिचकारी लै के यहाँ,
हम देखेंगी अनाड़ी है या सच्चो ही खिलाड़ी है ।
इन गोपीन दल सों तू, जीत पावै तो ही जानें,
वैसे तो सुनी है श्याम गिरवर धारी है ॥
अरे नन्द जू के लाल, मत करियो मलाल,
लाला, होरी में होरी एक बरसाने वारी है ।
छोरान में छोरा जैसे नन्द जू के लाल,
वैसे छोरिन में छोरी वृषभानु की किशोरी है ॥
अरे क्यों ज्यादा उछर रह्यो कलुआ;
मैं अभी आई देख सज धज के, भज जइयो मत मोते उर के ॥
जुर आवेंगी मेरी सखियाँ,
जब परन लगै सिरपर लठिया, तब याद करै मैया मैया;
मोहे लैजा आज छुड़ा करके, भज जइयो मत मोते उर के ॥
भर-भर डारूँ रंग को गड़ुवा,
मैं बनाय दउँ तोकूँ भड़ुआ, अरे बीच बजार तेरौ ललुआ;
करूं स्वागत ढोल बजाकर के, भज जइयो मत मोते उर के ॥
तोय गोरो आज बनावेंगी,
तोपे ऐसो रंग चढ़ावेंगी, सोने की तरह चमकावेंगी;
करे मालिस खूब रगड़ करके, भज जइयो मत मोते उर के ॥
करें तेरी ऐसी मेंहमानी,
दिलवादें याद तोकूँ नानी, माँगैगो बार-बार पानी;
गरदन अपनी नीची करके, भज जइयो मत मोते उर के ॥

राधे बनी हर बाला फिरै, हर ग्वाल गोपाल बनै इतरावै ।
बैनन सो कोई बोले नहीं कछु, नैनन सौं बोले बतरावै ॥
अवसर पाय न चूकैं कोई, जो जहि रुचे ताहि कंठ लगावै ।
ऐसो उपाय करो ब्रज ते, यह फागुन मास कबहुँ नहिं जावै ॥
तेने जुलम कियो रे रंग डाल रसिया होरी में ।
मैरो बिगड़ गयो रे श्रृंगार रसिया होरी में ॥
तोसे प्रीत श्याम नहीं पालूँ,
भीज गयो मेरो जरकस शालू,
जाको मोल है रुपया हजार रसिया होरी में ।
परनारी तक-तक के छलिया,
भीग गई मेरी मखमल अँगिया,
जामे जड़े हैं सलमा सितार रसिया होरी में ।
भर-भर डाली गुलाल की झोरी,
झूम झटक मेरी बहियाँ मरोरी,
मेरो टूट्यो नवलख हार, रसिया होरी में ।
अँखियाँ मेरी फड़कन लागी,
छतिया मोरी धड़कन लागी,
सुन-सुन ढप की धधकार रसिया होरी में ।
ऐसो प्रेम को जाल बिछायो,
डार मोहनी मन भरमायो,
तुम धन्य हो नन्द कुमार रसिया होरी में ।

प्रेम सरोवर प्रेम की, भरी रहै दिन-रैन ।
जहँ जहँ प्यारी पग धरैं, लाल धरे दोऊ नैन ॥

सवैया -

डोलत ग्वारिया फाग भरे, मन में घन जोबन को अति गारो ।
नागर साँवरो है तिनके मधि, सोऊँ महा ठगिया बटमारो ॥
कैसे रहै दुरि भौन के कौने, उड़ाय गुलाल धकेलत द्वारो ।
और हु गाँव सखी बहुतै, पर गोकुल गाँव को पैंड़ोहि न्यारो ॥
मोहन फिरत मतवारौ नन्द जसुदा को दुलारो ॥
घेरो सखी याको गैल गिरारो, भागे न कनुवां कारो ।
आज कसर सब दिन की निकारो, गालन में गुलचा मारो ॥
तारी बजाय गारी दै-दै पछारो, राधा पद पद्मन पै वारो ।
मोर मुकुट याके सिर ते उतारो, चूनर को घुँघटा डारो ॥
गोटा जरी को कटि घाघरो घुमारो,अँगिया पहनाय बूँटे दारो ।
चोटी गुँथाय शीश पटियाँ पारो, सेंदुर से मांग सँवारो ॥
नाक बुलाक और नथ भारो, नैनन में कजरा सारो ।
भैया श्रीदामा को दुलहा सँवारो, दुलहिन यशोदा को प्यारो ॥
करिके गठबंधन एक रथ पै बैठारो, ठाठ से सवारी निकारो ।
बाकी अदा पै नोन राई उतारो, राधा जू की जय-जय उचारो ॥
झोली गुलाल याके ऊपर ते ढारो, भीर-भीर के मारो पिचकारो ।
आवै छुड़ावन कोऊ नंदगाँव वारो, वाहू की हुलिया बिगारो ॥
छोड़ो सखी याको तब ही पिछारो (जब), कह दे की मैं तुमसे हारो ।
नारायण मेरे नैनन को तारो, भक्तन को प्राण अधारो ॥

आयौ गुपाल लै संग में ग्वाल री, साँकरी खोर पै रंग मचायौ ।
नैनन कौ सुख दैहौं सखी, कुलकान की बान सबै बिसरायौ ॥
त्यौं बलबीर बन्यौ यह बालक, बीतिहै फाग तौ दाव न पायौ ।
त्यागि कै संग लैओं भरि अङ्क सु, लाल के गाल गुलाल लगायौ ॥

लिए झाँझ ढफ ढोल बहु, चलै बजावत गैल ।
द्वार भान के आय कै, गावत रसिया छैल ॥
बहुत बची नंद लाल सो, अब प्रगटत अनुराग ।
लाज अली अब रहत नहीं, सिर पर आयो फाग ॥

चूनर रंगै तो चल बरसाने होरी आय गई मेरी बीर ।
गालन मलै गुलाल रंग, केशर मुख नैन अबीर,
रीझत भीजत में हुलसै, तोहे पती मिले बलबीर, चूनर......।
डरकर भागै या होरी सो, वाकी खोटी है तकदीर,
या होरी की बूँद-बूँद में श्यामा की तस्वीर, चूनर.............।
बैठ अटारी तू कहा सोचे, काहे होत अधीर,
मची फाग बरसाने रसमय, रसिकन की अतिभीर, चूनर....।
सदा फाग फागुन बन लालन, खेले जमुना तीर,
फाग सुहाग मनायलै सजनी, औढ़ बसंती चीर, चूनर........।

अहो आज भोर भलैं ही, रचतु अनौंखे खेल ।
उठे उनींदे होरी बोलत, मसरत वदन फुलेल ॥
चौंप चौगुनी इत उत हुलसनि, धाइ धरत कर सौं कर पेल ।
वृन्दावन हित रूप-मद छके, डारत सौंधे-रेल ॥

यह तो रीति अनौंखी मोहन, कहत प्रात ही हो-हो होरी ।
चार्‍यो जाम संग मिलि खेले, बहुरि उठत ही लागी ढ़ोरी ॥१॥
एकौ पल न बिसारत चित तें, फागु लग्यौ किधौं प्रेम-ठगोरी ।
वृन्दावन हित लाल देखि रहे, इक टकटकी वदन-विधु-ओरी ॥२॥

बारी बयस बुद्धि की थोरी वासों कैसे खैलूँ होरी ।
वह रिझवार रूप की गोरी, वह छलिया इत मैं अति भोरी,
दै झालौ बोलै बन ओरी ॥
॥ दोहा ॥
सैना-बैनी गैल में नित्त करै नँदलाल ।
हा-हा करि पाँयन परै रचै अटपटे ख्याल ॥
कहा करूं या डर के मारे निक्सूं चोरा चोरी ॥१॥ बारी बयस...
बचकें चलू तौ खासै खाँसी, मेरो मरन जगत की हाँसी
लाज लगै मन बढ़े उदासी ॥
॥ दोहा॥
आठ पहर चौंसठ घरी कौन करै बिश्राम ।
धन्य भूप तैसी प्रजा कौन बसै नँदगाम ॥
बड़े भाग्य बचि जाय रंग ते जाकी चूनरि कोरी । बारी बयस...
पिछवारे ते हेला मारै, भाभी कहा है रह्यौ तिहारे,
संगहि सबरे ग्वाल पुकारे ॥
॥ दोहा ॥
सास त्रासतें अनसुनी करूं छैल की बात ।
कहाँ झेलूं मैं अकेली उनकी बिकट बरात ॥
फागुन मास महा दुखदाई लोकलाज सब तोरी ॥३॥ बारी बयस...
नंदगाम की रीत अटपटी, जुवतिन सों सब करत नटखटी
ऊपर भोरे भीतर कपटी ॥
॥ दोहा ॥
या ब्रज बास न होयरी मैं कीनों निरधार ।
या डर आई भाजके श्याम महा रिझवार ॥
कीजै न्याव कृपाकर मेरौ श्रीबृषभान किसोरी ॥ ४ ॥ बारी बयस...

ग्यारह मास तपस्या करी, जब प्रीत भरो यह फागुन आयो ।
कुँजन जो दिन-रैन मिले, चुप चाप उन्हें अब सन्मुख लायो ।।
एक ने एक को रंग दियो, और एक ने एक को अंग भिजायो ।
अंग को रंग तो देख्यो सबै, नहिं देख्यो वह रंग हियो जो चढ़ायो ।।
जसुदा री तेरौ लाल रात चढ़ आयौ मेरी अटरिया में
जब चंदा छिपौ बदरिया में ।।
यह ग्वाल बाल संग लायो है,
याने नैक न बोल सुनायो है, बाखर भीतर घुस आयो है,
मेरी धक्का दियो किवरिया में जब चंदा छिपौ बदरिया में ।
एक घोड़ा ग्वाल बनायो है,
वापे अपनो पाँव जमायो है, माखन को कियो सफायो है,
फिर दौड़ो गयौ डगरिया में जब चंदा छिपौ बदरिया में ।
याने बहियाँ पकर मरौरी है,
मोते खूब करी बरजोरी है, मोते कहे खेल ले होरी है,
मेरे डारौ हाथ कमरिया में जब चंदा छिपौ बदरिया में ।
मोहन तू बड़ौ खिलारी है,
तेरी लीला अजब निराली है, तेरी सूरत पै बलिहारी है,
तू गड़ गयो मेरी नजरिया में जब चंदा छिपौ बदरिया में ।

गोरी आज बिरज में होरी है सुन बरसाने वारी ।
ऐसो समय मिलै नाय प्यारी, कर मेरे रंगन पिचकारी,
दोहा -
पिचकारी के लगत ही, मिट जाय मन को मैल ।
अब नांय जान दऊं तोय, श्री बरसाने की गैल ।।
तोय अब नाँय छोड़ूँ कोरी ये सुन बरसाने वारी ।
कैसी सीखी बात बनायबौ, पैंया पर-२ हाय-२ खायबौ,
दोहा - मुश्किल सो मेरो गोरी, आज परयो है दाव ।
दाब लयी जब दाव सों, लगी दिखावन भाव ।।

अब कैसी बन रही भोरी है वा दिन दै गई गारी ॥
धोखे बाज तोय मैं जानूँ, लाख कहै तेरी एक न मानूँ,
दोहा -
जान न दूँगो तोय मैं, मैंने ठान लई है ठान ।
नारा जी को काम कहा, तू राजी सों ले मान ॥
नहीं तो सखा करैं बरजोरी है गावै दै दै गारी ॥
भोरी सूरत देख तिहारी, अब नाँय छोड़े तोय रमण बिहारी,
दोहा -
श्री दाऊ जी की कृपा सों, बन्यो रहें ब्रज देस ।
शंकर यहाँ गोबिंद की, होरी मनें हमेश ॥
सब मुखन मलो मिल रोरी है नाँचौ दै दै तारी ॥

अँखियन में तोय बसाय लेती तू हो तो मेरो रसिया ॥
जब-जब तू मेरे घर आवै,
तोय देख मेरी सुरता जावै,
तोय नैनन बीच बसाय लेती तू हो तो मेरो रसिया ।
तेरी बात लगै मोय प्यारी,
तैने रूप मोहिनी डारी,
पलकन में तोय बसाय लेती तू हो तो मेरो रसिया ।
जो तू हो तो फूल गुलाबी,
तू मेरो देवर मैं तेरी भाभी,
जुलफिन में तोय लगाय लेती तू हो तो मेरो रसिया ।
मोहन की छवि बड़ी निराली,
देख सके याहे करमन वाली,
तोय द्योज को चाँद दिखाय देती तू हो तो मेरो रसिया ।

चुनरिया रंग में बोरूँगो।
क्यों उछरे कूँदे गूजरी, तोय आज न छोड़ूँगो ॥
नैना रही नटेर क्यों, और टेड़ी बतराय,
बरजोरी ऐसी करूँ तोय होरी लऊँ खिलाय ।
नियम तेरे सबरे तोरूँगो ॥ क्यों...
क्यों है रही है बावरी, बदल-बदल के रंग,
झटका पटकी में तेरे, बिगड़ जाय सब ढंग ।
गरे की माला तोरूँगो ॥ क्यों...
कोरे-कोरे माट भरे हैं, केसरिया रंग घोर,
सराबोर सारी करूँ तेरी लोक लाज सब तोर ।
कसुंभी रंग में बोरूँगो ॥ क्यों...
छट्टा-छट्टा ग्वालिनी तू अपनी लेय बुलाय,
छटी तलक के दूध की तोय दउँगो याद दिलाय ।
पकर बैंया झक झोरूँगो ॥ क्यों...

बारी बयस बुद्धि की थोरी तेरे संग कैसे खेलूँ होरी ।
है रिझवार रूप को गोरी, यह छलिया और मैं अति भोरी,
झालो दै बोलै बन होरी ।
दोहा. सैना बेनी गैल में, नित्य करै नंदलाल ।
हा-हा खाय पैंया परे, करै अटपटे ख्याल ।
कहा करूँ या डरके मारै मैं निकसूँ चोरा चोरी ॥
बचके निकसूँ तो खांसै खाँसी, मेरो मरण जगत की हाँसी,
यही सोच मैं रहत उदासी ।
दोहा - सास त्रास सों पलक हूँ, कल न परे दिन रात ।
कहा लों झेलूँ अकेली, मैं याकी बिकट बरात ॥२॥
फागुन मास बड़ो दुखदाई यामे लोक लाज सब तोरी ॥१॥

पिछवारे ते हेला मारै, भाभी कहा है रह्यो तिहारे
संग ही याके ग्वाल पुकारै ॥
दोहा - अष्ट प्रहर चौंसट घड़ी, पल न करै विश्राम ।
धन्य भूप और धन प्रजा, धन्य गांव नंदगाम ॥
बड़े भाग बच जांय रंग सो, जिनकी चूनर कोरी ॥
नंदगांव की रीति अटपटी, बाहर भोरे भीतर कपटी,
युवतिन सों कर जाय नटखटी,
दोहा - यह ब्रज वास न होय अब, मैं कीन्हो निरधार ।
या सों भाजी दुबक के, मैंने तज दीन्हों घरबार ॥
कीजो न्याव कृपा कर मेरो, श्री वृषभानु किशोरी ॥

साखी
ऐसी होरी ब्रज में आई, मानों बूढ़ें मिली लुगाई
कवित्त
ब्रज रंग की जय, ब्रज संग की जय ।
ब्रजधाम की जय, ब्रजनाम की जय जय ॥
ब्रज राज की जय, ब्रज साज की जय ।
ब्रज के सब गोपी-ग्वाल की जय जय ॥
ब्रज रास की जय, ब्रजवास की जय ।
ब्रजमंदिरविपिनबिहारी की जय जय ॥

ब्रज-होरी की जय, ब्रज-छोरी की जय ।
ब्रज की श्रीराधिका गोरी की जय जय ॥
फागुन को महिना आयो, मन में उमंग लायो,
ग्वाल बाल आए मोर पंख धार-धार के ।
नंदगांव के हैं ग्वाल, हाथ लिए रंग गुलाल,
घेरि लई गोपी आई घुँघटा निकारि के ।

फागुन को महिना आयो, मन में उमंग लायो,
ग्वाल बाल आए मोर पंख धार-धार के ।
मन को मिट्यो मलाल, मल के गुलाल लाल
लाल ने करी निहाल रंग डार-डार के ॥
मोतियन लड़ी भाल पै टीका, और घुँघरारे बारन पै,
लाल गुलाल नेक डरवाय लै, गोरे-गोरे गालन पै ॥ हे हाँ ...
चन्द्र चकोरी ओ ब्रज गोरी, भरे गुलालन झोरी में
आज ना बच के जान न पावो, रंग रंगीली होरी में
सबरे वार बचायगे ग्वाला, लठिया लेलइ ढालन पै
लाल गुलाल... ॥ हे हाँ ... हे हाँ...
नन्दगाँव को कुंवर कन्हैया, तू गोरी बरसाने की
आज न रूठो मटको हमसों, चौं आदत तरसाने की
भांग छान बरसाने में आय गए, तेरे लड्डुवा मालन पै
लाल गुलाल नेक डरवाय ले ... ॥ हे हाँ ... हे हाँ...
बहुत देर से खड़े द्वार पै, मत इतनी सरमावो जी
रंग महल सों उतर के गोरी, गली रंगीली आवो जी
प्रेमी मोर कुँहक रहे देखो, गह्वर वन की डारन पै
गाल गुलाल नेंक ... ॥ हे हाँ ... हे हाँ ...

अरी ! याहि कल न परति है , लहक्यौ होरी-लाहैं ।
उठत भुरहरैं झुरमुट डारै, रस के भर्‌यो उमाहैं ॥
तुमहूँ गहौ अचानक याकौं, राखौ कानि फागु में काहैं ।
वृन्दावन हित रूप निदरि भरि, आदर को दिन नाहैं ॥

सवैया

ब्रज में बसिबो, रज में बहिबो, महिमा बनै न कहिबो ।
कोटिन जनम देवतन दुर्लभ, या रज में रम रहिबो ।
ठौर-ठौर सत संग हरि कथा, जमुना जी को नहिबो ।
श्वांस-श्वांस श्रीराधा-श्रीराधा, गोबिंद के गुण गइबो ॥

सवैया

फेर मैं ब्रज में ही जन माऊँ चरण शरण तेरी नंदनंदन
मैं आठौ याम गुण गाऊँ ॥
परम पुनीत ब्रजै रज कण को, नित उठ शीश नवाऊँ ।
देवौ अशीस सभी मिल मैया, मैं ब्रजवासी कहलाऊँ ॥

साखी

पहिले ही पहिले मैं नन्द गाँव में आई ।
या छलिया ने घोंट छान रबड़ी में भंग पिवाई ॥

“कवित्त”

ऐसो हुरियारौ मैया, तीन लोक नाहिं देख्यो,
सराबोर कीन्ही पिचकारी मार मार के ।
बहुत समझायो, डर मैया को दिखायो,
नेक नहीं टरयो टारी, हारी टार टार के ॥
इतरा के चली गोरी, बल खाके चली,
नई-नई दर्पण में रूप कूँ निहारि के ।
कानन में कुण्डल, कलैयन में कंगन,
पायन में पायलिया चली है सँवारिके ॥
यौवन के बन चली फागुन के मन चली,
चलत-चलत गोरी देखो, बैठ गई हार के ।
छोरान कूँ होरी हती, ये छोरी बड़ी गोरी हती,
साँवरी बनाय दीनी श्याम रंग डार के ॥

घुँघटा दियो उघार के, चूनर दई बिगार के,
कुंजन में छुप गयो कन्हैया केसरिया रंग डार के ।
हो ऽऽऽऽऽ होरी है.....अरे ऽऽऽऽऽ होरी है....
ग्वाल बाल सब सखा संग के खूब करी बरजोरी है,
लाल गुलाल मल्यो गालन पै आज रंगीली होरी है ।
रंग पिचकारी मार के, फरिया दीनी फार के, कुंजन... ॥१॥
लूट लई माखन की मटकी, तोरी मोहन माला है,
तोकूं सांच न आवै री मैया, कैसो जायो लाला है ।
लाला ये रखियो सम्हार कें, दउंगी में लठिया मारके, कुंजन... ॥२॥
गिरी नाक की नथनी मेरी, खोय गई पायल पांव की,
आग लगै ऐसी होरी में, यह होरी कहा काम की ।
दियो गुलाल उछार कें, मैं बैठी यासों हार के, कुंजन... ॥३॥
रंग गुलाल हाथ में लायो, भंग चकाचक छानी है,
गोपिन के संग होरी खेलें, खूब करी मन मानी है ।
प्रेमी रहे निहारि के, बरसाने में आय के, कुंजन... ॥४॥
होऽऽऽ होरी है...नंदगांव के छोरा है बरसाने की गोरी है ...

अहो रस होरी खेलें रंगनि मेलैं, प्यारी जू भीजि-भिंजावै ।
मिथुन मनोभव केलि जगावैं, मीठीताननि गावैं ॥
विपुल नेह को अति झर लावैं, वन्दन लै - लै सनमुख धावैं ।
वृन्दावन हित रूप जाउँ बलि, छकि -छकि प्रेम छकावैं ॥

अहो तकि घातनि डोलैं, होरी बोलें, कौतिक केलि रची है ।
कपट मूठि भरि लाल वगेलत, भाँमिनि भौंह नची है ॥
इत गौरांग उतहिं साँवल तन, फागुन सुख की रासि सची है ।
वृन्दावन हित रूप भोर ही, मनु रस-लूटि मची है ॥

ओ हो महीनो फागण को सांवरिया थारी ओल्यूँ आवे रे,
ओल्यूँ आवे रे साँवरा याद सतावे रे ॥
मोहन तुम मथुरा में छाये-छाये,
कुब्जा दासी सौत हमारी मौज उड़ावे रे ॥ महीनो फागण को....
याद परत हित चित की बतियाँ-बतियाँ,
बिन देखे नन्दलाल मेरो मन ललचावे रे ॥ महिनो फागण को ....
खान पान कछु नाहिं सुहावे-सुहावे,
साथण और सईल्यां थारी बात बणावे रे ॥ महिनो फागण को....
प्रीत लगाये भई मैं पीली-पीली,
उद्धव के संग लिख-लिख कान्हो रोज पठावे रे ॥ महिनो ...
सोलह सहस्त्र गोपियाँ त्यागी-त्यागी,
निर्मोही नन्दलाल तेरे मन दया न आवे रे ॥ महिनो फागण को ...
रामसखी चरणन की दासी-दासी,
मैं तो नाथ अनाथ दरस विन क्यूँ तरसावे रे ॥ महिनो फागण को ...

रंग मत डारे रे साँवरिया म्हारो गूजर मारे रे ॥
मैं गुजरी नादान, **गूजर म्हारो है मतवालो रे ॥** रंग मत ....
होली खेल तो कान्हा, बरसाने में आ जाईयो रे,
राधा रुक्मण न संग में, लेतो आइयो रे ॥ रंग मत ....
सुसरो बुरो छै, म्हारी सास बुरी रे,
नणदूली नादान दो की, चार लगावे रे ॥ रंग मत ....
जेठ हठीलो म्हारी, जेठानी हठीली,
परणयोड़ो बेईमान, म्हारा लाड लडावे रे ॥ रंग मत ....
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि,
हरि चरणाँ में म्हारो चित्त लाग्यो रे ॥ रंग मत.....

कजरारी अँखियान में, बस्यौ रहत दिन-रात ।
प्रीतम प्यारौ री सखी, तातें साँवल गात ॥

ओ कान्हा आजा रे सखियाँ ने थोड़ी फाग रमाज्या रे ॥
फागण रो महिनो कान्हा घणो मन भायो रे ।
थां संग होली खेलण म्हारो मन ललचावे रे ॥ कान्हा आजा रे...
केशर घोलूँ जमुना जी में कर द्यूँ सगली पीली रे ।
ऐसो मारूं सोट कि कर द्यूँ, धोती ढोली रे । कान्हा आजा रे...
कर द्यूँ आभो लाल उड़ाऊँ ऐसो रंग सुरंगो रे ।
तू है सुघड़ सलोनो, कर द्यूँ तन्ने वेढंगो रे ॥ कान्हा आजा रे ....
सुर नर मुनि सब चकरा जावे ऐसी खेलूँ होली रे ।
हरदम राखे याद मैं ऐसी करुं ठिठोली रे ॥ कान्हा आजा रे...
ब्रज में रे कान्हा तूं तो वीर घणोई बाजे रे ।
म्हारे सागे खेलण सूं क्यूं तू डरतो भाजे रे ॥ कान्हा आजा रे...
सारी दुनियाँ तन्ने चिढ़ावे कृष्ण कन्हैयो कालो रे ।
ऐसो पलटू रंग दंग होवे देखण वालो रे ॥ कान्हा आजा रे ...
सब कैवे बंशी री थारी तान सुहानी लागे रे ।
म्हारो सुण ले फाग तो थारी बंशी लाजे रे ॥ कान्हा आजा रे ...

मंदिरये में बैठो बैठो कांई निरखे ।
ओ कान्हा म्हां संग होली खेल, म्हारो हियो हरखे .... ॥
चांदी री कटोरी ल्याई केसर भर के,
रंग अबीर गुलाल ल्याई झोली भर के । म्हारो हियो हरखे .... ॥
श्याम रंग तेरो सब मिट जावेगो,
कर दूँगी मैं लाल साँवरो कैंया कहावेगो । म्हारो हियो हरखे .... ॥
ब्रज में गोप्यां से करी बरजोरी,
म्हारे सामां आय निकालूँ मैं हेकड़ तोरी । म्हारो हियो हरखे .... ॥
सुर नर मुनि देखें अचरज से,
मीरा कैंया होली खेले गिरधर से । म्हारो हियो हरखे .... ॥

कान्हा म्हारे घर हालो ।
सांवरिया हो म्हारे घर हालो, रमस्यां होली श्याम ॥
बरसाने री गोरड़ी मैं राधा म्हारो नाम ।
मैं सगलां सूं फूटरी ब्रजमंडल में घनश्याम ॥ म्हारे ...
आपां रंग स्यूं खेलस्यां जी खूब उड़ास्यां फाग ।
तू रंग जे म्हारी चुनड़ी, म्हें रगस्यूं थांरी पाग ॥ म्हारे ...
बड़ा भाग थांरा समझ म्हें रही हूँ न्यौरा खाय ।
थांसू सुंदर ग्वालिया कई म्हारे लारै आय ॥ म्हारे ...
म्हें गोरी तू सांवलो रे होस्यां एका रंग ।
थांरी मुरली बाजसी औ म्हारो बाजै चंग ॥ म्हारे ...
थांरी चलसी डोलची तो म्हारो चलसी सोट ।
धौल जमास्यूं रस भर्या ले घुंघटिये री ओट ॥ म्हारे ...
ऐसी होली खेलस्यूं रे अचरज करसी लोग ।
फागणियाँ दिन चार है ओ आनन्द ले तू भोग ॥ म्हारे...

बरसाने री गोप्यां कान्हा थांरी टेर लगावे रे ।
थांरी ओल्यूं घणी सतावे रे, फागण में ... ॥
मात यशोदा रे आँचल छुप क्यों बैठ्यो रे ।
म्हारी गोदयां में एकर आ जा रे, फागण में ... ॥
सास नणद म्हारी कोजा ताना मारे रे ।
थारो कठे गयो श्याम सलोनो रे, फागण में ... ॥
थारे-थारे खातिर कान्हा दहीड़ो बिलोयो रे ।
कोई चाखण रे मिस आजा रे, फागण में ... ॥
यमुना जी रो पाणी कान्हा लेवे रे हिलोरयो रे ।
कोई न्हावण रे मिस आजा रे, फागण में ... ॥
सोट न मारूं लाला गाली नहीं दई रे ।
म्हारी अंगिया में रंग लगा जा रे फागण रे ...॥

ढोल मृदंग कान्हा चंग घणो बाजे रे ।
मुरली पर फाग सुना जा रे फागण में ...॥

म्हारी चुनड़ी बसन्ती रंगा दे म्हारा साँवरिया,
रंगादे म्हारा सांवरिया मैं होरी कैंया खेलूँगी ॥
घर सूँ चाल कर मधुबन आई,
संग की सहेल्याँ म्हारे सागे ही ल्याई ।
(म्हाने) रंग का माठ भरादे म्हारा साँवरिया,
भरादे म्हारा सांवरिया ॥ मैं होरी...
फाग खिलाऊँ राधा आनन्दकारी,
साँचो रूप थारी शोभा भारी,
म्हाने पायलिया की तान सुनादे म्हारी राधा ए,
सुनादे म्हारी राधा ए ॥ मैं होरी...
मैं तो जाणू म्हारे सनमुख डोले,
म्हारो हिवड़ो डगमग डोले,
(म्हाने) साँवरी सुरतिया दिखादे म्हारा सांवरिया
दिखा दे म्हारा सांवरिया ॥ मैं होरी...
राधा तुम्हारे मन में समाई,
म्हारी खोई दौलत पाई,
(थारा) हिवड़ा सूं परदो हटा दे म्हारी राधा ए,
हटा दे म्हारी राधा ए ॥ मैं होरी...
मान-मान म्हारी बात कनाई
फाग खेलस्यूँ भाग मनाई,
म्हारे माथे चरण लगादे म्हारा सांवरिया,
लगादे म्हारा साँवरिया ॥ मैं होरी...

बृजवासी रंग उड़ावैं।
श्याम खेलत हैं, राधा से होरी, ग्वाला चंग बजावैं,
चंग बजावै, रंग उड़ावैं ॥
बृज को कण कण भयो गुलाबी, जन मन भाग सरावैं,
भाग सरावै, रंग उड़ावैं ॥
श्याम ढुरै हैं डोलची भर के, राधा सोटी चलावैं,
सोट चलावै रंग उड़ावैं ॥
लाल भई है साँवरि सूरत, गोरी को चित्त चुरावैं,
चित्त चुरावै रंग उड़ावैं ॥
श्याम की बंसी राधा के नूपुर, रसिया फाग सुनावैं,
फाग सुनावैं रंग उड़ावैं ॥

देखो रघुबीर रंग उड़ावैं ॥
ऐसी कुँवरि जानकीजी मुठिया भर-भर लावैं, भर-भर लावैं रंग उड़ावैं,
हाथ में झारी कपट वाके मन में, केशर झर-झर जावै,
झर-झर जावै रंग उड़ावैं ॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, नारद मंगल गावैं,
मंगल गावैं रंग उड़ावैं ॥
सुर नर मुनि जय गान करत हैं, भोले डमरू बजावैं,
डमरू बजावैं रंग उड़ावैं ॥
भ्राता लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न, हनुमत चँवर डुरावैं,
चँवर डुरावै रंग उड़ावैं ॥
कौसल्या कैकई सुमित्रा लखि-लखि बलि-बलि जावैं,
बलि-बलि जावैं रंग उड़ावैं ॥
पुरी अयोध्या में फाग मची है, जन-मन धूम मचावैं,
धूम मचावैं रंग उड़ावैं ॥

कान्हा मत मारे पिचकारी, थारै पैयाँ पड़ूँजी ।
राधा बरसाना की गोरी, आपाँ होरी खेलांजी ।।
राधा म्हारी लाड़ली, (तू) फाग रमण न आव ए ।
घणा दिन सूं होरयो, (म्हारा) मन में बड़ो उछाव ए ।
हिलमिल धाप खेलस्याँ होरी । आपाँ होरी ...
आय अचानक साँवरो, मुख पर मली गुलाल रे ।
कर पकर्‌यो झकझोर कर, आ काँई थारी चाल रे ।
मैं तो पर घर की हूँ नारी । थारै पैयाँ...
रंग मँगायो अतर मँगायो, केशर मृगमद घोरी रे ।
थारे बिन सूनी-सी लागे, सब सखियाँ की टोरी रे ।
राधा या विनती है मोरी । आपा होरी...
कुंजलता में छिपकर बैठ्‌यो, ओढ़ो कामर कारीजी ।
नटखट कान्हो बात न मानी, बिनती कर-कर हारीजी ।
तक तक मार रह्यो पिचकारी । थारै पैयाँ....
ब्रज में धूम मची होरी की, खेले गोपी ग्वाल रे ।
हाथ जोड़कर सत्य कहूँ, करज्यो म्हारो प्रतिपाल रे ।
जाऊँ चरणाँ की बलिहांरी । आपाँ होरी...

हाँ ए सखी लाई सुरंग-रंग लाल ए । खेलो गोविन्दा संग ख्याल ए ।।
पचरंग रंग की अँगिया सोहे,
हाँ एं सखी हाथ में जरद रूमाल ए ।। खेलो...
चोवा-चोवा चन्दन और अरगजा,
हाँ ए सखी हाथ, लाल गुलाल ए ।। खेलो...
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे,
हाँ ए सखी नाचत दे-दे लाल ए ।। खेलो...
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि,
हाँ ए सखी हिलमिल खेलें गोपी ग्वाल ए ।। खेलो...

होरी आई, रंग केशर गुलाल भर ल्याई ॥
थारे ग्वालबाल साथ में, तट यमुना पे धूम मचाई ॥
आयो फागण को मस्त महीनो ।
खेले नन्द को लाल नबीनो ।
उठी मन में उमंग ठण्डी-ठण्डी तरंग,
सारी संग की सखि मिल आई रे ॥१॥
आई माखन के चोरों की टोरी ।
खेलें-खेलें आनन्द भरी होरी ।
होरी गावै धमाल, देखो-देखो कमाल,
जाकी शोभा कछु ना कही जाई रे ॥२॥
चाले सनन-सनन पिचकारी ।
संग राधा है प्राण पियारी ।
खेले गोपी ग्वाल चाले मस्तानी चाल,
जाके प्रीति है दिल में समाई रे ॥३॥
मानो मानो ना श्याम बिहारी ।
थारे चरणाँ की हूँ बलिहारी ।
लिए मुरली हो हाथ नाऊँ मैं माथ,
म्हारे साँवरी सूरत मन भाई रे ॥४॥ होरी आई...

आजा-आजा साँवरा, आजा आजा साँवरा...........
फाग रमण री म्हारे मन भावै ॥
संग की सहेल्याँ म्हारी हिलमिल आईं रे,
अबीर गुलाल अतर भर ल्याईं रे ।
आजा, तू आजा, मन ललचावै ॥ आजा-आजा साँवरा.....
हुलस हुलस म्हारो हियो हुलसायो रे,
लपट-झपट म्हारी गगरी छिनायो रे ।
मटकी तू पटकी, तन थर्रावै ॥ आजा-आजा साँवरा....

बहुत दिनों सूँ फागण घर आयो रे,
अब जननी ढिग जाय छिपायो रे ।
साड़ी, अनाड़ी भिजोय आवै ॥ आजा-आजा साँवरा....
छिन में प्रकट होय, छिन माहि न्यारो रे,
सत्य कहूँ मैं काना प्राण हमारो रे ।
होरी में घणी री शरम आवे ॥ आजा-आजा साँवरा.....

घनश्याम बुलावै ए राधा । तू बेगी आज्या फाग में......
सिरस्यूँ फूल रही खेताँ में, झुकझुक झोला खावै,
साँवलियो बाटड़ली जोवै, कद म्हारी राधा आवै,
वृषभानु दुलारी राधा ! गहरो रंग बरसाज्या फाग में ॥१॥
बँहिया पकड़ गुलाल लगासी, खूब भिजोसी चोली,
भीज जाय म्हारी लाल ओढ़नी, मैं नहीं खेलूँ होली,
ओ नन्दलाल ! मैं तो आती डरपूँ हू, थारा फाग में ॥२॥
राधा थारी यादड़ली मने घड़ी-घड़ी सतावे,
बरसाणारी लाड़ली तू बिन, खेल्याँ क्यूं जावै,
ओ चन्दावदनी राधा ! मुखड़ो तो दरसाजा फाग में ॥३॥
डफ थारो बाजै सांवरिया रे, काँपे हिवड़ो म्हारो,
जद चालूँ जद पायल बाजै, पायलरो झनकारो,
ओ कृष्ण कन्हैया ! मैं तो नहीं आऊँ थारा फाग में ॥४॥
कोरा-कोरा कलस भर्‌यो है, जिण में केसर घोली,
थारै बिन सूनी-सी लागै, सब सखियाँरी टोली,
ओ नीलमणी राधा ! पल भर तो झलक दिखाज्या फाग में ॥५॥
थारै बुलावे आज्याऊँ, पण सखियाँ करे ठिठोली,
तू जमना तट आय मिलीजे, धाप खेलस्यां होली,
ओ कुंजबिहारी ! थारी राधा मिलसी यमुना तट फाग में ॥६॥

सब खेलन फाग चलो, रंगीलो आयो फागुणियो ।
आयो फागुणियो, आयो फागुणियो – सब खेलन ...
राधारानी के महलां में ऐसी मच रही होरी,
रंग गुलाल अबीर उड़त है फेंकत भर-भर झोरी,
बरसानौ दमक रह्यो ॥ रंगीलो आयो........
नंदगाँव में नन्दलला खेलत भर-भर पिचकारी,
जय-जयकार करे सब ग्वाला मगन होय नर-नारी,
ये ही आनंद लूट चलो ॥ रंगीलो आयो......
अपने-अपने टोल सम्हाले कर-कर टोका-टोकी,
गली रंगीली बनी फाग की रण भूमि की चौकी,
सब दाँव लगाए चलो ॥ रंगीलो आयो........
बूढ़े बालक ज्वान सभी पर छाइ बिरज की होरी,
कोइ नाचै कोइ ताल बजाबै कोई नगारिन जोरी,
मस्ती में झूम चलो ॥ रंगीलो आयो.........

रंग रसियो खेले मोसों फाग, सखी मोरे आँगन में ।
सुरंग चुनड़ी मोरी रंग से भिगोई,
हाँ री सखी अपनी बचावे छैलो पाग ॥१॥
चोवा-चोवा चन्दन और अरगजा,
हाँ री सखी केशर रंग अथाग ॥२॥
तबला ताल सारंगी बाजे,
हाँ री सखी गावै होली की राग ॥३॥
छिप-छिप मारे रंग पिचकारी,
हाँ री सखी अपनी बेल्या जावै भाग ॥४॥
चन्द्रसखी होली छवि निरखे,
हाँ री सखी धन-धन हो थारो भाग ॥५॥

श्यामा श्याम सलोनी मूरत कौ श्रृंगार बसंती है ॥
मोर मुकुट की लटक बसंती,
चंद्रकला की चटक बसंती,
सिर पै पेंच श्रवण कुंडल छबिदार बसंती है ॥
माथे चंदन लस्यौ बसंती,
पट पीतांबर कस्यौ बसंती,
मो मन मोहन बस्यौ बसंती,
गुंजमाल गले में फूलन हार बसंती है ॥
कनक कड़ूला हस्त बसंती,
चलैं चाल अलमस्त बसंती,
पहर रहे हैं वस्त्र बसंती,
रुनुक झुनुक पग नूपुर की झनकार बसंती है ॥
संग ग्वालन कौ टोल बसंती,
बाजै चंग ढप ढोल बसंती,
बोल रहे हैं बोल बसंती,
सब सखियन में राधेजू सिरमौर बसंती हैं ॥
बटत प्रेम परसाद बसंती,
लगै रसीलौ स्वाद बसंती,
ह्वै रई सब मरजाद बसंती,
घासीराम नाम श्रीराधा सार बसंती है ॥

मोरमुकुट की लटक पर, अटक रहे दृग मोर ।
कान्ह कुँवर जमुना तटें, नटवर नन्दकिसोर ॥

‘वसन्त-वर्णन’ (गीत गोविन्द)

ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे,
मधुकर निकर करम्बित कोकिल कूंजित कुञ्ज कुटीरे ।
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ...
नृत्यति युवति संग सखि विरहि जनस्य दुरन्ते ॥१ ॥
उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जन जनितं विलापे ।
अलिकुल संकुल कुसुम समुहिन राकुल बकुल कलापे ।
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ... ॥२॥
मृगमद सौरभ रभसवशम्बद नवदलमाल तमाले ।
युवजन हृदय विदारण मनसिज नखरुचि किंशुक जाले ॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ... ॥३॥
मदन महीपति कनक दंड रुचि केसर कुसुम विकासे ।
मिलित शिलीमुख पाटल पटल कृत स्मर तूण विलासे ॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ... ॥४॥
विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृतहासे ।
विरही निकृन्तन कुन्त मुखाकृति केतकि दन्तुरिताशे ॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ... ॥५॥
माधविका परिमल ललिते नवमालिकयातिसुगन्धौ ।
मुनि मनसामपि मोहन कारिणि तरुणाकारणबन्धौ ॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ... ॥६॥
स्फुरदति मुक्तालता परिरम्भण पुलकित मुकुलित चूते ।
वृन्दावन विपिने परिसर परिगत यमुनाजलपूते ॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ... ॥७॥
‘श्रीजयदेव’ भणितमिदमुदयतु हरिचरणस्मृतिसारम् ।
सरस वसन्त समय वनवर्णनमनुगत मदन विकारम् ॥
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ... ॥८॥

दोहे

इह वसन्त ऋतु उठत बहु द्रुम नव पल्लव लागि ।।
जड़हू के रोमांच ह्वै व्यथा मदन तन जागि ।।१।।
छिनु देखे बिनु देत दुःख लोचन परै जु गैल ।।
फाग बावरे दिन में रूप बावरौ छैल ।।२।।
सुन री ढफ बाजन लगे सिर पर आयौ फाग ।।
अब कैसें दबिहैं दई अंतर कौ अनुराग ।।३।।
इह होरी के खेल की जग सों उलटी रीत ।।
जीतन ही में हार है हारन ही में जीत ।।४।।
लाल भई सब देखियत घुमड़्यौ गगन गुलाल ।।
मनो दम्पति अनुराग कौ डार्‌यो ब्रज पर जाल ।।५।।

कवित्त

उत सों सखान सजि आए नन्दलाल इतै,
राधिका रसाल आई वृन्द में सहेली के ।।
खेलें फाग अति अनुराग सों उमंग ते वे,
गावें मन भावें तहाँ बचन अमेली के ।।
मारी पिचकारी मंजु मुख पैठी हरी ताके,
दाबन बचाय के अबीर झेला झेली के ।।
जौ लौ निज नैननि सों रंग कों निवारे प्यारी,
तौ लौ छैल छू भजै कपोल अलबेली के ।।१।।

सवैये

वह सांकरी कुंज की ओर अचानक राधिका माधव भेंटभई ।
मुसिकान भली अचरा की अली त्रिवली की वली पर दीठ दई ।।
भहराय भुखाय रिसाय ममारख बांसुरिया हँसि छीन लई ।
भृकुटी मटकाय गुपाल के गाल में आँगुरी ग्वालि गढ़ाय गई ।।२ ।।

घेरि लिये घनश्याम चहुँ दिशि दामिनी मिलि चेटक सौ कै गई ।
पीत पिछौरी रही कर खेचिंके बांसुरिया हँस छीनकें लै गई ।।
प्रेम के रंगिनी सों भरिकें अरु मांगके रंगनि मोहनि बै गई ।
केसर सों मुख मीड गुपाल कौ खंजन से दृग अंजन दैगई ।।३।।
चन्द्रकला चुनि चुनरि चारु दई पहिराय लगाय सुरोरी ।
बेनी बिसाखा रची पद्माकर अंजन साज समाज कें गोरी ।
लागी जबै ललिता पहिरावन कान्ह कों कंचुकी केसर बोरी ।
हेरि हरें मुसिकाय रही अचरा मुख दै वृषभानुकिशोरी ।।४ ।।

सवैया
फाग की भीर अबीरन ते गहि गोबिंद लै गई भीतर गोरी ।
भाई करी मन की पदमाकर ऊपर डार गुलाल की झोरी ।।
छीन पीतांबर लियौ कटि ते सुबिदा दई मींड कपोलन रोरी ।
नैन नचाय कह्यौ मुसिकाय लला फिर अइयौ खेलन होरी ।।

।। कवित्त ।।
एक संग धाए नंदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि समाने उर आनँद मढै नहीं ।
धोय धोय हारी पदमाकर तिहारी सोंह,
अब तो उपाय एक चित्त में चढै नहीं ।।
कैसे करौं कहाँ जाऊँ कासों कहों कौन सुनै ।।
कोऊ बतावौ जासों दरद बढै नहीं ।
एरी मेरी बीर जैसें तैसें इन नैनन सों,
कढिगौ अबीर पै अहीर कौ कढै नहीं ।।

चौपई

सिंहपौर कौ बैठवौ पावन के असनान ।
झांकी बाबा नन्द की कोई सहज मिलें भगवान् ।।
छवि देख कोकिला वन की ।
ओर पास कदमन की छैया कोई बीच तलैया जल की ।।

ब्रज चौरासी कोस में चार गांम निज धाम ।
वृन्दावन और गिरिपुरी कोई बरसानों नन्दगाँव ।।
नन्दगाँव हमारौ खेरौ ।
बाबा नन्द जसोदा मैया कोई श्याम सखा संग मेरौ ।
घर-घर मांट छाछ दूधन के कोई सदमाखन बहुतेरौ ।
बारह बजे अंगना के भीतर कोई कुंज कुटी घर मेरौ ।
गोपी गोप ओप सों राजें कोई बोलत हेरी हेरौ ।
गोवर्धन गोकुल वृन्दावन कोई दास चतुर को चेरौ ।

वृन्दावन के वृक्ष कौ मरम न जानें कोय ।
डार-डार और पात पै श्री राधे-राधे होय ।।
वृन्दावन अधर कमल पै ।
यौ तो मत जाने अधर धरयौ है कोई शेषनाग के फन पै ।
वृन्दावन में मोर बहौत है कोई बन्दर देख कदम पै ।
वृन्दावन में संत बहौत है कोई तूमी सोटा सब पै ।

घूँघट की हट बालम मत करै घूँघट बुरी है बलाय ।
घूँघट में नागिन बसै कोई देखत ही डस जाय ॥
घूँघट तौ मैं भरम परै ना।
सांचौ रसिया झूट नाय बोले कोई बूढ़ी ज्वान जचै ना ।

काजर करुए तेल कौ जनम ना सारुं तोय ।
ढिंग ते ढोला उठ गयौ कोई रहयौ लजावा मोय ॥
कजरा तेरौ मारै डारै।
सांचौ रसिया झूंट नांय बोलै कोई ये जुलमाने आरै ।

काजर सारुं किरकिरौ सुरमा सह्यौ ना जाय ।
इन नैनन ढोला बसै कोई दूजौ नाय सुहाय ॥
नैना तेरे औगन गारे।
गैल चलत गैलुआ मारे कोई घायल करें गिरारे ।

यारी प्यारी प्यारे जब लगै तेरी एक जने ते होय ।
वो यारी कहा काम की कोई जने-जने ते होय ॥
यारी जुरवे कौ तनक इसारौ।

खेलत फाग में लाड़िलीलाल कौ, लै मुसक्याइ गई एक गोरी।
सीस पै सारी सजा तरतार की, कंचुकी धार दई बरओरी ॥
लै बलबीर दियौ दृग अंजन, दीनौ बनाय गुपाल कों गोरी।
अंग लगाइ, कही मुसकाइ, लला फिर खेलन आइयो होरी ॥

राधे किशोरी दया करो

हे किशोरी राधारानी ! आप मेरे ऊपर दया करिये । इस जगत में मुझसे अधिक दीन-हीन कोई नहीं है अतः आप अपने सहज करुण स्वभाव से मेरे ऊपर भी तनिक दया दृष्टि कीजिये ।

राधे किशोरी दया करो ।
हम से दीन न कोई जग में, बान दया की तनक ढरो ।
सदा ढरी दीनन पै श्यामा, यह विश्वास जो मनहि खरो ।
विषम विषय विष ज्वाल माल में, विविध ताप तापनि जु जरो ।
दीनन हित अवतरी जगत में, दीनपालिनी हिय विचरो ।
दास तुम्हारो आस और (विषय) की, हरो विमुख गति को झगरो ।
कबहुँ तो करुणा करोगी श्यामा, यही आस ते द्वार पर्‌यो ॥

मेरे मन में यह सच्चा विश्वास है कि श्यामा जू सदा से दीनों पर दया करती आई हैं । मैं अनादिकाल से माया के विषम विष रूपी विषयों की ज्वालाओं से उत्पन्न अनेक प्रकार के तापों की आग में जलता आया हूँ । इस जगत में आपका अवतार दीनों के कल्याण के लिए हुआ है । हे दीनों का पालन करने वाली श्री राधे ! कृपा करके आप मेरे हृदय में निवास कीजिये । मैं आपका दास होकर भी संसार के विषयों और विषयी प्राणियों से सुख पाने की आशा किया करता हूँ । आप मेरी इस विमुखता के क्लेश का हरण कर लीजिए । हे श्यामा जू ! जीवन में कभी तो ऐसा अवसर आएगा जब आप मेरे ऊपर करुणा करेंगीं, इसी आशा के बल पर मैंने आपके द्वार पर डेरा जमा लिया है ।

आज बिरज में होरी रे रसिया

उतते आये कुंवर कन्हैया,
इतते राधा गोरी रे रसिया ।

उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा,
केशर गागर ढोरी रे रसिया ।

बाजत ताल मृदंग बांसुरी,
और नगारे की जोरी रे रसिया ।

कृष्णजीवन लच्छीराम के प्रभु सौं,
फगुवा लियो भर झोरी रे रसिया ।

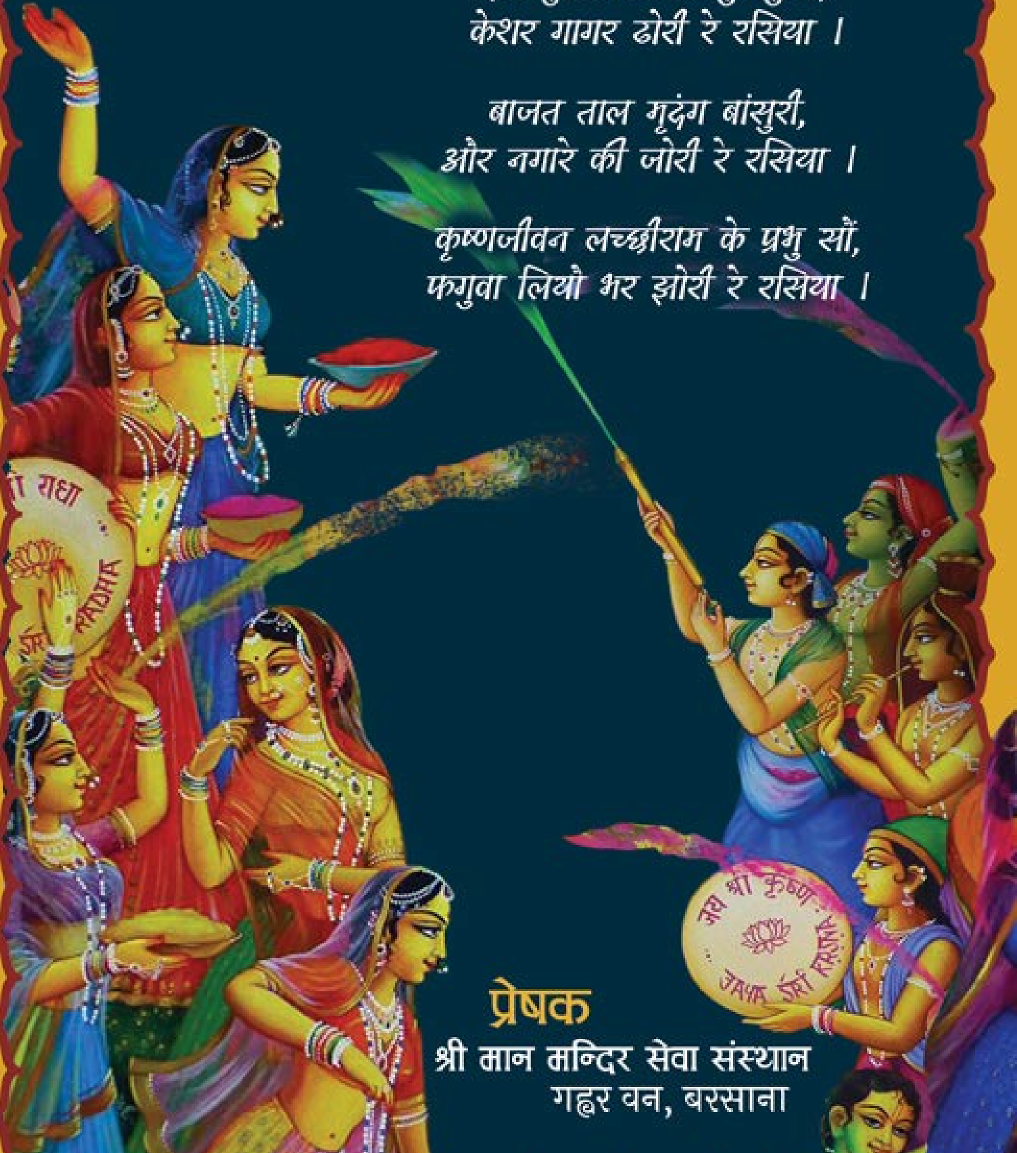
राधा
RADHA
SRI
जय श्री कृष्ण
JAYA SRI KRSNA

प्रेषक

श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान
गह्वर वन, बरसाना